॥ ओ३म् ॥

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष - ६ | अंक- ५ | मासिक-हिन्दी | मार्च-२०१७ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४८

राष्ट्र की बलिवेदी पर आहूत होने वाली दिवंगत आत्माओं को पुण्यतिथि दिवस पर शत-शत नमन

१८५७ के स्वातन्त्र्य समर के महानायक

अमर बलिदानी
मंगल पाण्डेय
बलिदान दिवस
०८ अप्रैल १८५७

७५ वर्षीय वीर योद्धा
राजा कुँअरसिंह
पुण्यतिथि
२६ अप्रैल १८५८

इस अंक में
एक बार नहीं बार बार पढ़ें

क्या तुम 'वो' हो?, नहीं ! तुम 'वो' तो नहीं
हमारी महान विभूतियां- १८५७ के स्वातन्त्र्य समर के महानायक...
उठो! प्रकाश हो गया है
आकाश और समय
काल-समय की महिमा
स्वामी श्रद्धानन्द और शिक्षा व्यवस्था
महर्षि दयानन्द को विस्मृत न करें
ऋषि को ईश्वर प्रदत्त बोध
आर्यों के भारत में आगमन रूपी मनघडन्त...
अभिवादन नमस्ते ही क्यों ?
गो हत्या एवं मांस भक्षण निर्दयता का...
वैदिक संस्कृति तथा पश्चिमी...
पाकिस्तान विभाजन मांग दिवस की...
... और भी बहुत कुछ

|| ओ३म् ||

हमारे प्रेरणा स्त्रोत एवं आशीर्वाद प्रदाता

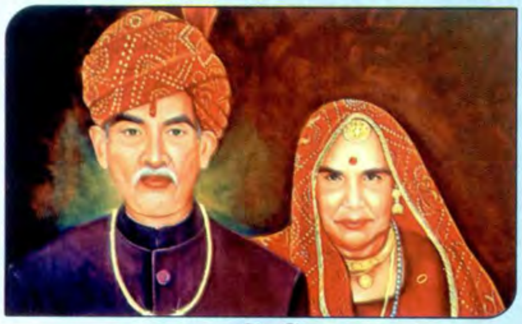

स्मृति शेष

श्री जंवरलाल जी शर्मा   श्रीमती मोहिनीदेवी शर्मा

वैदिक संसार के अभिन्न वरिष्ठ सहयोगी, जांगिड कुल गौरव, उदारमना दानवीर भामाशाह, वरिष्ठ समाजसेवी, पुरुषार्थ, ईमानदारी, मृदुता, सौम्यता, मिलनसारिता, उदार सेवाभाव आदि गुणों के बूते पर शून्य से शिखर पर पहुँचे ख्यातनाम उद्योगपति, महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश 'वेदों की ओर लौटो' सन्देश के अनुकूल शिल्पकर्मी समुदाय में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के प्रधान पद के भावी प्रत्याशी ...

श्री नेमीचन्द जी शर्मा - एक परिचय

नाम - नेमीचन्द शर्मा

पिता- स्मृति शेष श्री जंवरलाल जी शर्मा

माता- स्मृति शेष श्रीमती मोहिनीदेवी शर्मा (पालड़िया)

जन्म स्थान - लाड़पुरा, तह.-डेगाना, जिला-नागौर (राज.).

जन्म दिनांक - १६ जुलाई १९६२, **जन्म कुल** - जांगिड.

शासन - गूगरिया, **गौत्र** - अघमर्षण, **शिक्षा**- ग्रेजुएट.

विवाह दिनांक - ६ फरवरी १९८४.

धर्मपत्नी - श्रीमती सन्तोषदेवी शर्मा, **विशेष सम्पोषक सदस्य** - जांगिड ब्राह्मण पत्र, दिल्ली, **सुपुत्री**- स्मृति शेष श्री रामचन्द्र जी जांगिड (सीलक), **निवासी** - मोरियाणा, तह. डेगाना, जिला- नागौर (राज.).

सन्तती- सुपुत्र : श्री रौनक शर्मा, सम्पर्क - ९४२६९१६१७८

ई मेल -ronak86868@gmail.com.

पुत्र वधु- श्रीमती ममता शर्मा, **सुपुत्री**- श्री हेमाराम जी देपड़ा- **निवासी**- गढ़ोई (कल्याणपुर) जिला- बाड़मेर (राज.).

ज्येष्ठ सुपुत्री- श्रीमती अन्नु शर्मा, **पति**- श्री मुकेश जी शर्मा, **सुपुत्र**- श्री रामस्वरूप जी राजोतिया,, **मूल निवासी**- किशनगढ़, जिला-अजमेर (राज.), **वर्तमान निवास**- सत्या कालोनी, हीरापुरा, जयपुर (राज.).

कनिष्ठ सुपुत्री- श्रीमती दिव्या पंवार, **पति**-श्री केशव जी पंवार, **सुपुत्र**- श्री मोहनलाल जी पंवार, **निवासी**-शास्त्री नगर, जयपुर (राज.).

अग्निहोत्री परिवार - स्मृति शेष श्री भगवान दत्त जी शर्मा एवं माता श्रीमती गुलाब देवी शर्मा की प्रेरणा से '**पंच महायज्ञ**' के प्रति निष्ठावान परिवार.

व्यवसाय एवं प्रतिष्ठान- ब्लेज इन्टरनेशनल

पोलिरेक प्रोसेसर्स प्रा. लि., रुद्राक्ष प्लास्टिक्स प्रा. लि.

कार्य क्षेत्र- काण्डला स्पेशल इकॉनामिक झोन, गान्धीधाम.

वर्तमान निवास- गान्धीधाम, जिला- कच्छ (भुज) गुजरात.

सम्पर्क- ९८२५२३१८९४, ९९१३३११८९४.

ई मेल- aggloplast@gmail.com.

संस्थापक एवं संस्था प्रमुख-माता मोहिनीदेवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट, गान्धीधाम.

अभिरुचि-उद्योग के विस्तारीकरण के हर सम्भव प्रयास, समाज सेवा, गो-सेवा, गद्य तथा पद्य रचनाओं की रचना करना तथा पठन-पाठन, बेडमिन्टन, पर्यटन.

सेवाएं -

पूर्व उपप्रधान : अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली (प्रधान श्री बृजकिशोरजी शर्मा, श्री जी एम.मिस्त्री तथा श्री हीरालाल जी शर्मा की कार्यकारीणियों में तीन कार्यकाल लगभग ९ वर्ष).

उप प्रधान : अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली (सेवारत).

पूर्व प्रान्ताध्यक्षः जांगिड ब्राह्मण प्रादेशिक सभा गुजरात.

संस्थापक अध्यक्षः विश्वकर्मा राजनैतिक उत्थान मंच, जयपुर (सेवारत).

संयोजकः अखण्ड भारत गो-रक्षा अभियान (वर्ष २०१५).

कारोबारी सदस्यः काण्डला स्पेशल इकॉनामिक झोन इण्डस्ट्रीयल एसोसिएशन, गान्धीधाम.

सहसचिवः प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन कण्डला स्पेशल इकॉनामिक झोन, गान्धीधाम.

सदस्य, विशिष्ट सहयोगी एवं परामर्शदाताः आर्य समाज गान्धीधाम.

संरक्षकः जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा समिति, गान्धीधाम.

सदस्यः जिला शिक्षण सेवा समिति, नागौर (राज.).

संरक्षकः महावीर गो शाला समिति, लाड़पुरा

रजत सदस्यः जांगिड ब्राह्मण पत्र दिल्ली.

शेष भाग पृष्ठ-२३ पर...

सत्यार्थ प्रकाश

(१)
जिस सदन में चारों वेद नहीं,
वह सदन नहीं कब्रिस्तान है।
जिस भवन में सत्यार्थ प्रकाश नहीं,
वह भवन नहीं श्मशान है॥

(२)
सत्यार्थ प्रकाश तर्क की तलवार है।
दर्शनों और वेदों का सार है॥
दयानन्द की अनुपम कृति है।
वेदों की अनुकृति है॥

(३)
सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से,
तर्क बुद्धि बढ़ जाती है।
आर्यों की तर्क मेधाओं को देखकर,
सारी दुनिया डर जाती है॥

(४)
सत्यार्थ प्रकाश जो पढ़ता है,
वह तार्किक बन जाता है।
जो सत्यार्थ प्रकाश के पथ पर चलता,
उसका भाग्य बदल जाता है॥

(५)
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो, जीवन सफल बनाओ।
ज्ञानरूपी सागर में रोज गोता लगाओ॥
सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर विद्वान बन जाओ।
वेदों के पथ पर चलकर इन्सान बन जाओ॥

(६)

सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन करने से,
मनुष्य का कल्याण हो जाता है।
वह जीवन को समझने लगता है,
और उसका उत्थान हो जाता है॥

(७)
सत्यार्थ प्रकाश में ज्ञान का प्रकाश है भरा।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़ लिया वो कभी नहीं हारा॥
सत्यार्थ प्रकाश वेद ज्ञान का भण्डार है।
वेद शास्त्र बतलाते परमात्मा निराकार है॥

(८)
सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान रखने वाले,
कभी किसी से हार नहीं सकते।
निर्भिक स्वामी दयानन्द की तरह,
सत्य का शस्त्र ले सबको हरा सकते॥

(९)
सत्यार्थ प्रकाश अमृत धारा है।
दिव्य प्रकाश और सितारा है॥
सत्यार्थ प्रकाश एक सिपाही है।
शास्त्रार्थ और समाधान का शस्त्र है॥

(१०)
सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से,
जीवन पवित्र हो जाता है।
ज्ञान की गंगा में गोता लगाने से,
मन निर्मल हो जाता है॥

(११)
सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर,
बहुत लोग इन्सान बन गये।
मूर्ख भी सत्यार्थ प्रकाश को जानकर,
धुरन्धर विद्वान बन गये॥

(१२)
सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से,
पं. गुरुदत्त विद्यार्थी बदल गये।
स्वामी दयानन्द की शरण में आकर,
उनके सच्चे अनुयायी बन गये॥

डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोम'
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ,
फरीदाबाद (हरियाणा)
चलभाष- ९९५३१३१०८४

सम्पादकीय

क्या तुम 'वो' हो?, नहीं! तुम 'वो' तो नहीं

दिनांक ७ मार्च २०१७ को मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल चलकर उज्जैन जाने वाली पैसेन्जर ट्रेन में शाजापुर जिले के जबड़ी स्टेशन के समीप विस्फोट हुआ, जिसमें १० यात्री घायल हुए। सुरक्षा एजेन्सियों ने तत्काल सक्रियता बरतते हुए इस विस्फोट के जिम्मेदार भोपाल से बस द्वारा फरार तीन आरोपियों को जिला-होशंगाबाद के पिपरिया के नगर प्रवेश पर नाका लगाकर हिरासत में ले लिया।

हिरासत में लिए गए आरोपियों से पूछताछ में आरोपियों ने इस काण्ड के सरगना के रूप में लखनऊ के ठाकुरगंज इलाके में रह रहे कानपुर निवासी सैफूल्लाह का नाम बताया। सैफूल्लाह को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से उत्तरप्रदेश ए.टी.एस. ने उसके निवास स्थान की घेराबन्दी की। इस स्थिति में सम्बन्धित आतंक के पर्याय सैफूल्लाह की सुरक्षा एजेंसियों से मुठभेड़ में सैफूल्लाह मारा गया। सैफूल्लाह के मारे जाने के पश्चात् सुरक्षा बलों ने उसके कमरे में बड़ी मात्रा में शस्त्र, गोला-बारूद, आई.एस.(इस्लामिक स्टेट) का झण्डा तथा आपत्तिजनक साहित्य बरामद किया।

समाचार पत्र नव दुनिया में प्रकाशित समाचार में मारे गए सैफूल्लाह के पिता ने पुत्र का शव लेने से इनकार कर दिया। इसका कारण उन्होंने पुत्र के देशद्रोही गतिविधियों में संलिप्तता बताया तथा इसके लिए उन्होंने अफसोस भी जताया।

उधर म.प्र. ए.टी.एस. तथा केन्द्रीय सुरक्षा एजेन्सियों की पूछताछ में हिरासत में लिए गए आरोपियों ने सैफूल्लाह के विषय में जो बताया उसके अनुसार वह आई.एस.आई.एस. से प्रभावित था तथा वह आई.एस.आई.एस. को प्रभावित कर उनका विश्वास पाने के लिए प्रयासरत् था। इसके लिए उसके निर्देश पर ट्रेन में बम ब्लास्ट करने के चित्र मोबाइल से लेकर सिरिया भेजे गए। **सैफूल्लाह अपने साथियों से कहा करता था कि एक 'वो' है और एक 'हम' हैं। हम कौम के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं।** यहां 'वो' का आशय इराक-सिरिया में इस्लामिक स्टेट के लड़ाकों (आतंकवादियों) से हैं तथा हम से आशय भारतीय मुसलमानों से है। यह घटना मध्यप्रदेश के क्षेत्र में पहली आतंकवादी घटना है। इसका मतलब यह नहीं है कि मध्यप्रदेश शान्त क्षेत्र है। आगे बढ़ने से पूर्व मध्यप्रदेश में घटित इस आतंकवादी घटना के कुछ ही समय पूर्व घटित अन्य दो घटनाक्रमों पर भी दृष्टि डालना आवश्यक है।

पहली घटना- दिनांक- ३१ अक्टूबर २०१६ को भोपाल जेल ब्रेक काण्ड की है, जिसमें भोपाल केन्द्रीय जेल में बन्द सीमी (इस्लामिक स्टूडेण्ट मूवमेन्ट) आतंकवादियों जिनकी संख्या ८ थी ने जेल के प्रधान सन्तरी रमाशंकर की हत्या कर जेल से भाग निकले, जिन्हें सुरक्षा बलों ने भोपाल से कुछ ही दूरी पर जंगल में घेर लिया जहां मुठभेड़ के दौरान जेल से फरार समस्त आतंकवादी मार गिराये गए।

दूसरी घटना- दिनांक २८ फरवरी २०१७ को इंदौर जिला न्यायालय द्वारा एक प्रकरण में दिए गए फैसले की है। उपरोक्त प्रकरण में मुख्य आरोपी सफदर नागो री सहित उसके १० साथियों को न्यायालय ने समाज विरोधी, विध्वंसक एवं देशद्रोही गतिविधियों का दोषी पाया जाने पर उम्रकैद अर्थात् जीवन की अन्तिम क्षण तक कारावास भोगने की सजा सुनाई तथा इनके दो साथियों को उनके विरुद्ध आरोप सिद्ध न होने पर बरी कर दिया।

इन १३ व्यक्तियों को धार जिले के पीथमपुर पुलिस ने श्यामनगर क्षेत्र से गिरफ्तार किया था, इनमें से कुछ आरोपी देश में हुई अनेक आतंकवादी घटनाओं, जिनमें अनेक प्रकार से जान-माल की क्षति हुई है के भी आरोपी हैं और उनके प्रकरण विचाराधीन हैं। ये भी सभी व्यक्ति प्रतिबन्धित संगठन सीमी अर्थात् - ईस्लामिक स्टूडेण्ट मूवमेन्ट के कार्यकर्ता बताये जाते हैं। सीमावर्ती राज्यों जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि राज्यों में घटित आतंकवादी घटनाओं और मध्यप्रदेश में घटित उपरोक्त घटनाओं में भिन्नता है। सीमावर्ती राज्यों की घटनाओं में देश की सीमा से बाहर पड़ोसी देशों में विशेषकर पाकिस्तान, बांग्लादेश में सक्रिय आतंकवादी संगठनों तथा वहां के राजनीतिज्ञों का अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु परोक्ष-अपरोक्ष समर्थन होता है तथा अनेक घटनाओं में तो उन देशों के नागरिकों की भी संलिप्तता पाई जाती है, किन्तु मध्यप्रदेश में घटित इन घटनाओं में वांछित अपराधियों में कुछेक को छोड़कर अधिकांश मध्यप्रदेश के निवासी हैं और बाहरी तत्वों से इनकी किसी प्रकार की संलिप्तता के कोई प्रमाण दृष्टी में नहीं आए हैं। इनकी कारगुजारियों को ये निजी तौर पर आंतरिक तत्वों के सहयोग से गति दे रहे थे तथा कट्टरवाद फैला रहे थे।

इन घटनाओं तथा इनके जैसी समस्त घटनाओं का मुख्य उद्देश्य लगभग एक ही है इस्लामिक कट्टरवाद का विस्तार कर भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाने हेतु कदम बढ़ाना अथवा इस्लामिक राष्ट्र बनाना।

ऊपर लिखित घटनाओं तथा इन जैसी समस्त घटनाओं में जान-माल दोनों की हानि कर आतंक का साम्राज्य स्थापित कर इस्लामिक कट्टरवाद को बढ़ावा देना है। इसके अतिरिक्त वाचिक अर्थात् वाणी के द्वारा भी आतंक फैलाकर कट्टरवाद को मजबुती देना तथा उसका विस्तार करने का प्रयास किया जा रहा है। इसका मूल उद्देश्य इस्लामी विचाराधारा के उन उदार बुद्धिजीवियों और विकास तथा मानवता में विश्वास रखने वालों को कट्टरवाद से बाहर निकलने से रोकना है जिसका ताजा उदाहरण वर्ष २०१५ में इण्डियन आईडल जूनियर-२ की रनर नाहिद का है। नाहिद का २५ मार्च को असम म्यूजिक शो होना है इसके म्यूजिक शो में गाने को ४६ मौलवियों ने शरिया के खिलाफ बताकर विरोध किया है। यह पहला वाकया नहीं है इसके पहले भी मुस्लिम महिलाओं द्वारा हिन्दू भजन गाने, होली का रंग लगाने, सानिया मिर्जा के स्कर्ट पहन खेलने आदि के विरुद्ध फतवे जारी किये जा चुके हैं। नाहिद के फतवे के पीछे कारण अल्लाह की नाराजगी बताया है। समझ से परे है कि जिसने कला बख्शी है वह उस कला के इस्तेमाल पर कैसे नाराज हो सकता है? जबकि ईश्वर प्रसन्नता-अप्रसन्नता से परे है, क्योंकि वह सदा एक रस रहने वाला है। इस्लाम का भी सिद्धान्त है कि उसमें तब्लीगी अर्थात् परिवर्तन नहीं होता। यहां

यह भी ध्यान देने के योग्य है कि जोर-शोर से यह प्रचारित किया जाता है कि 'मजहब नहीं सिखाता-आपस में बैर रखना' और ऊपरी विश्लेषण से स्पष्ट है कि यह सब विद्वेष (बैर) मज़हब के नाम पर हो रहा है तो क्या ऊपर की उक्ति में 'आपस' शब्द का कोई गूढ़ रहस्य है कि इस्लामी विचारधारा के लोग 'आपस' हैं और इस विचारधारा से भिन्न लोग 'गैर' हैं जिसका अर्थ यह हुआ कि हम अपनी विचार धारा अर्थात् अपने लोगो के साथ कोई विद्वेष (बैर) नहीं करें और गैर हैं तो बैर करें और इतना बैर करें कि उन्हें किसी भी प्रकार निपटा कर ही दम लें।

इसी प्रकार का एक उदाहरण हमारे महानगर इंदौर में भी मिलता है, यहां कि अनेक मस्जिदों एवं दरगाहों पर बाहर की ओर बड़े-बड़े अक्षरों में **'लोगो को फायदा पहुंचाते रहो, बड़े आदमी बन जाओगे'** लिखा हुआ प्रचारित किया हुआ दिखता है, यह लिखा हुआ पलासिया चौराहे पर बीच सड़क स्थित दरगाह, व्यस्ततम महात्मा गांधी रोड पर सीना ताने खड़ी मस्जिद पर, व्यस्ततम् बाम्बे-आगरा रोड पर जी.पी.ओ. चौराहे के पास तथा छोटी खजरानी स्थित आदि मस्जिदे, जेल रोड पर स्थित दरगाह आदि अनेक स्थान ऐसे हैं जो व्यस्ततम् मार्गों पर स्थित है। रोड चौड़ीकरण में इनके आजू-बाजू में रोड पीछे चले गये हैं और इन स्थानों को पीछे नहीं हटाने से ये स्थान बीच रोड पर आवागमन में बाधक बने हुए हैं, जिनके आगे प्रशासन भी बौना बना हुआ है। उस पर भी इन स्थानों पर लोगो को फायदा पहुंचाने के बोर्ड लगे हुए हैं तो लोगो को कैसे फायदा पहुंचाया जाएगा? हमारी दृष्टि में तो आज दिन तक ऐसे कोई पेयजल हेतु प्याऊ, यात्री प्रतिक्षालय अन्न क्षेत्र, अनाथालाय, वृद्धाश्रम, चिकित्सालय, स्कूल आदि नहीं आये हैं। जो इस्लामी संस्थाओं द्वारा जाति-मजहब से ऊपर उठकर सर्वजन को हितार्थ संचालित किये जाते हों। खैरात भी बांटते हैं तो अपने वाले को। हमने तो तकरीर (प्रवचन) के ऐसे आयोजन भी नहीं देखें जो सर्वजन के लिए आम हो। हो भी कैसे क्योंकि इनकी तकरीरों में एक सच्चा मुसलमान बनने की शिक्षाएं दी जाती हैं और जो मुसलमान हैं वह अपने वाला है। जबकि जहां मनुष्य बनकर मानवता का पाठ पढ़ाने वाली तकरीर (प्रवचन) होंगे तो वहां तो किसी विचाराधारा विशेष के लिए न होकर सर्व आमजन के लिए होंगे। इस कारण किसी की रोक-टोक का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। हमने तो मस्जिदों के ऊपर लगे ध्वनी विस्तारक यंत्रों से अजान की आवाजें जरूर सुनी है किन्तु मस्जिद में होने वाली तकरीरों की नहीं, क्योंकि ये तकरीरें (प्रवचन) सर्वजन के लिए न होकर वर्ग विशेष के लिए होती है।

एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र एक्य (एकता) है। जहां भाषा-भाव-भावना में एक एक्यता आ जाए वहां सागर में नदियों की भाति सारे सुख एक-एक कर के प्रवेश करने लगते हैं। - दयानन्द सरस्वती

यह सब कुछ जो हो रहा है अथवा किया जा रहा है यह उन **'वो'** के द्वारा नहीं किया जा रहा, बल्कि इनके किये जाने में **'हम'** शामिल है। सैफूल्लाह का दर्द था कि **'हम'** कौम के लिए कुछ नहीं कर पा रहे। प्रश्न उठते हैं कि सैफूल्लाह कौम की बेहतरी के लिए क्या करना चाहता था? क्या आई.एस. की तरह निरीह-निर्दोष लोगो को नृशसंतापूर्वक गला रेत (काट) देने (जिसका प्रशिक्षण उनका आका गो स मोहम्मद जो भारतीय वायुसेना से निवृत्त था के द्वारा बूचड़खानों में ले जाकर जानवरों को नृशंसतापूर्वक काट-काट कर देता था) से कौम की बेहतरी हो जाती? कौम की तो दूर सैफूल्लाह के बूढ़े पिता जो अरमान संजोए थे कि उनका बेटा बड़ा होकर काम-धन्धा कर बुढ़ापे का सहारा बनेगा। क्या उनकी अथवा सैफूल्लाह के परिवार की बेहतरी हो गई? कहा जाता है व्यक्ति के जीवन में उसका सबसे बड़ा दुर्भाग्य उसके पुत्र की अर्थी (जनाजा) उसके कांधों पर होना है। सैफूल्लाह के पिता का दुर्भाग्य तो देखिये कि वे तो अपने पुत्र का जनाजा भी अपने कंधों पर नहीं उठा सके और तो और अपने पुत्र के शव के अन्तिम दर्शन तक परिवार वालों को नहीं करवा सके। क्यों? क्योंकि अब उनके पुत्र के नाम के साथ आतंकवादी होने की मुहर लग चुकी थी। सुरक्षा एजेंसियों की पूछताछ का जवाब देने की हिम्मत उनमें नहीं थी। आम जनता के सामने अब वो नजरे उठाकर चलने लायक भी नहीं रहे थे। अब जब भी बाजार से गुजरेंगे तो लोगो में फुस-फुसाहट होगी कि ये ही उस आतंकवादी सैफूल्लाह का पिता है।

यह दशा मात्र सैफूल्लाह के पिता और परिवार की नहीं होकर भोपाल जेल ब्रेक काण्ड में मारे गये कैदियों तथा इंदौर जिला न्यायालय द्वारा दिए गए फैसले से जेल भेजे गए समस्त दोषियों और उन सबकी है जिनके अपने सम्प्रदायवाद की कट्टरता की भेंट चढ़ चुके हैं, अथवा चढ़ने जा रहे हैं प्रश्न उठते हैं ऐसा क्यों हो रहा है? क्या यह सिलसिला रोका नहीं जा सकता? इन प्रश्नों का उत्तर यह है कि यह सब **'वो'** और 'हम' का अन्तर (फासला) नहीं समझने और भावी पीढ़ी को ठीक से नहीं समझाने के कारण हो रहा है और जिस दिन मानव यह समझ जाएगा उस दिन यह सिलसिला थम जाएगा। कट्टरवाद संकीर्णतावादी से किसी का भला नहीं हो सकता, वह चाहे मुसलमान हो, हिन्दू हो अथवा संसार की किसी भी विचारधारा का व्यक्ति ही क्यों न हो। इस विषय में किसी **कवि ने कहा है कि तू न हिन्दू बन, न मुसलमान बन, तू महज एक सच्चा इन्सान बन। मनुष्य मात्र के हित में कट्टरवाद से ज्यादा हितकारी है मानववाद।**

आओ! हम 'वो' और 'हम' के अन्तर (फासले) पर विचार करें। 'वो' वो है और 'हम' हम हैं। इस हम में हम सभी शामिल हो जाते हैं। जब बात हम की होगी तो फिर उसमें बात पाकिस्तान और बांग्लादेश की भी होगी। उनके बगैर हम अपूर्ण हैं। वो और हम को समझने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द के **'शुद्धि आन्दोलन'** को समझना होगा। कर्नल देवमित्र जी द्वारा रचयित तथा घुड़मल प्रहलाद कुमार धर्मार्थ न्यास हिण्डौन सिटी द्वारा प्रकाशित **'भारतीय मुस्लिम आक्रान्ताओं का इतिहास'** तथा सन्तोष आर्य जालना द्वारा रचयित तथा संस्कृति रक्षक मंच लातूर महाराष्ट्र के प्रयासों से प्रकाशित **'शुद्धि आन्दोलन एवं मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी'** आदि पुस्तकों को गम्भीरतापूर्वक पढ़ना और कट्टरवाद की ओर बढ़ रहे लोगो को पढ़ाना होगा तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के अधूरे आन्दोलन को

गति देना होगी तथा इस कार्य को महर्षि दयानन्द के समर्पित शिष्य ही सार्थक कर सकते हैं। जब तक हम सार्थक नहीं होगा विश्वशान्ति की परिकल्पना बेमानी होगी। हम 'हम' बन गए तो फिर दुनिया के हम में शामिल होने का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। सैफूल्लाह तो अज्ञानी था। वह हम के रास्ते को छोड़कर 'वो' बनने के रास्ते पर चल पड़ा था। प्रत्येक पिता को विचार करना होगा कि उसकी भावी पीढ़ी का भविष्य 'वो' के रास्ते पर जाने पर है अथवा 'हम' में मिल जाने में। वो-वो है जो लगभग १४३८ वर्ष पूर्व अरब में इस्लाम के प्रादुर्भाव के जनक थे तथा उसकी विचारधारा में समूचे विश्व को रंगने के लिए समूचे विश्व में फैले इसका इतिहास ही वैदिक यन्त्रालय अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तक '**खूनी इतिहास**' हैं। हम वर्तमान में कोई भी हो हम-हम हैं। हमारी सबकी जड़ों में राम-कृष्ण की संस्कृति है, उनकी गो रवशाली वीरासत है। भारत में इस्लाम ना तो पैदा हुआ, न ही यहां शान्ति का दूत बनकर आया। लगभग ७१४ ईस्वी में प्रथम मुस्लिम आक्रान्ता मीर कासिम ने सिन्ध के राजा दाहिर को छल-कपट के सहारे परास्त किया और यहां के निवासियों को बलात् मुसलमान बनाकर इस्लाम का बीजारोपण इस भू-भाग पर किया।

हमारे अपने लोगो की मूर्खता-स्वार्थता के बूते इस बीज का बीजारोपण तथा अंकुरण हुआ और यह पल्लवित होकर फला-फूला। इसको खाद-पानी देने और इसके फल खाने के लिए जो भी आक्रान्ता यहां आया उसने अनुभव किया कि यहां हम बनकर रहे बिना मौज उड़ाना सम्भव नहीं है, इन्हीं कारणों से अन्दर से कट्टरवाद और ऊपर से उदारवाद का चोला पहनकर उन्होंने हमें खूब मूर्ख बनाया और अपनी जड़ें जमाई। अंग्रेजों के आने के बाद तो हम पुनः अंग्रेजों के विरुद्ध हम हो गए। १८५७ की क्रान्ति का बिगुल अन्तिम मुगल शासक बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में बजा। इस क्रान्ति में हिन्दू राजाओं के साथ-साथ मुस्लिम नवाबों ने भी भाग लिया। झांसी की रानी सहित अनेक हिन्दू राजाओं की सेनाओं के प्रमुख पदाधिकारी मुस्लिम थे।

अंग्रेजों के कान खड़े हुए उन्होंने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई। महर्षि दयानन्द सरस्वती का कार्य क्षेत्र में पदार्पण हुआ। उनका राजनीति तथा सांसारिक विषयों से कोई सरोकार नहीं था। उनके लिए कोई अपना-पराया नहीं था। उन्होंने वेद को परमपिता परमात्मा की वाणी बताते हुए सर्व मानवों के कल्याण हेतु वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सबको भेदभाव रहित उपदेश दिए। उनके उपदेश मानवतावादी थे। सभी मतानुयायियों में उनकी प्रतिष्ठा थी। आर्य समाज की स्थापना में धन राशि का सहयोग मुस्लिम परिवार से प्राप्त हुआ। लाहौर आर्य समाज की स्थापना हेतु स्थान मुस्लिम परिवार द्वारा तथा अमृतसर आर्य समाज हेतु सिक्ख परिवार द्वारा स्थान सुलभ हुआ। देहरादून के एक मुस्लिम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से अपनी शुद्धि करवा कर वैदिक धर्म की दीक्षा ली। वर्षों से हममें मिलने को आतुर लोगो का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस जनांदोलन पर अंग्रेजों की कुदृष्टि थी ही उन्होंने 'वो' को हम में मिलने से रोकने के प्रयास तेज कर दिए। 'वो' के स्वार्थी तत्व अपनी राजनीतिक महात्वाकांक्षाओं के चलते अंग्रेजों के षड्यन्त्र के शिकार हुए। इसी समय अचानक वज्राघात हुआ और महर्षि दयानन्द सरस्वती हमें छोड़ चल बसे।

१८८५ में कांग्रेस अस्तित्व में आ गई। कांग्रेस में अधिकांश हिन्दू नेताओं का वर्चस्व रहा। अंग्रेजों की फूट डालो, राज करो की नीति के कारण सर सैय्यद अहमद खाँ की सरपरस्ती में मुस्लिम नेता कांग्रेस से दूर रहे। वर्ष १९०७ में ढाका के नवाब मि. सलीम उल्ला खाँ ने मुस्लिम लीग की स्थापना की। कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के नेताओं को साथ लेने की बहुतेरी कोशिश की। यहीं से मुस्लिम तुष्टीकरण का प्रारम्भ हुआ। अनेकों बार मुस्लिम लीग की नाजायज मांगो पर भी कांग्रेस के नेताओं ने (मुस्लिम नेताओं का अंग्रेजों के प्रति झुकाव देखकर वे भयभीत थे कि मुस्लिमों को साथ लिए बगैर स्वतन्त्रता की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। सम्भवतः उनकी इसी विवशता ने तुष्टिकरण को जन्म दिया।) घुटने टेके, वस्तुतः देश विभाजन की नींव इन्हीं नाजायज मांगो ने भरी। सन १९१८ के महायुद्ध में अंग्रेजों ने टर्की (अजीरत-उल-अरब) की सत्ता को छिन्न-भिन्न कर दिया। टर्की के बादशाह (जो वास्तविक वो हैं) को समस्त संसार के मुस्लिम अपना खलिफा मानते हैं।

यहां तक अंग्रेजों ने मुस्लिमों को पूरी तरह साध रखा और मुस्लिम कांग्रेस से दूर रहे, किन्तु उनके खलिफा पर संकट आते ही उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध खिलाफत आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए उन्होंने कांग्रेस का इस्तेमाल किया और कांग्रेस नेताओं ने टर्की से गैर मुस्लिम के शासन का विरोध करने वाले इस आन्दोलन में तन-मन-धन से साथ देकर १ अगस्त १९२० को हिन्दुस्तान में हड़ताल करवाई, जिसमें समस्त हिन्दुओं ने साथ दिया। किन्तु फिर भी गो-वध तथा मस्जिदों के सामने बाजे नहीं बजाने की मांगो पर मुस्लिमों की मांगो के अनुरूप कांग्रेस ने समझौते किए।

इन स्थितियों को समझकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती से वीरासत में प्राप्त शुद्धि को हथियार बनाया और कूद पड़े मैदान में, उनकी शुद्धि आन्दोलन मुस्लिम नेताओं की आँख की किरकिरी था। फलस्वरूप तथाकथित महात्मा ने शुद्धि आन्दोलन का विरोध किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी उस समय के कांग्रेस के वरिष्ठ गणमान्य नेता थे किन्तु उन्हें कांग्रेस छोड़ना पड़ी। इससे मुस्लिमों के हौंसले बढ़े और स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हुआ। अगर उस समय की कांग्रेस ने मुस्लिमों की सहयोग की झूठी आस और अंग्रेजों की कृपा से स्वतन्त्रता प्राप्ति के सामने घुटने न टेककर स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्ध आन्दोलन को सफल बनाया होता तो हम-हम बन गए होते और देश के टुकड़े भी नहीं होते। देश विभाजन से मुस्लिमों को क्या मिला? केवल दो मुस्लिम राष्ट्र का तमगा इसके अतिरिक्त उनकी बेहतरी के लिए कुछ और हुआ हो तो विचार कर लो कि आज विभाजीत हिन्दुस्तान कहां खड़ा है और बांग्लादेश-पाकिस्तान की क्या दशा है? इन बातों को अखण्डित भारत वर्ष के समस्त मुस्लिम जिनके पूर्वज कभी हिन्दू थे को समझना होगा कि पहले अंग्रेजों ने फिर कांग्रेस ने अपनी सत्ता को चलाये रखने में उनका इस्तेमाल किया है और इसमें भरपूर साथ उनके स्वार्थी नेताओं ने दिया है और आज भी तुम्हारा हीत 'वो' बनने में नहीं हम में मिल जाने में हैं। कहीं ऐसा न हो कि अलग पहचान बनाने में अलग-थलग पड़ जाओ जैसे पाकिस्तान और बांग्लादेश अलग देश बनने के बावजूद दुनिया में अलग-थलग पड़ गए।

शेष भाग पृष्ठ १८ पर

हृदयहीन

क्या ७० सालों की स्वाधीनता ने हमसे
मनुष्यता के नैसर्गिक गुण भी छीन लिये है?
हमारे समाज का एक विशेष वर्ग आज
अकूत धन. बल, पहुंच, प्रतिष्ठा के नशे में
आकण्ठ डूबा है, चूर है, बेपरवाह है.
किन्तु क्या हमारी सदियों से चली आई
परम्पराओं, मान्यताओं, सामाजिक बोध पर भी
इतना जंग लग गया है?
कि हमारी मूलभूत इंसानियत भी तिरोहित हो गई है?

क्या आज एक आम इन्सान भी अपने जैसे दूसरे
इन्सान के दुःख-दर्द को नहीं महसूस कर पा रहा?
उड़ीसा में एक आदिवासी मृत पत्नी का शव
कंधे पर लादे अपनी किशोरी बेटी के साथ
घर पहुंचने के लिए मीलों पैदल चलने को
इसलिए विवश होता है क्योंकि उस के पल्ले
एम्बुलेन्स का किराया चुकाने के पैसे नहीं हैं!
हस्पताल में मृत मरीज का शव इसलिए
रोक लिया जाता है, क्योंकि उसके परिजन
हस्पताल का बाकी बिल चुकाने में असमर्थ हैं!
और और... उदाहरण अनगिनत हैं, अनेक हैं!

मुनाफा

व्यापार किया जाता है मुनाफे के लिए
किन्तु मुनाफे की भी एक सीमा तो होती है.
वरना मुनाफे और लूट में अन्तर नहीं रहेगा!
आज नैतिकता को भुला दिया गया है.

उदाहरण के रूप में हृदय के ऑपरेशन में
डाले जाने वाले स्टेंट की बात लें!
पता चलता है कि उसकी कीमत में
निर्माता से लेकर हस्पताल तक सब
मुनाफाखोरी नहीं, खुली लूट में लगे हुए थे.
वह भी हृदय के गम्भीर रोगियों से!
हृदय रोग केवल पैसे वालों को नहीं होता!
पैसे से लाचार भी इसके शिकार होते हैं!
भला हो सरकार का कि देर से ही सही
उसकी कुम्भकरण की नींद टूटी तो सही!
अब स्टेंट की कीमत कम तय कर दी गई है
वह भी ५-१०-२० नहीं ८५ प्रतिशत तक!
सोचकर हैरानी होती है कि हमारे ही
तथाकथित सभ्य समाज का एक प्रमुख अंग
लालच में किस हद तक हृदयहीन हो सकता है!

ओमप्रकाश बजाज
कालिंदी कुंज,
पिपलिया हाना, इंदौर
- चलभाष-
९८२६४-९६९७५

हीरो वर्शिप

हीरो वर्शिप हमारे खून में हमेशा से चली आई है।
जिसने कुछ अच्छा, जनहित में, लीक से हटकर
हमारी अपेक्षाओं से कहीं बढ़कर कर दिखाया,
हम उसे हाड मांस का इन्सान नहीं रहने देते।
झट उसे अवतार पुरुष मान लेते हैं,
फूल दीप अगरबत्ती से उसकी पूजा करने लगते हैं,
कहीं-कहीं और आगे जा उसका मंदिर तक बना डालते हैं।
दक्षिण भारत में यह रिवाज अधिक प्रचलित रहा है
वहां हर लोकप्रिय फिल्म अभिनेता सुपर ह्यूमन बन कर
मात्र आदर सम्मान ही नहीं पाता वन्दनीय हो जाता है।
उसकी मामूली सी असफलता भी कुछ लोग झेल नहीं पाते,
निराशा हताश अवसादग्रस्त हो आत्म हत्या करने लग जाते हैं,
उत्तर में उतना अधिक पागलपन तो देखने में नहीं आता
किन्तु अमिताभ बच्चन के घर के बाहर उनके दर्शनार्थी
उनकी इक झलक पाने के लिए नित भीड़ तो लगाते हैं।
अधिक नहीं तो भी दो-चार मन्दिर तो उनके भी बने हैं।
जहां उनकी पूजा आरती, वन्दना नियम से की जाती है,
अब इस श्रेणी में नए-नए शामिल होने वालों में अपनी
अद्‌भुत सफलता के कारण श्री नरेन्द्र मोदी जी भी हो गए हैं।

अच्छा

देश में कहीं भी कुछ अच्छा होता है
तो मन प्रसन्न हो जाता है।
एक नई उम्मीद जागती है दिल में
कि अभी बहुत कुछ बाकी है!

पिछले छः महीने में सात बार
इन्दौर में ग्रीन कारीडोर बनाकर
ब्रेन डैड व्यक्तियों के हार्ट लिवर
मुम्बई और दिल्ली रिकार्ड समय में
पहुंचाए गए और प्रत्यारोपित किए गए
किडनियां स्थानीय हस्पतालों में
जरूरतमंदों को लगाई गई
इस करिश्मे को सरअंजाम देने
सामाजिक संस्थाओं हस्पतालों पुलिस
जिला प्रशासन हवाई सेवा के अधिकारियों
तथा जनता का प्रशंसनीय सहयोग रहा
शायद देशभर में यह पहली मिसाल है
इस प्रकार के कार्य को सरअंजाम देने की!

१८५७ स्वातन्त्र्य समर के महानायक

- डोंगरलाल वर्मा -
पूर्व प्रधानाध्यापक, प्रधान-आर्य समाज
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-८९५९०५९०९९

अमर बलिदानी-मंगल पाण्डेयय

क्रान्तिवीर ऐसा की काल से भी वह न डरता।
कर्मवीर ऐसा कि मृत्यु का भी ध्यान वह न धरता।।
दानवीर ऐसा कि देह का लोभ भी वह न करता।
धर्मवीर ऐसा कि प्राण के मोह पर वह न मरता।।

गोरे अंग्रेजों ने हमें आजादी दे दी या कवि प्रदीप के गीतानुसार-'दे दी आजादी तुने बिन खड़ग बिन ढाल। साबरमति के संत तूने कर दिया कमाल।।' अर्थात् गान्धीजी ने जैसे बकरी रूपी अंग्रेजों के मालिक के समान बकरी का कान पकड़ कर भारतीयों को आजादी दे दी हो। आजादी क्रान्तिकारियों की लाशों पर चलकर आई है। क्रान्तिकारियों की **'करो या मरो'** की नीति पर आई है। न कि गान्धीजी की अहिंसा की नीति पर आई है। आजादी हेतु दो सौ वर्ष तक लगातार संघर्ष, प्राणों की आहुतियां, अपने परिवारों का त्याग और वतन को खोया है। दर-दर की ठोकरें खाई, कारावास भोगे, अकल्पनीय काला-पानी की यातनायें सही और फांसी के फन्दों पर क्रान्तिकारी ऐसे झूले जैसे सावन के झूले, झुलें हों, जब कहीं आजादी की प्राप्ति हुई। सन् १८५७ के सौ साल पहले सन् १७५७ में जब प्लासी का युद्ध हुआ था तभी से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बज चुका था। इस युद्ध में मीर जाफर, दुर्लभराम की गद्दारी तथा इनकी सेना ने लड़ाई में भाग नहीं लिया था। यदि ये देशद्रोही न बनते तो अंग्रेजों को निश्चय ही पराजय का मुंह देखना पड़ता। नवाब सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से डटकर मुकाबला किया। किन्तु अपनों ही के कारण सिराजुद्दौला को पराजय का हार पहनना पड़ा। जिसके कारण अंग्रेजी सत्ता की जड़ और पुख्ता हो गई। शनैः-शनैः भारतीयों को विदेशी दासता को आदत स्वीकृत हो गई।

बंगाल की बैरकपुर छावनी में मंगल पाण्डेय नामक एक धर्म निष्ठ ब्राह्मण सैनिक ने कारतूसों पर गाय, सूअर की चर्बी लगाये जाने के कारण विद्रोही होकर सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में प्रथम आहुति जो इतिहास के पन्नों पर शिरोमणि व्यक्ति विद्यमान हैं। फैजा जिले की अकबरपुर तहसील के सुरहरपुर नामक गांव में १९ जुलाई १८२७ को दिवाकर पाण्डेय तथा अभयरानी नामक एक ब्राह्मण दम्पत्ति के यहां जिस बालक का जन्म हुआ था, २९ मार्च १८५७ का दिन अंग्रेजों के लिये दुर्भाग्य के दिन के रूप में उदित हुआ। पांचवीं कम्पनी की चौतीसवीं रेजीमेंट का १४४६ नं. का सिपाही वीर-वर मंगल पाण्डेय अंग्रेजों के लिये प्रलय सूर्य के समान निकला।

मंगल पाण्डेय का रणघोष गूंजा-बन्धुओं! उठो! उठों! तुम किस चिन्ता में निमग्न हो? तुम्हें अपने पावन धर्म की सौगन्ध। चलो स्वतंत्रता-लक्ष्मी की पावन अर्चना हेतु इस अत्याचारी अंग्रेज -शत्रुओं पर तत्काल प्रहार करो। मंगल पाण्डेय के इस प्रकार बदले के तेवर को देखकर अंग्रेज सार्जन्ट मेजर ह्यूसन उसके पथ को अवरूद्ध करने के लिये आगे आया। अपनी कड़कती आवाज से उसने मंगल पाण्डेय को अपने स्थान पर खड़ा रहने का आदेश दिया। विद्रोही मंगल पाण्डेय के अरमान मचल उठे। वह शिव-शंकर की भांति उद्यत होकर रक्तगंगा का आह्वान करने लगा। सबल बाहुओं से बन्दूक तान ली और बन्दूक का थोड़ा अपनी ओर खींचा तथा धुड़ु यू ऽऽऽऽऽ का तीव्र स्वर सिहर उठा। मेजर ह्यूसन घायल कबूतर की भांति जमीन पर तड़प रहा था, उसका रक्त भारत की धूल चाट रहा था। फिरंगी की बलि हो चुकी थी। विप्लव महायज्ञ के पुरोधा मंगल पाण्डेय की बन्दूक पहला स्वाहा बोल चुकी थी। स्वतंत्रता यज्ञ की वेदी को शत्रु-देह की समिधा अर्पित हो चुकी थी। ह्यूसन को धराशायी हुआ देख लेफ्टिनेन्ट बॉब वहां आ पहुंचा। मंगल पाण्डेय को घेरना चाहा, किन्तु पहला निवाला खाकर मंगल पाण्डेय की बन्दूक की भूख भड़क उठी और उसने दूसरी बार मुंह खोला और ले. बॉब खिसिया कर रह गया। बॉब ने अपनी तलवार खींच ली और वह पाण्डेय पर टूट पड़ा। पाण्डेय भी कच्चा खिलाड़ी न था, उसने तलवार का भरपूर हाथ ऐसा मारा कि बॉब का कंधा कटकर अलग हो गया। एक दूसरा गोरा मंगल पाण्डेय की ओर बढ़ा ही था, कि एक भारतीय सैनिक ने बन्दूक का कुन्दा ऐसा मारा कि गोरे की खोपड़ी खिल गयी। तत्पश्चात् कर्नल व्हीलर मंगल पाण्डेय की ओर बढ़ा तो सभी भारतीय सैनिक दहाड़ कर बोले खबरदार! जो कोई पाण्डेय की ओर बढ़ा आज हम अपवित्र हाथों से ब्राह्मण की पवित्र देह का स्पर्श नहीं होने देंगे। कर्नल जैसा आया था वैसा ही लौट गया।

वीर पाण्डेय ने अपने कर्त्तव्य की पूर्ति कर दी थी। उसने शत्रु रक्त से भारत भूमि का तर्पण कर दिया था। भारतीय स्वतंत्रता के महत् कार्य के लिये अपनी रक्तांजलि देना भी उसने अपना पावन कर्त्तव्य समझा। अपनी बन्दूक अपनी छाती से अड़ाकर गोली चलाई किन्तु गोली छाती में न जाती हुई पसली की तरफ फिसल गई। तत्पश्चात् घायल शेर अंग्रेजों द्वारा बंदी बना लिया गया। फौजी अदालत ने पाण्डेय को दि. ०८.०४.१८५७ को फांसी देना, सजा सुना दी गई। फांसी की खुशी में पाण्डेय उछल पड़ा। पाण्डेय ने तीनों जजों को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया

तथा निवेदन किया- मेरी एक अर्ज है कि सजा में कोई परिवर्तन न हो तथा फांसी जल्दी दिलवा दी जाए। मुझे बड़े दरबार में जाने की जल्दी हो रही है। कौन सा दरबार? जज ने पूछा। पाण्डेय ने बताया - **''वह दरबार ईश्वर का है जिसे आप गॉड कहते हैं। वहां देर जरूर लगती है लेकिन अन्धेरा कभी नहीं होता है। कैसा अन्धेर? जज ने पूछा। पाण्डेय ने कहा- जज सा। यहां मुंह देखा व्यवहार होता है। नेकी भी आपको बदी नजर आती है। हम काले हैं, आप गोरे हैं। हम गुलाम है आप मालिक हैं।''** मेरे साथ उचित न्याय तो उसी दरबार में होगा, इसलिए वहां जाने की जल्दी हो रही है। फांसी देने के लिए बैरकपुर के जल्लादों ने मना कर दिया, कि हम पाण्डेय के पवित्र खून से अपने हाथ रंगना नहीं चाहते। तो कलकत्ता से चार चल्लाद बुलाये गये। आठ अप्रैल के सूर्य ने उदित होकर मंगल पाण्डेय के बलिदान का समाचार संसार में प्रसारित कर दिया कि भारत वीर सपूत ने आजादी के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दे दी। विद्रोही वीर पाण्डेय के पवित्र प्राण-द्रव्य को पाकर स्वातन्त्र्य यज्ञ की लपटें भभक उठी। क्रान्ति की ये लपलपाती हुई लपटे अंग्रेजों को लील जाने का चारों ओर फैलने लगी।

वृद्धों का प्रेरक- शहीद राजा कुँअरसिंह

हाँ! अवनति भी हमारी, समुन्नति-सी बड़ी।
जैसी बढ़ी थी पूर्णिमा, वैसी अमावस्या पड़ी।।
उत्थान के पीछे पतन सदा है सर्वथा।
प्रोढ़त्व के पीछे स्वयं, वृद्धत्व होता है यथा।।
(गुप्तजी)

साहित्य में नोबल पुरस्कार से अलंकृत, कवि, लेखक, दार्शनिक, नाटककार, पशु-पक्षियों के अनन्य प्रेमी, शुद्ध शाकाहारी, परोपकारी, भारतीय संस्कृति में आविर्भूत - **जार्ज बर्नाड शॉ** ने अपने जीवन के ९४ वसंत आनंद पूर्वक व्यतीत किये। अपने विवाह के पूर्व जीवन के चौथे दशक के बाद एक रूपवती, धनवती, सुन्दर नव युवती ने अपने विवाह का विचार शॉ के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया। महाशय! आप कुरुप है किन्तु अपने द्वारा पैदा होने वाली सन्तान अभूतपूर्व होगी। शॉ ने अपने हाजिर जवाब में कहा- हे सुन्दरी! अगर कुदरत के खेल में पैदा होने वाली संतान में मेरा रंग-रूप और आपकी अकल आ गयी तो? इस नहले पर दहले के जबाव को सुन सुन्दरी नौ दो ग्यारह हो गयी।

इंग्लैण्ड का एक बहुत अमीर व्यक्ति थामसपास का जन्म १४८६ ई. में होकर इन्होंने ८८ वर्ष आयु में पहली शादी, १२० वर्ष आयु में दूसरी शादी करके १५२ वर्ष आयु तक गृहस्थ जीवन का आनंद लेते हुए बुढ़ापे को अपने पास फटकने नहीं दिया। इनकी मृत्यु अकस्मात हुई।

अब भारत के दीर्घायु वाले जांबाज यौद्धा जिन्होंने जीवन - पर्यन्त शौर्य, वीरता से युद्ध करते हुए शहीद हुए - म.प्र. के निमाड़ (खण्डवा) की माटी में जन्मा लोक नायक टन्ट्या मामा जो कि किशोरावस्था से ही जात-पात, ऊंच-नीच शोषण अत्याचार से संघर्ष करते हुए सूदखोर सेठ-साहूकार, जमींदार, अंग्रेजों में दहशत थी। अंग्रेजों से गोरिल्ला युद्ध लड़ते हुए, अपने सहयोगी गणपत राजपूत की गद्दारी से गिरफ्तार किये जाने के बाद शीघ्र ही गोपनीय रूप से ६५ वर्ष की आयु में फांसी से शहीद हुए। मामा के खौफ के कारण उनकी लाश को लन्दन ले जाकर दफनाया गया। मामा द्वारा अमीरों, अंग्रेजों को लूटने का आदर्श को आजादी के क्रान्तिकारियों ने अपनाया।

जीवन पर्यन्त शौर्य, वीरता के साथ युद्ध में शहीद होने वाले बाबा दीपसिंघ का जन्म सन् १६८२ में पंजाब के लाहौर जिले के गांव पोहुविंद में हुआ था। ये बड़े होने पर बाबा बदासिंघ की फौज में सम्मिलित हुए। तत्पश्चात् बाबा दीपसिंघ ने फौज की कमान लेते हुए इन्होंने अनेक युद्धों में लड़ाइयां लड़ते हुए तथा बहादुरी के कारनामें करते हुए बाबा ने देश में अपना नाम मशहूर किया। सन् १७५७ में अहमदशाह अब्दाली की मुगल सेना को बुरी तरह हराया। पिचोत्तर साल की वृद्धावस्था में सिक्खों के जत्थेदार बाबा दीपसिंघ में जवानी की रवानी और जोश भरा था। अनुभव के होश से भरे बाबा के भीमकाय शरीर में लोहे जैसी मजबूती विद्यमान थी। केश सारे श्वेत होने पर भी शरीर में ताकत और साहस की कोई कमी नहीं थी। बाबा सिक्खों की शक्तिशाली फौज के सेनापति थे। एक बार मुगल-सेना ने सिक्खों पर अचानक हमला किया, तो सिक्खों ने मुगलों को मुंहतोड़ जवाब दिया। मुगल-सेना को हराते हुए गाजर-मूली की भांति काटते हुए बाबा दीपसिंघ ने मुगलों के सेनापति का सिर-गर्दन से अलग कर दिया और आगे बढ़ते जा रहे थे, कि किसी मुगल सैनिक ने पीछे से बाबा पर तलवार के वार से सिर अलग कर दिया। बाबा का सिर अलग हो जाने के बाद भी बाबा के कदम बढ़ते जा रहे थे और हाथ से तलवार भी चल रही थी। बाबा का यह आश्चर्यजनक नजारा, उनकी जीवटता का करतब था, जो अविस्मरणीय दृश्य था।

बिहार के भोजपुर जिले के मौजा जगदीशपुर के राजा कुँअरसिंह अपने असाधारण पराक्रम तथा देशभक्ति के कारण देशवासियों द्वारा कृतज्ञतापूर्वक याद किए जाते हैं। इनका जन्म सन् १७८२ में जगदीशपुर के जमींदार साहब जादसिंह के यहां हुआ था। मूलतः ये धार, मध्यप्रदेश के परमार राजा भोज के वंशज थे जो मालवा से आकर बिहार में बस गये थे। जब सन् १८५७ में अंग्रेजों के खिलाफ अनेक राजाओं, नवाबों तथा जमींदारों ने बगावत का झण्डा उठाया और विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने का निश्चय किया तो राजा कुँअरसिंह भी उनसे आ मिले। दि. २७-०४-१८५७ को इन्होंने अपने साथियों के सहयोग से आरा (बिहार) पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार बिहार का भोजपुर जिला स्वतन्त्र हो गया। किन्तु परिस्थितियां निरन्तर अंग्रेजों का साथ दे रही थी और असंगठित विद्रोहियों की स्थायी विजय, स्वप्न सिद्ध हो रही थी। शीघ्र ही अंग्रेजों ने आरा को पुनः अपने अधिकार में ले लिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अपरिमेय पौरुष और आलौकिक वीरता के कीर्तिमान स्थापित करने वाले महान यौद्धा कुँअरसिंह जो उस समय बिहार के जगदीशपुर राज्य के राजा थे, किन्तु आज कुंवरसिंह समस्त वीर जाति के हृदय के सम्राट हैं। इन्होंने भारत के आजादी हेतु ७५ वर्ष आयु में अंग्रेजों के विरूद्ध तलवार चलाकर सिद्ध कर दिया, कि मातृभूमि की पुकार पर वृद्धों में भी जवानी लौट आती है। यौद्धा कुँअरसिंह छापामार युद्ध

(वृक्क युद्ध) गोरिल्ला युद्ध कला में पूर्णतया पारंगत थे। सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में कुँअरसिंह ने अपनी तलवार की धार से अंग्रेज सेना को गाजर-मूली की तरह मौत के घाट उतारा। इनकी चमक इतिहास के पृष्ठों में उदितमान है। वीर कुंवरसिंह के युद्ध कौशल पर वीर सावरकर ने अपने ग्रन्थ सन् १८५७ के भारतीय स्वतंत्रता समर में लिखा है सन् १८५७ के संग्राम में युद्ध-पद्धति और रण-कौशल में कुंवरसिंह की बराबरी का कोई वीर नहीं था। वीर शिवाजी के वृक्क युद्ध में महत्व को सबसे पहले कुँअरसिंह नाम आता है। हालांकि तात्या टोपे वृक्क युद्ध में विध्वंसक और विधायक दोनों पक्षों के उपयोग से सिद्धहस्त थे। शत्रु की नई सेना खड़ी करने वाला तथा अपनी सेना को नष्ट करने का कोई भी अवसर तात्या टोपे नहीं देता। किन्तु कुँअरसिंह अपने विपक्षी को ये दोनों कार्य न करने के साथ-साथ शत्रु को बुरी तरह हराकर सफाया कर देता। कुँअरसिंह की चालों को अंग्रेज सेनापति समझ नहीं पाता कभी वह उन्हें पीछे ढकेलता, कभी छकाता है, तो कभी पीछे हटता और अवसर पाकर बगल से हमला कर देता। शत्रु सेना का कटना-मरना या भाग जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहता है।

एक बार कुँअरसिंह और अंग्रेजों के बीच युद्ध में कुँअरसिंह की सेना को गंगा पार जाना था। अंग्रेज-सेना निरन्तर पीछा कर रही थी। कुँअरसिंह ने बड़ी चतुराई से यह अफवाह फैला दी कि वह बलिया के पास हाथियों पर सवार होकर अपनी सेना पार करायेगा। अंग्रेज सेनापति डगलस बहुत बड़ी सेना लेकर बलिया के पास गंगा-तट पर पहुंच कुँअरसिंह की प्रतीक्षा करता है। तो कुँअरसिंह ने बलिया से सात मिल दूर शिवराजपुर नामक स्थान पर नावों से अपनी सेना को गंगा पार कर देता है। जब डगलस को इस चकमें का पचा चला तो भागता हुआ शिवराजपुर पहुंचा। डगलस वहां तक पहुंचता है, कुँअरसिंह की पुरी सेना गंगा पार हो चुकी थी। किन्तु एक अंतिम नाव रह गयी थी। जिसमें कुँअरसिंह सवार थे। डगलस की सेना ने गोलियाँ चलाई, जो एक गोली कुँअरसिंह के बायें हाथ की कलाई के ऊपर लगी। कुँअरसिंह ने सोचा कि हाथ तो बेकार हो चुका है, गोली का जहर फैलने के कारण तुरन्त अपनी तलवार से हाथ को काट गंगा मैया को समर्पित करते हुए कहा-गंगा मैया! अपने पुत्र की अकिंचन भेंट स्वीकार कीजिये। अनेक युद्धों में अंग्रेज सेना को परास्त करने वाले कुँअरसिंह ने दिनांक २३/०४/१८५८ को अपने राज्य जगदीशपुर के राजमहल में प्रवेश किया। विजयश्री का सुख वीरपुत्र के भाग्य में अधिक न रहते हुए दिनांक २६/०४/१८५८ इस जीवट यौद्धा ने जग से विदा होकर अमरकीर्ति-गाथा छोड़ गये।

इनकी वीर गाथाएं लोक गीतों के माध्यम से आज भी भोजपुर और निकटवर्ती प्रदेशों में गायी जाती है।

चन्द बूढ़े, बड़े, भले सयाने होते हैं।
अनुभव के गहरे सागर होते हैं।।
बच्चों को शौर्य-गाथायें तो सुनाते हैं।
वीर रस के कवि-भांति ठीकरे होते हैं।।

अमेरिका के '**सानफोर्ट गेनिट**' कहते हैं कि बुढ़ापे से निराश होकर और मौत की घड़ियां गिनने के बजाय वृद्ध अपनी पाचन शक्ति को उन्नत कर नव जीवन जी सकते हैं। सानफोर्ट ने अपनी बहोत्तर वर्ष की आयु में पाचन-क्रिया को ठीक करके पुन: जीवन में तरूणाई की अंगड़ाई जगाकर दीर्घायु को प्राप्त किया। अत: उदर को रोगो का घर न बनाते हुए आनन्द का धाम बनाने हेतु अपनी क्षमतानुसार नित्य भ्रमण, दौड़, आसन, फुटबॉल, खो-खो, कबड्डी दण्ड-बैठक, कुश्ती आदि की मस्ती में बुढापे की जकड़न को छोड़ गामा, कीकड़ की अकड़ प्राप्त कर सकते हैं। ●

बोलो! तुम आज क्यों मौन हो

- डॉ लक्ष्मीनिधि
साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष: ९९३४५२१९५४

कहते-कहते थका,
थका मैं लिखते-लिखते,
लेकिन, रे पाषाण!
तनिक तुम पिघल न पाये
मुर्दों से निष्प्राण पड़े हो।

इन्कलाब करने वाले ये,
नई क्रान्ति करने वाले ये,
आज बने वे सभी बिकाऊ
भारत मां के ये सपूत अब,
नेताओं के पहलवान हैं।

कैसे हैं ये साधु-पंडित
कैसे हैं जनता के नेता,
कैसा यह देश तुम्हारा,
कैसा तेरा लोकतन्त्र है।

उजड़ रहा है बाग-बगीचा,
चारों और मचा है क्रन्दन
भूख प्यास की इस नगरी में,
नेताओं की शान बढ़ी है
जगह-जगह होता अभिनन्दन!

पापों के सरताज बने हैं, साधू-पंडित,
गुण्डों के सरताज बने हैं, नेता देखो,
हत्यारे-पापी पाखण्डी
बदल-बदल कर अपनी टोपी,
जनता को सब लूट रहे हैं।

भाग्य शिला पर बैठे-बैठे,
अश्रु बहाने वाले बोलो!
भेड़ बने नेता के पीछे,
ठहरो! अपनी आंखें खोलो,
पहले देखो! तुम कौन हो!

जय-जय कार मचाने वाले।
उन पर फूल चढ़ाने वाले,
वे ही हैं ये लोग जिन्हें हम
कहते अपना भाग्य विधाता,
भारत के ये नौजवान हैं!

इसीलिए, तो मैं कहता हूँ,
आओ मेरे पास, तुम्हें मैं,
संजय जैसी आँखें दुंगा,
दिव्य दृष्टि से जो देखोगे,
तब जानोगे

नई क्रान्ति हो, नई लहर हो,
नए गीत के, नये छन्द हो,
कहां कैद हो? कहां बन्द हो?
हे भारत की महाक्रान्ति!
बोलो! तुम आज क्यों मौन हो?

उठो! प्रकाश हो गया है

- स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती -
(वेदभिक्षु)
आर्य समाज, बिहारीपुर, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष- ९७५९५२७४५८

उदीर्ध्व जीवो असुर्न आगादम प्रागात्तम आ ज्योतिरेति।
आरै क्यन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ।। (ऋग्वेद)

शब्दार्थ - उदीर्ध्वम् = उठो, **जीवः** = जीवात्मा, **असुः + नः** = प्राण हमारा, **आगात्** = आ गया है, **आप** = परे, **प्रागात्** = चला गया है, **तमः** = अंधकार, **आ ज्योतिः एतिः** = चारों तरफ प्रकाश हो रहा है। **आरैक्** = प्रकट हुआ, **पन्थाम्** = हम पहुंचे हैं, **यत्र** = जहां, **प्रतिरन्ते** = वृद्धि होती है, **आयु** = की।

भावार्थ - उठो अपने चारों और देखो। नवजीवन हमें प्राप्त हुआ है, हमारा अज्ञान अंधकार दूर हो गया है और हम ज्ञान रूपी सूर्य के प्रकाश में खड़े हैं। प्रगति का मार्ग खुल चुका है और जहां हम दीर्घ जीवी होंगे उस पथ पर हम आ गये हैं। अब हम पुरुषार्थ द्वारा यश के भागी बनेंगे।

व्याख्यान- मनुष्य को सदा दीन-हीन विचारों का परित्याग कर देना चाहिए। आप मनुष्य है जो संसार के सब प्राणियों का सिरमौर हैं। मनुष्य से परे और सुन्दर, सशक्त, उत्तम जीवन इस सृष्टि में नहीं हैं, मनुष्य से परे कोई भाव नहीं, कोई विचार नहीं। मनुष्य और केवल मनुष्य ही दुनिया की सारी वस्तुओं और विचारों का सृष्टा है। वह असंभव को संभव बनाने वाला और प्रकृति की सम्पूर्ण शक्तियों का भविष्य में होने वाला एक मात्र अधिकारी और स्वामी है, फिर निराशा किस बात की।

आप अपने मनुष्यपन पर गर्व कीजिए और दूसरे मनुष्यों को सेवा, सहयोग दीजिए एवं उनसे प्रेम कीजिए। ऐसा करने से आपकी आत्मीयता का क्षेत्र बढ़ जाएगा और आनन्द के स्रोत खुल जायेंगे। दूसरों की उन्नति की सराहना कीजिए। भरपूर प्रशंसा कीजिए। प्रशंसा से मनुष्य की गुप्त आत्मिक और मानसिक शक्तियां विकसित होती हैं। परमावश्यक यह है कि यह सराहना का कार्यक्रम आप स्वयं अपने से ही प्रारंभ करें।

प्रत्येक आर्ष साहित्य बताता है कि आप एक शक्ति सम्पन्न दैवी विभूतियों के स्वामी हैं और आपका व्यक्तित्व अभूतपूर्व, एकमात्र अस्तित्व है। मनुष्य शक्ति का पुञ्ज है, परन्तु इस शक्ति का आदि स्रोत मनुष्य के अन्तःकरण में ही है। वहीं उसे निरन्तर प्रोत्साहित करता है, निराशा में आशा की ज्योति जगाता है, बिगड़ी को बनाता है और गिरे हुए को उठाता है। जब सब बाहरी सहायतायें टूट जाती हैं तब भी यह आन्तरिक सहायता का स्रोत भरा पूरा रहता है।

ध्यान रखो! सर्वोच्च का स्थान सर्वदा खाली रहता है, उसे भरने के लिए प्रत्येक समय उपयुक्त व्यक्ति की आवश्यकता होती है, उसे भरने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रयत्न कर सकता है।

असंख्य मनुष्य निम्न स्थिति में पड़े-पड़े किसी ऐसे व्यक्ति, संस्था और अदृश्य शक्ति की प्रतीक्षा में अपना अमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि कोई उन्हें पकड़कर उठा ले या सहारा दे। जैसे लूला-लंगड़ा व्यक्ति अपने लिए वैशाखी या डन्डे का सहारा चाहता है। वैसे ही मानसिक व बाह्य वैसाखियों की बाट जोहते हुए जीवन व्यतीत कर देते हैं। यह एक प्रमाद है, कमजोरी के कारण एक अन्धकार उन पर छाया रहता है।

हेनरी वार्ड बीचर ने कहा है, "हमें कल्पना के क्षेत्र में अधिक विहार नहीं करना चाहिए, प्रत्युत यह देखना चाहिए कि हम क्या हैं, हमारी असली शक्तियां और योग्यताएं क्या हैं। यदि आपमें आन्तरिक सामर्थ्य नहीं है आप स्वयं अपने पावों पर खड़े नहीं हो सकते, तो आखिर आपको कौन उठाने वाला है।" सफलता के द्वार की कोई निश्चित कुञ्जी नहीं है जो आपके हाथ में अनायास ही दे दी जाये, प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही इस कुञ्जी का निर्माण करना पड़ता है। कोई दूसरा हाथ पकड़कर आपके इस द्वार में प्रविष्ट नहीं कर सकेगा। आप स्वयं ही इस कुञ्जी का निर्माण कीजिए स्वयं अपनी परिस्थिति को समझिए और इन्हीं परिस्थितियों में आगे बढ़िये। प्रभावशाली व्यक्तियों, मित्रों और सम्बन्धियों की सहायता से आप सफलता के द्वार में प्रविष्ट नहीं होंगे।

एक बार लिंकन ने कहा था, 'मैं पढ़-लिखकर शक्तियां अर्जित कर रहा हूं। जब किसी ने उनसे पूछा - किसके लिए? तुम ज़ैसे दीन हीन व्यक्ति का क्या भविष्य है? पुनः लिंकन ने कहा था - मैं अमरीका का प्रेसीडेंट बनना चाहता हूं, जब तक यह उत्तर दायित्व मुझ तक आये मैं उसके लिए तैयार हो जाना चाहता हूं।

इस बात को सुनकर उनकी हितैषिणी मिसेज क्रोफर्ड हंस पड़ी थी, उन्हें यह हास्यास्पद प्रतीत हुआ कि यह गरीब बदसूरत व्यक्ति क्या कभी अमरीका का प्रेसीडेंट बन सकेगा? आप स्वयं विचार कीजिए लिंकन जैसा साधारण सा दीन व्यक्ति किसी की सिफारिश से प्रेसीडेन्ट बन सकता था? क्या उसके पास घर सम्पदा थी? नहीं! कुछ भी नहीं। उसकी सारी सम्पत्ति उसकी विकसित आत्मिक शक्ति ही थी, जिन्होंने संसार को आश्चर्य में डाल दिया था। इन्हीं महान शक्तियों के बल बूते पर लिंकन प्रेसीडेन्ट के उच्च पद पर आसीन हुआ था। जीवन आपका है चाहे इसे बनाओ या बिगाड़ो। वेद मन्त्र का आशय यही है। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रगति के द्वार खोल रखे हैं, जो चाहे वह वहां प्रवेश कर सकता है।। भाग्य के भरोसे निष्क्रिय जीवन जीने वालों को कभी सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। पुरुषार्थी, आत्मविश्वासी और उत्साही व्यक्ति ही प्रगतिमान भविष्य के प्रकाश में उन्नत जीवन जीने में समर्थ होते हैं।

संसार झुकता है, जिस भाग्य के आगे,
वह भाग्य झुकता है, पुरुषार्थ के आगे।। - शमित्योश्म

प्रिय तुम ओ३म् हो

नभ रत्न की थाली में भूमि भद्र भाव वाली में
प्रिय तुम कौन हो, प्रियतम ओ३म् हो।
लगाए जिसने सुफल फूल नमी डालों में
गंध भर दी है जिसने रूप रंग वालों में।
आम की डाली में और दुब की हरियाली में
प्रिय तुम...

कभी बादल तो कभी सूर्य निकल आया है
क्या ही सप्तरंग इन्द्रधनुष छाया है
वेगवाली में नदी मधुर नीरवाली में
प्रिय तुम....

बांधे हैं किसने वट में जड़के झूलों को
दी किसने है नम्रता लताओं फूलों को
प्रेम भिक्षा दी जिसने हृदय अंक खाली में
प्रिय तुम...
रंगे मयूर पंख तथा सरल सुमन पांखों को
दी सुकला कितनी भला हिरणियों की आंखों को
खिलती कली उड़ते अली तितली रंगवाली में
प्रिय तुम कौन हो........

-रमेशचन्द्र चौहान
२६२, पार्श्वनाथ नगर
केसरबाग रोड, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष - ९८२६०-३१३४९

पुस्तक परिचय- कैसे बची संस्कृति हमारी?

लेखक - प्रो. रामविचार एम.ए.
प्रकाशक - विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द
४४०८ नई सड़क, दिल्ली ११०००६
मूल्य - २०.०० **पृष्ठ संख्या** ५६

भारत की अस्मिता को लुटेरे लूट रहे थे। देश में अराजकता फैल गई। अन्धविश्वासों का साम्राज्य स्थापित हो गया। कत्लेआम मच गया। बहन बेटियों पर अत्याचार हो रहे थे। मुगलों व इसाईयों की तूती बोल रही थी। इसका मूल कारण अहिंसा के पोषक गो तम बुद्ध व महावीर थे। इस कारण जनता भीरू बन गई। हमारा गो रव, अस्तित्व, एकता, भारतीयता नष्ट होने लगी। मोहम्मद गो री, महमूद गजनी, मोहम्मद बिन कासिम ने मन्दिरों, धार्मिक स्थानों को लूटा और सोना, हीरे, पन्ने जवाहरात ऊंटों द्वारा अपने देश गजनी आदि ले गये। अंग्रेजों ने व्यापारी बनकर यहां का कच्चा माल इंग्लैण्ड भेजा और भारतीय कुशल कारीगरों के हाथ पैर काट दिए। इसाईयत का प्रचार प्रसार किया। सन् ७१२ से १९४७ तक देश वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता और आर्य हिन्दू जाति के पतन का कारण बनी।

हमारी संस्कृति के रक्षक वे हैं जिन्होंने समर्पण भावना से आत्मोत्सर्ग किया। हमारे आध्यात्मिक महापुरुष धर्म पर बलिदानी वीर, हमारे राज नेता, आर्य समाज के वीर सिपाही, हमारा साहित्य, गलत प्रथाओं का बहिष्कार आदि।

लघु पुस्तिका में लेखक ने सार-निष्कर्ष की बातें सामने रखी हैं। औरंगजेब के विरूद्ध शिवाजी का पूर्ण हिन्दुत्व रूप एवं आदर्शता प्रमुख रही। पाठक आदि से अनन्त तक मर्म को समझने का प्रयास करें। लेखक का साधुवाद पाठकों के लिए अमूल्य सामग्री

महात्मा देवमुनि जी वानप्रस्थी
ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज.)

संकल्पाग्नि

देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.)
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

बनकर नरवर संकल्प आग।
तू जाग जाग हे आग जाग।।

मत बन्द-मन्द हो हृदय आग।
तू नरवर की अभ्युदय आग।
हम तपे थके या सो जायें,
तू रक्षित रखना ध्येय आग।।

हो कंटक पथ या सुमन मार्ग।
तू जाग जाग हे अग्नि जाग।।१।।

जागृत स्वप्न सुनिद्रा हो।
राही की कोई मुद्रा हो।
चिन्तना रूप है अग्नि धूप,
धावक की शक्ति समग्रा हो।

हो कणिक नाग या मणिक राग।
तू जाग जाग है अग्नि जाग।।२।।

जैसे तू हमें सुलाये रे।
आनन्द ऊर्जा लाये रे।
सद्धर्म ध्येय के लिए अग्नि,
वैसे तू हमें उठाये रे।

देत्याग याग।
जू जाग जाग रे अग्नि जाग।।३।।

ओं अग्ने त्वाँ सुजागृहि क्य, सुमन्दिषोमहि।
रक्षाणोऽअप्र युच्छन् प्रबुधेनः पुनस्कृधि।। यजु.४.१४

आकाश और समय

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधारा में विज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान था। उनके समय तक यह माना जाता था कि वेदों में ज्ञान, कर्म उपासना ही मुख्य विषय है परन्तु उन्होंने लिखा कि वेदों के अवयव रूप विषय तो अनेक हैं परन्तु उनमें से चार मुख्य हैं - (१) एक विज्ञान अर्थात् सब पदार्थों का यथार्थ जानना, (२) दूसरा कर्म (३) तीसरा उपासना, (४) चौथा ज्ञान है विज्ञान उसको कहते हैं जो कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनों से यथावत उपयोग लेना इससे यह विषय इन चारों में भी प्रधान है।[१]

अब हम उनके द्वारा किये गये वेद भाष्य के आधार पर यह जानने का प्रयत्न करेंगे कि आकाश एवं समय के विषय में वेद एवं विज्ञान में कितनी समरूपता है। ऋग्वेद मण्डल। सूक्त १६८ ऋचा ६ में कहा गया है -

क स्विदस्य रज्सो महस्यरं कावरं भकतो यस्मिन्नाय।
यच्चावयथ विथुरेल संहितं व्याद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम्।

भावार्थ- जिसमें यह भूगोल आदि जगत् जाता आता कम्पता उसी को आकाश के समान कारण जानो, जिसमें ये लोक उत्पन्न होते भ्रमते और प्रलय हो जाते हैं वह परम उत्कृष्ट निमित्त कारण ब्रह्म है।

वैशेषिक दर्शन में कहा गया है **तं आकाशे न विद्यते।**[२]

रस, गन्ध, स्पर्श गुण आकाश में नहीं होते।

फिर कहते हैं - **निष्क्रमणं प्रवेशन मित्याकाशस्य लिङ्गम्।**[३]

निकलना, अन्दर से बाहर आना, प्रवेश करना, बाहर से भीतर जाना, यह इस प्रकार की क्रिया का संभव होना आकाश का, आकाश के अस्तित्व का चिह्न है।

स्वामी दयानन्द ने आकाश को शून्य माना है। वे लिखते हैं - आकाश शून्य अदृश्य अवकाश बिन्दु को कहते हैं। आकाश कुछ होता नहीं केवल भासता है। उस परमेश्वर की प्रकृति से आकाश अर्थात् जो कारण रूप द्रव्य फैल रहा था, उसको इकट्ठा करने से आकाश उत्पन्न होता है।[४]

वैज्ञानिक दृष्टि से आकाश का वर्णन इस प्रकार है - आकाश रिक्त है। उसकी उत्पत्ति क्षेत्र सिद्धान्त के अनुसार होती है। जहां कहीं भी वजनदार वस्तु होगी वहां पर गुरुत्वाकर्षण बल भी होगा और यह बल उस वस्तु के आस-पास के घुमाव को बदल देगा और आकाश का आभास देगा। इस प्रकार पदार्थ और आकाश कभी अलग नहीं होने वाले तथा सम्पूर्ण के अन्तर्निर्भर भाग हैं।[५]

इस विवरण से यह सिद्ध होता है कि आकाश के विषय में वेद एवं विज्ञान में पर्याप्त समरूपता है।

अब हम समय पर चिन्तन करते हैं। वैदिक साहित्य में काल एवं समय में अन्तर बताया गया है। काल सतत् गतिशील रहता है। उसे मापा नहीं जा सकता है उसके विभाग नहीं होते हैं। जबकि समय को सूर्योदय से मापा जाता है। विज्ञान में सूक्ष्मतम के भाग में क्वान्टम सिद्धांत तथा स्थूल के माप में सापेक्षता का नियम काम करता है। वेदों में दोनों को स्वीकारा गया है।

न्यूटन आकाश-समय निरन्तरता की धारणा को अस्वीकार करता था। परन्तु १९०५ ई. में आइन्स्टीन ने बतलाया कि आकाश-समय की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है ये एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

The theory of Relativity put an end to Idea of absolute time.[6] we must accept that time is not complitely seprate from and independant of space.[7]

इसी प्रकार की विचारधारा का वेद में वर्णन हुआ है।

पूर्वे अर्द्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनिज्यकृत प्रकेतुम।
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओमा प्रणन्ती पित्रोरूपस्था।

-ऋ १.१२४.५

भावार्थ - प्रभात वेला से प्रसिद्ध हुआ सूर्यमण्डल का प्रकाश भूगोल के आधे भाग में सब कहीं उजाला करता है और दूसरे भाग में रात्रि होती है। उस दिन रात्रि के बीच में प्रातः समय की वेला विराजमान हैं। ऐसे निरन्तर रात्रि प्रभात वेला और दिन क्रम से विद्यमान है। इससे ज्ञात हुआ कि जितना पृथ्वी का प्रदेश सूर्यमण्डल के आगे होता उतने में दिन जितना पीछे होता जाता उतने में रात्रि होती तथा सायं और प्रातः काल की सन्धि में उषा होती है इसी उक्त प्रकार से लोकों के घूमने के द्वारा ये सायं प्रातः काल भी घूमते से दिखाई देते हैं।[८]

इससे एक बात और सिद्ध होती है चूंकि पृथ्वी अपनी कीली पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है अतः इसका आधा भाग एक साथ सूर्य के सामने नहीं आता है। वरन् धीरे-धीरे सामने आता है इसलिए आधे भाग में भी सर्वत्र एक समय नहीं हो सकता है। इसे एक अक्षांस से दूसरे अक्षांस तक घूमने में चार मिनट लगते हैं। अतः दोनों अक्षांसों में चार मिनट का अन्तर रहेगा। इसका अर्थ यह भी हुआ कि पृथ्वी पर सब जगह एक ही समय कभी नहीं होगा।

Frit jof capara कहता है - सापेक्षतावाद के सिद्धांत के बाद -

सम्पूर्ण सन्सार के लिए कोई निश्चित समय बता देना अब संभव नहीं है।[९] वेद इस विचार धारा को बढाते हुए कहता है -

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते।
हरिरन्यस्यां भवतिस्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यो दद्दशे। सुवर्चा।

-ऋ.१.९५.१

भावार्थ - मनुष्यों को जानना चाहिए कि दिन रात कभी निवृत्त नहीं होते किन्तु सर्वदा बने रहते हैं अर्थात् एक देश में नहीं तो दूसरे देश में होते हैं।[१०] विज्ञान की मान्यता है कि काल का प्रवाह सदैव चलता रहता है वेद में इसका भी समर्थन निम्न मन्त्र कर रहा है -

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मि सहस्राक्षो अजरो भूरिरेता।
तमारोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।

-अथर्व-१९.५३.३

भावार्थ- महाबलवान काल सर्वत्र व्यापी और अतिशीघ्र गामी शुक्ल,

नील, पीत, हरित, कपिश, रक्तवर्ण, बेंगनी किरणों वाले सूर्य के समान प्रकाशमान है, निरन्तर गतिमान है। इस काल को बुद्धिमान लोग सब अवस्थाओं में घोड़े के समान सहायक जानकर अपना कर्त्तव्य सिद्ध करते हैं।[११] काल की सत्ता सदैव रहती है।[१२]

इसी भावना को अथर्ववेद १९.५३.४ का यह मन्त्र व्यक्त कर रहा है -

स एव भुवनान्या भरत स एव सं भुवनानि पर्यत् ।
पिता सन्न भवत पुत्र एषां तस्माद वे नान्यत् पदमस्तितेज।

भावार्थ - काल सब सत्ताओं में व्यापक है। काल ही सृष्टि का पिता एवं पुत्र है। पूर्व वर्तमान और आगामी सृष्टि काल से ही है। नित्य होने से वही पहले और वही पीछे है, इसलिए संसार में वह बड़ा प्रतापी है। इसी भावना को अगले मन्त्र में इस प्रकार बतलाया है - **काल ने इस आकाश को काल ने इन पृथ्वीयों को उत्पन्न किया है। काल में ही व्यतीत हुआ, होने वाला और वर्तमान विशेष करके ठहरता है।**

विज्ञान की मान्यता है कि किसी भी कर्म की सम्पन्नता बिना आकाश और समय के नहीं हो सकती। यही विचार वेद में व्यक्त किया गया है-

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं वत्सपृञ्चान सदने गोमिरद्भिः।
कविबुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव।

भावार्थ - मनुष्यों को जानना चाहिए कि काल के बिना कार्य स्वरूप उत्पन्न होकर और नष्ट हो जाय यह होता ही नहीं और न ब्रह्मचर्य आदि उत्तम समय के सेवन बिना शास्त्र बोध कराने वाली बुद्धि होती है। इस कारण काल के परम सूक्ष्म स्वरूप को जानकर थोड़ा भी समय व्यर्थ न खोवे, किन्तु आलस्य छोड़कर समय के अनुकूल व्यवहार और परमार्थ काम का सदा अनुष्ठान करे।[१३]

इसी प्रकार समय के परिवर्तन के बिना ऋतुएं भी नहीं बनती।

त्रीणिजाना परि भूषनयस्य समुद्र एकं दिव्ये कमप्सु।
पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामृतून् प्रशासाद्वि दधावनुष्टु। ऋ.१.९५.३

भावार्थ- दिन रात आदि समय के अङ्गों के बर्ताव के बिना भूत, भविष्यत् और वर्तमान कालों की संभावना भी नहीं हो सकती और न इनके बिना किसी ऋतु के होने की सम्भावना है जो सूर्य और अन्तरिक्ष में ठहरे हुए पवन की गति से समय के अवयव अर्थात् दिन-रात्रि प्रसिद्ध हैं -

उन सबको जानकर सब मनुष्यों को चाहिए कि व्यवहार सिद्धि करें।[१४]

विज्ञान का यह मानना है कि समय भारी वस्तु के पास धीमा चलने लगता है। स्टीफन डब्ल्यू हाकिङ्ग इस विषय में लिखता है -

another prediction of general relativity is that time should appear to run slower near a massive body like the earth. this prediction was tested in 1962 A.D. using a pair of very accurate clocks monnted at the top and bottom of a water tower , the clock at the bottom which was nearer the earth was found to run slawer an exact argu ment with general relativity.[15]

इसी प्रकार तेज गति से चलने वाले वाहन में काल धीमे चलने लगता है स्टीफन डब्ल्यू हाकिङ्ग कहता है -

the theoryof relativity gets rid of absolute time, considera a pair of twins . suppose that one twin goes to live on the top of a mountain while the other stays at the sea level. the first twin world age faster than the second . thns if they meet again one would be older than the other.[16]

again he writes- in the theory of relativity there is no unique absolute time but imtead each indsividual has his own personal measure of time that depends on where he is and how he is moving.[17]

वैदिक वाङ्मय भी इस विचार का समर्थन करता है। मनुस्मृति में कहा गया है कि पितृगणों का एक दिन रात्रि हमारे एक मास के तुल्य होता है। एक पखवाड़े का उनका दिन और एक पखवाड़े के तुल्य उनकी रात्रि होती है। इसी प्रकार देवों के दिन के विषय में मनुस्मृति १.६७ में कहा गया है -

देवे रात्रयहनी वर्ष प्रविभागस्तयोः पुनः।
अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्याद्दक्षिणायनम्।।

मनुष्यों का एक वर्ष एक दैवी दिन-रात होता है। उन दैवी दिन रात का भी फिर विभाग है, उनमें सूर्य की भूमध्य रेखा के उत्तर की ओर स्थिति अर्थात् उत्तरायण दैवी दिन कहलाता है और सूर्य की दक्षिण की ओर स्थिति अर्थात् दक्षिणायन दैवी रात कहलाती है।

यदेतत्परि संख्यात मादादेव चतुर्युगम्।
एतद् द्वादशसाहस्त्रं देवानां युगमुच्यते। मनुः १.७१

जो चार युगो का काल परिमाण है वह बारह हजार दिव्य वर्षों का काल (कलयुग १२०० दिव्य वर्ष, द्वापर २४०० दिव्य वर्ष, त्रेतायुग ३६०० दिव्य वर्ष तथा सतयुग ४८०० दिव्य वर्ष) देवताओं का एक युग कहलाता है।

दैविकान्त युगानां तु सहस्त्रं परिसंख्यया।
ब्राह्ममेक महर्ज्ञेयं तावती रात्रिमेव च। मनुः

दैव युगो को हजार से गुणा करने पर जो काल परिमाण निकलता है ७२०००×१०००=१२०००००० दिव्य वर्ष वह ब्रह्मा का दिन और उतने ही दिव्य वर्षों की उसकी एक रात होती है।

(अर्थात् ब्रह्मा का एक दिन रात २४०००००० दिव्य वर्ष या २४००००००×३६० = ८६४०००००००० मानव वर्ष का होता है।

ब्रह्मा की कुल आयु ऐसे १०० वर्ष अर्थात् ८६४००००००००×१०० = ८६४०००००००००० वर्ष होती है।

प्रत्येक प्राणी का समय का माप भी अलग-अलग होता है।

यह भी वैदिक पुरातन मान्यता है। आज भी जब किसी भी व्यक्ति की किसी भी आयु में मृत्यु होती है तब यही कहा जाता है कि उसके सौ वर्ष पूर्ण हो गये क्योंकि मनुष्य की आयु १०० वर्ष मानी गई है। ऋग्वेद १.९५.८ ऋचा के अनुसार काल की परिभाषा होगी कि किसी भी ध्वन्सनात्मक अथवा निर्माणात्मक कार्य को प्रारंभ करके एक निश्चित स्थिति तक पहुंचाने में हमें जो प्रतीक्षा करनी पड़ती है उसे समय कहते है। यही परिभाषा हेननवर्ग ने दी है।

काल की दूसरी परिभाषा वैशेषिक दर्शन में दी गई है -

अपरस्मिन्न पर युग पच्चिर क्षिप्रमितिकाल लिङ्गानि।

आयु की दृष्टि से छोटा- बड़ा, नया-पुराना आयु की दृष्टि से समवयस्क, पहले-पीछे जिससे ज्ञात हो उसे समय कहते हैं।

सामान्यतया अधिकांश मतों की मान्यता है कि पृथ्वी नहीं घूमती है वरन् सूर्य उसकी परिक्रमा करता है। विज्ञान ने इसे असत्य सिद्ध कर दिया है। आश्चर्यजनक बात यह है कि वेद का चिन्तन इस विषय में भी विज्ञान के अनुरूप है।

न दक्षिणा विचिकितेन सब्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा।
पाक्या चिद्वसवो धीर्या चिद्युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम्। [११]

जो **(आदित्याः)** सूर्य लोक **(न)** नहीं **(दक्षिणा)** दक्षिण **(न)** न **(सव्या)** उत्तर **(न)** न **(प्राचीनम्)** पूर्व **(उत)** और **(न)** न **(पश्चा)** पश्चिम दिशा में भ्रमते हैं। **(चित्)** और जिनके आधार में **(वसवः)** पृथिवी आदि वसु **(चित्)** भी बसते हैं जिनको **(धीर्या)** धीर विद्वानों से श्रेष्ठजन **(विचिकिते)** विशेषकर जानता है उनका आश्रय कर **(पुष्मानीतः)** सुम लोगो से प्राप्त हुआ मैं **(अभयम्)** भयरहित **(ज्योतिः)** प्रकाश रूप ज्ञान को **(अश्याम्)** प्राप्त हो ऊं।

भावार्थ- हे मनुष्यों! जो सूर्य सब दिशाओं में नहीं भ्रमते जिनके आधार से पृथ्वी आदि लोक भ्रमते हैं उनके विज्ञान पूर्वक परमात्मा को जानकर अभय रूप पद को प्राप्त होओ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ऋग्वेद १.९५.४. ऋचा के भावार्थ में लिखते हैं समय को कोई विद्वान ही जान सकता है सब कोई नहीं। अब हम केवल सापेक्षता सिद्धान्त के समर्थन में एक वेद मन्त्र देकर विषय को विराम देना चाहेंगे।

ये अर्वाञ्चस्तां उ परा च आहुर्ये पराञ्चस्तां उ अर्वाच आहु।
इन्द्रश्चवा चक्रथुः सोमतानि घुट न युक्ता रजसो वहन्ति।

भावार्थ- हे मनुष्यों! यहां जो नीचे-ऊपर, परे-उरे, मोटे-सूक्ष्म, छुटाई-बढ़ाई, के व्यवहार हैं वे सापेक्ष हैं एक की अपेक्षा से यह इससे ऊंचा जो कहा जाता है कि वही दोनों कथनों को प्राप्त होता है जो इससे परे है वही और से नीचे है जो इससे छोटा है वह और से बड़ा गुरु है यह तुम जानो। यहां कोई वस्तु अपेक्षा रहित नहीं है और न निराधार ही है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान विज्ञान और वेद विज्ञान में कहीं कोई अन्तर नहीं है। आवश्यकता इस बात की है इक हम वेद का गहन अध्ययन कर उसमें वर्णित विज्ञान को खोज कर वैज्ञानिकों के सम्मुख प्रस्तुत करें। इति।●

काल = समय की महिमा

- मृदुला अग्रवाल -
१९ सी, सरतबोस रोड, कोलकाता-
चलभाष- ९८३६८४१०५१

''**काल**'' = ''**समय**'' प्रकृति का अमूल्य उपहार है। काल का चक्र सर्वदा गतिशील रहता है। मनुष्य- जीवन का प्रत्येक क्षण अत्युत्तम है, अनमोल है, कीमती है। प्रत्येक कार्यक्रम का जीवन में एक निश्चित समय होना चाहिए। घड़ी की सुइयां भी समय ही तो निर्धारित करती हैं। बीता हुआ समय दुबारा लौटकर नहीं आता। प्रभु ने प्रत्येक प्राणी के जीने का समय पहले से ही निश्चित कर रखा है। इसलिए मनुष्य को अपना कर्त्तव्य समझकर प्रत्येक कार्य को समय पर सम्पन्न करना चाहिए।

''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करोगे कब।'' - संत कबीर

''**काल**'' व ''**समय**'' को अनुशासित करने से चरित्र को महान बनाने में विशेष सहायता प्राप्त होती है। उसे अपने जीवन में नियोजित करने से ही हम उन्नति के शिखर पर पहुंच पाते हैं। हर व्यक्ति को चिन्ता करने में समय नष्ट नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति काल को स्वयं नष्ट करते हैं, वे ही अपने जीवन में पछताते हैं - ''**अब पछतात होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत,**'' काल = समय या समुद्र की लहरें कभी भी किसी की प्रतिक्षा नहीं करती - वे अपने ही धुन में आगे बढ़ते रहते हैं।

''कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।''
अथर्ववेद, काण्ड १९, सूक्त-५३, मन्त्र १

''**काल**'' व ''**समय**'' का घोड़ा विश्व के रथ को चला रहा है। सात प्रकार की शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, चित्र वर्ण किरणों वाले सूर्य के समान प्रकाशमान, सहस्त्रों नेत्रों वाला, बुढ़ान होने वाला, महा बलवान काल व समयरूपी घोड़ा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में निष्पक्ष घूम रहा है। ज्ञानवान् बुद्धिमान लोग अपने पांडित्य से, लियाकत से उस पर चढ़कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति भी कर लेते हैं और बाकी सब प्राणी उसके पहिये से ही लिपटकर रह जाते हैं।

सात प्राण, सात= तीन काल एवं चार दिशाएं, सात शिक्षाएं, सात भूमि, अनगिनित सूर्य, पृथिवी, एवं प्राणी सब ''काल'' से भयभीत हैं। जो विद्वान् है वे अपनी विद्वता ''**समय**'' को जीत लेते हैं और जो मूर्ख हैं उनको ''**समय**'' जीत लेता है। ''**काल**'' = ''**समय**'' के उत्तम उपयोग या व्यवहार से मनुष्य ब्रह्मचर्य के साथ श्रेष्ठ कर्म और वेदाध्ययन आदि करते हैं और प्रजापालक होते हैं।

यह जगत् ''**काल**'' से ही उत्पन्न होकर ''**काल**'' में ही दृढ़ प्रतिष्ठित है। वही बढ़ता हुआ अन्न होकर सबसे ऊंचे ठहरे हुए मनुष्य को पालता है। ''**काल**'' व ''**समय**'' के सुप्रयोग से धर्मात्मा लोग सम्पत्ति एवं सफलता के साथ सद्गति को प्राप्त होते हैं। ''**काल**'' सब स्थानों में परमात्मा के सामर्थ्य के बीच विद्यमान है। उसकी महिमा को बुद्धिवंत लोग जानते हैं।

सृष्टि, स्थिति, प्रलय तीनों ईश्वरीय कार्यों में ''**काल**'' ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रलय के पीछे, सृष्टि के आदि में ''**काल**'' के ही प्रभाव से अजन्मा परमात्मा अपने गुणों और

अद्‌भुत रचनाओं को उत्पन्न कर प्रसिद्ध होता है। "**काल**" के प्रभाव से ही आगे पीछे की सृष्टि एवं वेदों का प्रादुर्भाव होता है। "काल" ही सृष्टि का पिता एवं पुत्र है। "**समय**" व "**काल**" के कारण वायु, पृथिवी, आकाश आदि के परमाणु संयोग पाकर साकार होकर संसार का उपकार करते हैं। "काल" से ही यजुर्वेद (सत्कर्मों का ज्ञान) उत्पन्न हुआ है।

यजुर्वेद, अध्याय, २७, मन्त्र-४५ के अनुसार जो आप्त मनुष्य है, विद्वान् एवं जिज्ञासु पुरुष है वे व्यर्थ "काल" नहीं खोते। "संवत्सर" के तुल्य सुन्दर नियमों से वर्त्तते हुए कर्त्तव्य कर्मों को करते हैं, "**परिवत्सर**"- त्याज्य वर्ण के समान दुराचरण आदि छोड़ने योग्य कर्मों को छोड़ते हैं, '**वत्सर**' वर्ष के समान प्रभात काल, दिन-रात, शुक्ल-कृष्ण पक्ष, १२ महीने, वसन्तादि ऋतु सब सुन्दर प्रकार से व्यतीत करते हैं। इसलिए उत्तम गति के अर्थ प्रयत्न कर अच्छे मार्ग से चल शुभ गुणों और सुखों का विस्तार करते हैं। सुन्दर लक्षणों वाली वाणी के संहित धर्म ग्रहण और अधर्म के त्याग में दृढ़ उत्साही होते हैं।

१२ महीनों के नाम इस प्रकार है:-

मधवे स्वाहा, माधवाय स्वाहा, शुक्राय स्वाहा, शुचये स्वाहा, नमसे स्वाहा, नभस्याय स्वाहेषाय स्वर्होजाय स्वाहा, सहसे स्वाहा, सहस्याय स्वाहा, तपसे स्वाहा, तपस्याय स्वाहा हसस्पतये स्वाहा।

- यजुर्वेद, अध्याय-१२, मन्त्र-३१

हे मनुष्यों! आप लोग "मधवे" मीठपन आदि को उत्पन्न करने हारे "**चैत्र**" के लिये यज्ञक्रिया का अनुष्ठान करो। इसी प्रकार "**माधवाय**" (मधुरपन) "**वैशाख**", "**शुक्राय**" (जल आदि को पवन के वेग से निर्मल करना) ज्येष्ठ, शुचये (वर्षा के योग से भूमि को पवित्र करना) = "**आषाढ़**", "**नभसे**" (सघन धन बादलों की घनघोर सुनवाने वाले) = "**श्रावण**", "**नभस्याय**" (आकाश में वर्षा से प्रसिद्ध) = "**भादों**", "**इषाय**" (अन्न उत्पन्न कराने वाले) = "**क्वांर**", "**उर्जाय**" (बलयुक्त अन्न बाजरा आदि को पकाने वाले) = "**क्रार्तिक**", "**सहसे**" (बल देने वाले) = "**अगहन**", "**सहस्याय**" (बल देने वाले) = "**पौष**", "**तपसे**" (ऋतु बदलने से धीरे-धीरे शीत की निवृत्ति और जीवों के शरीरों में गरमी की प्रवृत्ति कराने वाले) = "**माघ**", "**तपस्याय**" (जीवों के शरीरों में गर्मी की प्रवृत्ति कराने वाले) = "**फाल्गुन**", "**अंहस**" (पालने वाले के लिये) = "**मलमास**"।

कांतिमय "**काल**" = "**समय**" प्रकाश स्तम्भ की तरह चमकता है। वह दुष्टों का संहार करके व्यवहार-कुशल मनुष्यों का समर्थन करता है। "**काल**" सब प्राणियों को जीवित रखने की कोशिश करता है क्योंकि वह स्वयं उनमें व्याप्त रहता है। उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं है, इसीलिए वह दिव्य-पदार्थ व "**देवता**" कहलाता है। "**काल**" के उत्तम उपयोग से मन और प्राण अर्थात् सब इन्द्रियों का स्वास्थ्य एवं यश बढ़ता है, तभी सब प्राणी सुख पाते हैं।

काल में ही परमात्मा के नियम से भूत और भविष्य निहित है।

"कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः।
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति।।"

- अथर्ववेद, काण्ड-१९, सूक्त-५३, मन्त्र-६

अर्थात् "काल" (समय) ने ऐश्वर्य को उत्पन्न किया है, काल में सूर्य तपता है, काल में ही सब सत्तायें हैं, काल में आंख विविध प्रकार देखती है। "काल" के सादर निरन्तर सेवन से मनुष्य ज्ञानी ऋषि होकर और सब व्यवहारों तथा समाजों में प्रतिष्ठा पाकर, परम गति को प्राप्त कर आनन्द भोगते हैं।●

पृष्ठ ८ का शेष भाग

सम्पादकीय का शेष

हिन्दुस्तान-पाकिस्तान-बांग्लादेश एक साथ स्वतंत्र होकर साथ-साथ चले और आज हिन्दुस्तान कहां खड़ा है और ये कहां खड़े हैं। विचारणीय है।

एक बात और विचार करने की है कि तुम इस संसार जहान को बनाने वाली परम शक्ति जो तुम्हारे शब्दों में खुदा के खासमखास बन्दे हो और इस भूमि पर उत्पन्न यहां का मूल निवासी '**काफिर**' अर्थात् उस परम सत्ता को नहीं मानने वाला है तो फिर एक हजार सालों तक लूटने-पिटने और गुलाम रहने तथा बंटने के बाद भी यह तथाकथित काफिर आबाद क्यों हैं? और लूटने वाले, दो देश तोहफे में लेने वाले, गुलामी काल में अंग्रेजों और स्वतन्त्रता के पश्चात् कांग्रेस, बसपा, सपा आदि के द्वारा खूब रहमोकरण किए जाने के बाद भी तुम बदहाल क्यों हो? क्या तुम्हारा खुदा न्यायकारी नहीं है, जो काफिरों पर अपनी रहमत बरसा रहा है और तुम्हे जीते-जी जहन्नुम का दारोमदुःख दे रहा है। इसी प्रकार भारत का मुस्लिम सोचे कि वह भारत को इस्लामिक राष्ट्र बना देगा, उसका यह स्वप्न कभी पूरा नहीं होने वाला, क्योंकि लगभग ८०० वर्ष उनके आका हाथ में तलवार ले खून की नदिया बहाने के बाद भी यह स्वप्न पूरा नहीं कर पाये तो अब भारत जैसी महाशक्ति से टकराने वालों का क्या अंजाम होगा सोच ही लेना। और मुस्लिम यह सोचे की हम हिन्दुस्तान में रहकर हिन्दुओं से बैर मोल लेकर खुशहाल रह पायेंगे। यह सम्भव ही नहीं है। खुशहाल रहना है तो मिलकर हम बनकर रहना होगा। अतः जाग जाओ और हममें मिलकर हम बन जाओ।●

पुस्तक परिचय - शान्ति - मन्त्र

लेखक-डॉ. पूर्णसिंह डबास
प्रकाशक - विजयकुमार गोविन्द राम हासानन्द
४४०८ नई सड़क दिल्ली ११०००६
मूल्य १५.०० **पृष्ठ संख्या**-४०

स्वाध्याय एवं ईश्वर स्मरण के लिए '**शान्ति- मन्त्र**' बहुत उपयोगी है। हम प्रतिदिन इस मन्त्र को यज्ञ की पूर्णाहुति पर बोलते हैं। इसका भाव, अर्थ संस्कृत से हिन्दी भाषा समझने से मालूम होता है कि शान्ति अशान्ति को दूर करती है। शान्ति शब्द के अनेक अर्थों का विवेचन लेखक ने किया है - प्रशमन, निराकरण, धैर्य, प्रशान्तता, निःशब्दता, चुप्पी, अमन चैन, विश्राम, वैर का निरोध, विराम निवृत्ति, आवेश का अभाव, सांत्वना, ढाढस, उचित, तालमेल भूख की तृप्ति, प्रायश्चित अनुष्ठान, सौभाग्य, बधाई, आशीर्वाद कलंक से मुक्ति आदि। लेखक ने अथक परिश्रम से सम्पूर्ण मन्त्र की व्याख्या सारगर्भित रूप में की है। लघु पुस्तिका में सार तत्व भरा है। पाठकों के लिए अमूल्य सामग्री है। पर्यावरण के संदर्भ में विस्तृत व्याख्या है। युग व समय की पुकार के साथ इसका अत्यन्त महत्व है। अतः अपेक्षा है कि एक बार अवश्य पठन किया जाय। आत्मकल्याण के साथ सभी का कल्याण हो इसी उच्च भावना के साथ पठन योग्य।

- **महात्मा देवमुनि वानप्रस्थी**, ऋषि उद्यान, अजमेर (राज.)

स्वामी श्रद्धानन्द और शिक्षा व्यवस्था

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उस राष्ट्र के भविष्य के निर्माण का साधन होती है। राष्ट्र की मजबूत बुलंद इमारत जिन इंटों को जोड़कर बनाने की परिकल्पना की जाती है। उन्हीं ईंटों के निर्माण की भट्टी उस राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था होती है। इसे यदि और अधिक स्पष्ट करें तो राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उस राष्ट्र के भविष्य के सभ्य नागरिक अर्थात् जो आज के विद्यार्थी हैं और प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उन्हीं पर निर्भर करता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या हमने अपने राष्ट्र के उन्नत भविष्य की परिकल्पना करके राष्ट्र निर्माण की मूल इकाई अर्थात् सभ्य नागरिकों के निर्माण हेतु उचित शिक्षा व्यवस्था का चयन किया है, क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली सभ्य सुसंस्कृत संस्कारवान सुशील नागरिकों के निर्माण में समर्थ है।

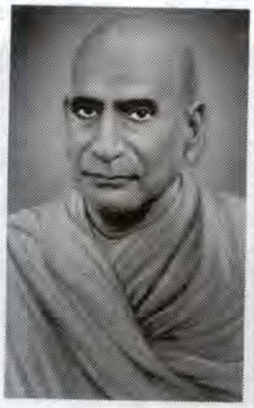

इस यक्ष प्रश्न के उत्तर को खोजने के लिए हम स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय अपने राष्ट्र में उपलब्ध शिक्षा प्रणालियों पर दृष्टिपात करते हुए चिंतन करते हैं। हमारे राष्ट्र की प्राचीनतम सनातन पुरातन शिक्षा प्रणाली गुरुकुलीय शिक्षा व्यस्था थी जिसकी परिकल्पना क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्ष पद्धति के रूप में पुनः की थी। महर्षि दयानन्द के आर्ष पद्धति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के स्वप्न को मूर्त रूप देव दयानन्द के मानस पुत्र के नाम से विख्यात स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलों की स्थापना के रूप में दिया। इन गुरुकुलों की स्थापना में स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सर्वस्व आहूत कर दिया और अपनी समस्त संपत्ति उदाहरण बनकर दान देते हुए गुरुकुलों की स्थापना की। इतना ही नहीं अपितु स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रथम विद्यार्थियों के रूप में अपने पुत्रों को इस कठिन तपस्या की दिनश्चर्या वाली शिक्षा पद्धति में डाला। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में ब्रह्मचारी विद्यार्थी अपने माता-पिता के लाड़-प्यार से अलग आचार्य के निर्देशन में रहते हुए विद्या का अर्जन और संस्कार प्राप्त करता था। हम कह सकते हैं कि आचार्य विद्यार्थी को संस्कार देकर एक नया जन्म प्रदान करता था।

दूसरी शिक्षा प्रणाली त्यागी तपस्वी श्वेत वस्त्रधारी सन्यासी महात्मा हंसराज द्वारा प्राचीन और नवीन का मिश्रण करके एक आंदोलन के रूप में स्थापित की गई दयानन्द एंग्लो वैदिक (डी.ए.वी.) की शिक्षा व्यवस्था थी। तीसरी शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले की वह शिक्षा व्यवस्था थी जिसे लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में यह उद्घोष करके उस समय ब्रिटेन की कॉलोनी बने गुलाम देश पर यह कहकर थोपा था कि इस शिक्षा व्यवस्था से मैं इस देश को सदा सर्वदा के लिए मानसिक रूप से गुलाम बना दूंगा। मैकाले की यह शिक्षा व्यवस्था हमारे राष्ट्र के भावी निर्माण के लिए जिम्मेदार विद्यार्थियों को उनकी महान सनातन पुरातन वैदिक संस्कृति की जड़ों से काटने की एक सोची समझी साजिश थी। कोई भी वटवृक्ष कितना बड़ा घना व विशाल हो लेकिन जब अपनी जड़ों से कट जाता है वह अन्ततः संस्कृति संस्कारों के खाद पानी के अभाव में सूखकर ठूंठ बनकर गिर पड़ता है और ऐसे में उसे कमजोर हुए वृक्ष में भ्रष्टाचार अनैतिकता की दीमक उसे अन्दर ही अन्दर खोखला कर देती है। पाश्चात्य भौतिकवाद, भोगवाद अन्दर से खोखले हुए वृक्ष को धराशायी कर देती है।

लेकिन शायद ये देश का दुर्भाग्य ही रहा कि देश की स्वतंत्रता के समय के हमारे देश के नेताओं, नीति नियंताओं ने शायद अपनी मानसिक गुलामी के कारण हमारे देश के लिए दासता की परिचायक मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को हमारे लिए चुना। इस शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत हम डॉक्टर, मैनेजर क्लर्क आदि तो तैयार कर सकते हैं लेकिन उन्हें संस्कार देकर एक अच्छा मनुष्य बनाने की कोई विधि मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में नहीं है शायद यही हमारे समाज के निरन्तर पतनोन्मुख अधोगति का प्रमुख कारण है।

आज भी यदि हम पुनः अपनी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति की जड़ों से जुड़कर अपने बच्चों को संस्कार देते हुए भविष्य का एक सभ्य, राष्ट्र से प्रेम करने वाला नागरिक बनाना चाहते हैं तो हमें पुनः स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को अपनाना होगा। कम से कम शिक्षाक तैयार करने के लिए जिन पर भविष्य के नागरिकों के निर्माण का विद्यार्थियों को संस्कार देकर तैयार करने का महत्वपूर्ण गुरुत्तर दायित्व है वह शिक्षक तो अवश्य ही गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की भट्टी में तपकर निकलें हो। आम विद्यार्थियों के लिए महात्मा हंसराज द्वारा संचालित प्राचीन और नवीन के मिश्रण से तैयार डी.ए.वी. की शिक्षा प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा पुनर्स्थापित आर्ष पद्धति की गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली है। यह एतिहासिक तथ्यों से सिद्ध हो चुका है। क्योंकि जब इतिहास में प्रथम बार जब गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को भंग करते हुए महाभारत काल में महाराजा धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों के प्रेम में अंधे होकर गुरु द्रोण को अपने राज्य के अधीन रहकर कौरवों को शिक्षा देने के लिए विवश किया जिसके कारण दुर्योधन आदि कौरव उद्दंड हो गए क्योंकि उनके मन में सदैव यह भाव रहा कि हमारे शिक्षक तो हमारे पिता के वेतनभोगी वित्तपोषित कर्मचारी हैं और यह एक महत्वपूर्ण कारक महाभारत के युद्ध का बना।

अतः यदि हम उन्नत समृद्ध गो रवशाली मजबूत राष्ट्र की बुलन्द इमारत का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें शिक्षा व्यवस्था के उन खांचों में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा जो इस राष्ट्र की बुलन्द इमारत में प्रयोग होने वाली ईंटों अर्थात विद्यार्थियों का निर्माण कर सके।●

महर्षि दयानन्द को विस्मृत न करें

- महात्मा चैतन्यमुनि -
महादेव, सुन्दरनगर
जिला-मण्डी , हिमाचल प्रदेश
चलभाष- ९४१८०५३०९२

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस धरा पर जिस समय अवतरित हुए उस समय चारों और पाखण्ड और आडम्बर फैला हुआ था। लोग धर्म के स्वरूप को भूल चुके थे, एक परमात्मा के स्थान पर पत्थरों और व्यक्तियों की पूजा हो रही थी। आर्यों के आलस्य और प्रमाद के कारण वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना लुप्त हो गया था। मातृशक्ति को पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार नहीं था। छुआछूत का कोढ़ समाज को जर्जर कर रहा था। भारत मां परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। हिन्दू लोग धड़ाधड़ विधर्मी बनकर राष्ट्र-भक्ति से विमुख हो रहे थे। मृतप्राय समाज एवं राष्ट्र को संजीवनी पीलाने वाला कोई नहीं था। इन समस्त बुराईयों से लड़ना तो दूर रहा इन्हें समूल नष्ट करने की कल्पना तक करने वाला भी कोई नहीं था।

ऐसे विकट समय में महर्षि जी ने समूल सुधार का बीड़ा उठाकर अनुपम साहस का परिचय दिया। गुरु विरजानन्द जी को अपना समूचा जीवन समर्पित करने के बाद उन्होंने स्थान-स्थान पर जाकर शास्त्रार्थ किए अनेकों प्रवचन दिए तथा व्यक्तिगत रूप से भेटें करके अनेक लोगो का पथ-प्रदर्शन किया। यही नहीं **उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कार-विधि, आर्यभिविनय, गो-करुणानिधि, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, व्यवहारभानु, आर्योद्दिश्य-रत्नमाला, पंचमहायज्ञ विधि आदि अनेक अद्भुत ग्रन्थों की रचना की।**

टंकारा की धरती को त्यागते समय उनके दो ही सपने थे-सच्चे शिव को प्राप्त करना तथा मृत्युजंयी बनना। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने घोर तपस्या करके योग की अनेकों सिद्धियां प्राप्त की मगर वे इतने लोकेषणा रहित थे कि अपनी यौगिक सिद्धियों का कहीं पर भी किसी प्रकार का प्रदर्शन आदि नहीं किया। वे आदित्य ब्रह्मचारी थे। उनके ब्रह्मचर्य बल का लोगो ने कई बार प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। संसार में और भी अनेकों ब्रह्मचारी हुए मगर हनुमान जी ने श्री राम को सेवा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया। परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने के लिए, भीष्म ने अपने पिता की तुच्छ कामना को पूरा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया। मगर महर्षि जी ने अपने गुरु की आज्ञा मानकर संसार के उपकार के लिए यह व्रत धारण करके आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार तथा समाज और राष्ट्र सेवा के लिए अपना समूचा जीवन आहूत कर दिया। उन्हें जीवन में एक क्षण के लिए भी कामवासना उद्वेलित नहीं कर पाई। वे सत्यवादी थे। उनके जीवन में कितनी ही बार कितने ही प्रलोभन आए मगर वे कभी भी असत्य के पक्षधर नहीं बने। प्रभु भक्त होने के कारण उनमें अद्भुत सहनशक्ति तथा निर्भिकता थी, वे दयालुता तथा परोपकार की साक्षात् मूर्ति थे। मानव तो मानव उनसे किसी पशु का दर्द भी नहीं देखा जाता था। जीवनभर अपने साथ अपकार करने वालों को सदा क्षमा ही करते रहे। यहां तक कि अन्त में जिस जगन्नाथ नामक व्यक्ति ने जहर दिया, संसार से प्रयाण करने से पूर्व उसे भी अपने पास से धन देकर नेपाल की ओर भाग जाने की प्रेरणा दी ताकि वह पकड़ा न जा सके। वे सच्चे समाज सुधारक थे। उन्हीं की प्रेरणा से महिलाओं के लिए विद्या ग्रहण करने के दरवाजे खुले। वे ही अछूतों को उनके अधिकार व सम्मान दिलाने वाले थे। उन्होंने सतीप्रथा तथा बालविवाह और बलि-प्रथा आदि कुप्रथाओं का प्रबल विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। पाखण्ड और आडम्बरों को जड़ मूल से उखाड़ने के लिए उन्होंने स्वयं को पूर्णतः झोंक दिया। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म को आचरण के साथ जोड़ने की बात कही अन्यथा धर्म मात्र बाहरी पहरावे और चिन्ह आदि धारण करने तक ही सीमित हो गया था। उन्होंने जिस सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया था, उसे आगे बढ़ाने के लिए उनके शिष्यों ने अपने आपको आहुत कर दिया तथा पण्डित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित गुरुदत्त आदि अन्य अनेक मनीषियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। महर्षि जी ने प्रचीनतम शिक्षा पद्धति के जो सूत्र प्रस्तुत किए थे उन्हें कार्यान्वित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज आदि ने सहर्ष अपने आपको होम कर दिया। आर्य समाज का ऐसा स्वर्णयुग आया कि इस संस्था ने चारों ओर अपने कार्यों की धूम मचा दी तथा आर्य समाज व आर्यों के नाम एक आदर्श के रूप में लिए जाने लगे।

उन्होंने लोगो को पुनः परमात्मा के ज्ञान अर्थात् वेदों की ओर लौटने का न केवल आह्वान किया बल्कि अपने प्रबल तर्कों और प्रमाणों के आधार पर वेदों को परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान भी सिद्ध किया। वेद के नाम पर जो कुछ भी अनर्गल व अप्रासंगिक हो रहा था, अपने वेद-भाष्य के द्वारा उन सब आक्षेपों का निराकरण कर दिया। निरुक्त के आधार पर वेदों का पारमार्थिक और व्यवहारिक पक्ष रखकर वेद के सम्बन्ध में प्रचलित समस्त भ्रान्तियों को दूर करने का ऐतिहासिक कार्य किया। यह सिद्ध करके बता दिया कि वेद में बहुदेवता वाद, लौकिक इतिहास तथा अप्रासंगिक एवं अनित्य विनियोग वाद नहीं है। अज्ञानी लोगो को बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। इसलिए उनका अर्थ परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव के विपरीत नहीं किया जाना चाहिए, वह सृष्टि-नियम के विरूद्ध नहीं होना चाहिए, वह मानव उन्नति में सहयोगी होना चाहिए, वह

अनुकूल, तर्कानुमोदित, बुद्धिसंगत होना चाहिए। उन्होंने वेदों को समझने की जो आंख दी उससे वेद निन्दक भी वेदों को गडरियों के गीत कहना छोड़कर प्राचीनतम ग्रन्थ, समस्त ज्ञान-विज्ञान का पुस्तक तथा ईश्वरीय ज्ञान कहने को बाध्य हुए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अरविन्द घोष जी ने कहा- वेदों के रहस्यों को खोलने की सही कुंजी यदि किसी के पास थी तो वह केवल दयानन्द के पास थी... **'वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी है जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं.... दयानन्द ने वेदों में निहित ज्ञान के विषय में अत्युक्ति नहीं बल्कि अल्पोक्ति से काम लिया है....'**

महर्षि जी में राष्ट्र भक्ति कूट-कूटकर भरी हुई थी। अठारह सौ सतावन के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी इस बात के आज कितने ही प्रमाण मिल रहे हैं। कुछ कारणों से वह क्रान्ति सफल नहीं हो सकी। मगर वे उससे निरुत्साहित नहीं हुए बल्कि उन कारणों को खोजा जिनके कारण वह असफलता मिली थी और उन कारणों को दूर करने के लिए कृत संकल्प हो गए। वे निर्भिक शब्दों में स्वतंत्रता की मांग करने वाले प्रथम वयक्ति थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम अपने ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में स्वराज्य की बात कही, अनेक ग्रन्थों में विदेशी राज्य के समूल नाश की कामनाएं की तथा अंग्रेज अधिकारी के मुंह पर ही स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मैं तो परमात्मा से रात दिन यह प्रार्थना करता हूं कि मेरे राष्ट्र को विदेशी राज्य से शीघ्र मुक्ति मिले। सभी समाज सुधारकों तथा अग्रणी नेताओं ने इस बात को स्वीकारा है कि स्वतंत्रता के प्रथम प्रणेता तथा राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द जी ही थे। यह बात अक्षरशः सत्य है कि यदि उन्होंने अपने देशवासियों को स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा न दी होती तथा आर्य समाज की स्थापना न की होती तो भारत पन्द्रह अगस्त, १९४७ को स्वतंत्र न हो पाता। **आर्य समाज एक ऐसी क्रान्ति बनकर उभरा कि आर्य समाजी होने का अर्थ ही होता था- क्रान्तिकारी। बाल गंगाधर तिलक जी के शब्द है कि स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है यह प्रेरणा उन्हें सत्यार्थ-प्रकाश से मिली। जिन लाला लाजपत राय ने स्वतंत्रता के लिए स्वयं को आहुत कर दिया उनके शब्द हैं- आर्यसमाज मेरी धर्म की मां और महर्षि दयानन्द मेरे धर्म पिता हैं।** 'उनकी शहीदी पर जिन क्रान्तिकारियों ने इस हत्या का बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा उस जालिम को मौत के घाट उतारा जिसने लाला जी पर लाठियां बरसाई थी, उनमें भगतसिंह प्रमुख थे। भगतसिंह जी का पूरा परिवार सरदार अर्जुनसिंह, किशनसिंह, अजीतसिंह आदि महर्षि जी की राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण ही क्रान्तिकारी बना था। **अनेक क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्त्रोत पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि सत्यार्थ-प्रकाश ने ही उन्हें क्रान्तिकारी बनाया।** चन्द्रशेखर आजाद आपके ग्रन्थ आर्यभिविनय का जब तक पाठ नहीं कर लेता था वह प्रातराश नहीं करते थे। यही नहीं बल्कि उन्हीं के **परम शिष्य पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विदेश जाकर 'भारत-भवन' की स्थापना की थी जहां वीर सावरकर, मदनलाल ढींगरा, लाला हरदयाल आदि इनके शिष्य बने तथा विदेश में भी क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्वलित रखा। भाई परमानन्द तथा भाई बालमुकुन्द आदि अन्य अनेकों क्रान्तिकारियों का प्रेरणा-स्त्रोत भी आर्यसमाज ही था।** उन्होंने स्वयं बोध प्राप्त करके संसार को परमात्म-बोध दिया। आत्म बोध, मानव बोध, समाज बोध, वेद बोध, कर्म-बोध, धर्म-बोध, शिक्षा-बोध, साहित्य बोध, भाषा बोध, अर्थ बोध, विज्ञान बोध तथा राष्ट्र बोध दिया। श्री अरविन्द जी ने इसीलिए पहाड़ों की चोटियों से तुलना करते हुए महर्षि जी को सर्वोच्च शिखर की उपमा दी है। वास्तविकता यह है कि उनकी किसी से तुलना ही नहीं की जा सकती है, क्योंकि वे अतुलनीय है....

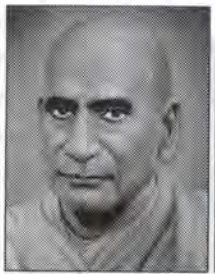

स्वामी श्रद्धानन्द

लाला लाजपत राय

महात्मा हंसराज

लोकमान्य तिलक

महर्षि जी ने अपनी विद्वता या योग का प्रदर्शन नहीं किया, न ही किसी नए मत या सम्प्रदाय की स्थापना की, न कोई नया गुरुमन्त्र ही दिया और न ही किसी नई पूजा पद्धति का विधान किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरा कोई भी नया मत या सम्प्रदाय स्थापित करने की कोई इच्छा नहीं है और न ही मैने अपनी ओर से कोई बात कही है बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक ऋषि-मुनियों ने वेदानुसार जिन मान्यताओं को माना है उसी को लोगो के सामने रखा है क्योंकि अपने आलस्य-प्रमाद तथा एषणाओं के कारण लोग उन मान्यताओं को भूल चुके थे। हालांकि उनकी इच्छा किसी नई संस्था की स्थापना करने की भी नहीं थी मगर **लोगो के आग्रह पर आर्य समाज की स्थापना की ओर संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना तथा इस उन्नति का आधार वेदों को ही माना।** उन्होंने आर्य समाज के जो दस नियम बनाए वे संसार के इतिहास में अद्वितीय ही नहीं बल्कि अनुपम भी हैं। उन नियमों के रहते कोई भी इस संस्था पर उंगली नहीं उठा सकता है। उप नियमों के रूप में संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऐसे सूत्र दिए जिनका अक्षरशः अनुपालन करने से आर्य समाज कभी भी अधोगति को प्राप्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि जब तक चरित्र को प्रमुखता दी गई तथा नियमों और उपनियमों का भली प्रकार से कार्यान्वयन होता रहा, आर्य समाज ने अभ्युदय के व्योम् को छू लिया मगर आज स्थिति कुछ विपरीत है। हालांकि आज भी बहुत से आर्य समाजी ऐसे हैं जो पूर्णारूप से महर्षि जी के मन्तव्यों को साकारता देने में लगे हुए हैं मगर इस सत्य को भी स्वीकारना होगा कि आज अधिकतम समाजों में महर्षि

जी के नियमों-उपनियमों का अनुपालन नहीं हो रहा है। इस समाज का सदस्य बनने के लिए जिस सदाचार को आधार बनाया गया था आज उसका कोई महत्व नहीं रहा है, साधारण सदस्यों और सभासदों के लिए जो नियम बनाए गए थे, उन्हें आज कोई मानने वाला नहीं रहा, उपस्थिति रजिस्टर का प्रयोग या तो किया ही नहीं जाता और यदि किया जाता है तो केवल अपने गुट को शक्तिशाली बनाने के लिए शतांश देने की बात कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं। आश्चर्य तो यह है कि ऐसे आचारहीन तथा नियम-उपनियमों का उल्लंघन करने वाले लोग ही अपने आप को सच्चे आर्य कहने लगे हैं तथा जो महर्षि जी के सदाचार एवं नियम-उपनियमों की बात करता है उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। उस विशुद्ध आर्य को परे हटाने के लिए ये तथाकथित आर्य संगठित हो जाते हैं। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुत सी सभाओं, आर्य समाजों तथा उससे सम्बन्धित अन्य संस्थाओं तथा सम्पतियों पर गैर आर्यों का अधिपत्य हो गया है.... वोट की राजनीति के अन्तर्गत या 'सबको जोड़कर चलो' के नाम पर बड़े-बड़े अनुशासनहीनों, असत्यवादियों तथा घपला करने वालों का पक्ष लेने वाले तो बहुमत से मिल जाएंगे। मगर सत्य और सदाचारी का साथ देने वाला कोई विरला ही बचा है। इससे सच्चे आर्य अन्ततः उपराम हो जा रहे हैं क्योंकि आचारहीन, आध्यात्मिक शून्य, मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति तथा आर्य समाजों के मन्तव्यों से पूर्णतया अनभिज्ञ व्यक्तियों द्वारा कब तक अपमानित हुआ जा सकता है... उनके उपराम होने से स्वार्थी तथा पद्लोलुप व्यक्ति प्रसन्न ही होते हैं। शर्मिन्दा नहीं। इस प्रक्रिया के चलते बहुत सी सभाओं या आर्यसमाजों पर दुराचारी, असत्यवादी तथा अपनी-अपनी एषणाओं को परितृप्त करने वाले अनार्यों का अधिपत्य होता जा रहा है... जिसके कारण महर्षि जी द्वारा चलाई गई प्रचार-प्रसार की प्रक्रियाएं शिथिल तथा दिशाहीन हुई है... भले ही दिख रहा हो कि हम बढ़ रहे हैं या हम कार्य कर रहे हैं मगर ऐसे लोग संभवतः नींव से हटकर बनाए गए भवन का हश्र नहीं जानते हैं या अपने-अपने स्वार्थों की पट्टी बान्धने के कारण जानना नहीं चाहते हैं। ऐसे स्वार्थी लोगो का तो कुछ बिगड़ने वाला नहीं है मगर महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करने के कारण आर्य समाज की गरिमा पर ठेस पहुंची है तथा अन्ततः हम ऐसे पतन के मार्ग पर चल पड़े हैं जिसका अन्त केवल और केवल विनाश है....

पं. लेखराम

श्यामजी कृष्ण वर्मा

भगत सिंह

रामप्रसाद बिस्मिल

यह लघु लेख न तो किसी व्यक्ति विशेष, न किसी विशेष सभा या आर्य समाज को लक्ष्य लेकर लिखा गया है बल्कि इसका लक्ष्य है कि हम महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी आत्मान्वेषण तथा आत्मावलोकन करें कि महर्षि जी की क्या भावना थी और आज हम कहां आकर पहुंचे हैं। जहां तक महर्षि दयानन्द जी तथा आर्य समाज की उत्कृष्ट एवं सार्वभौमिक विचारधारा का प्रश्न है, आज यह विचारधारा अधिक प्रासंगिक है मगर देखना यह है कि हम प्रासंगिक रहे हैं या कि नहीं। कब तक हम आत्मावलोकन किए बिना इस प्रकार से रसातल को जाते रहेंगे... **एक समय वह भी था जब अंग्रेजी राज्य में आर्य समाजी की बात को प्रमाणित माना जाता था मगर आज हम कहां खड़े हैं... आर्य समाज में कराए गए विवाह को न्यायालय में भी प्रमाण माना जाता था मगर आज उस पर भी क्यों उंगलियां उठने लगी है.... क्यों? अपनी अकर्मण्यता, सिद्धान्तहीनता तथा आपसी तालमेल और सौहार्द्र के अभाव के कारण ही आज समाज व देश के लिए आदर्श बनना तो दूर रहा, हमारे पूर्व मनीषियों ने समाज व देश के लिए जो कुर्बानियां की है,देश व समाज के लिए जो सर्वाधिक काम किया है, राजनेताओं तथा भावी पीढ़ी में उसे दर्ज कराने तक में हम अक्षम हो गए हैं.... क्या इस पर चिन्तन करना अनिवार्य नहीं है? हमारा यह मानना है कि यदि महर्षि दयानन्द जी के आदेशों का अक्षरशः पालन किया जाए, गैर आर्यसमाजियों की भीड़ बढ़ाने के स्थान पर सत्यावादी, सच्चरित्र एवं सिद्धान्तवादी लोगो को प्रश्रय दिया जाए, नियम-उपनियमों का दृढ़ता के साथ अनुपालन किया जाए तो आज भी हम अपने उस पुरातन गो रव को प्राप्त कर सकते हैं।** अन्यथा अन्य और कोई मार्ग नहीं है। कथनी और करनी जब तक एक नहीं होगी तब तक औरों की बात तो दूर रही ऐसे लोग अपने परिवार तक को भी आर्यसमाजी नहीं बना पाते हैं मगर इसके विपरीत यदि स्वयं मन, वचन और कर्म से सिद्धान्तवादी बनेंगे तो इससे ही अपने परिवार और समाज के अन्य लोग भी आर्य समाज की ओर आकर्षित होंगे। इसी से हमारा संगठन शक्तिशाली बनेगा तथा हम सही अर्थों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सकेंगे। यहां हम यह बात भी कहना चाहते हैं कि आज भी संसार में आर्य समाज जैसी उत्कृष्ट संस्था और कोई नहीं है और न ही आर्य समाज में सिद्धान्तवादियों का अकाल है। आज भी महर्षि दयानन्द जी के बहुत से दीवानें समर्पित होकर अपने-अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं.... वे किसी एषणा के कारण नहीं बल्कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने के लिए तथा प्राणीमात्र के कल्याण की भावना और अपने जीवन को सार्थकता देने के लिए रात दिन चुपचाप कार्यरत हैं... उनके मानस पटल से महर्षि जी का महान व्यक्तित्व तथा उनके सिद्धांत एक पल के लिए भी विस्मृत नहीं होते हैं तभी तो वे आज भी महर्षि जी द्वारा रखी गई नींव पर विशाल भवन बनाने के सपने को साकार करने में अनवरत लगे हैं। **महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करके चलना व्यक्ति, आर्य समाज, समूचे समाज तथा राष्ट्र और विश्व के लिए आत्मघाती कदम होगा।** ●

पृष्ठ-२ का शेष भाग

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से गूगरिया परिवार पल-प्रतिपल फल-फूल रहा है...

दानवीर भामाशाह श्री नेमीचन्द जी शर्मा के ५० लाख रुपए के दान से निर्मित
माता मोहिनी देवी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रिंया बड़ी, जिला-नागौर (राज.)

परोपकारार्थ कार्य एवं उपलब्धियां -

शिक्षा सेवा क्षेत्र:

- अपनी जन्मदायिनी **माता मोहिनीदेवी शर्मा की स्मृति में** वर्ष २०१६ में रिंया बड़ी, जिला-नागौर में ५०,००, ००० रुपए से अधिक की लागत से **मोहिनी देवी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय** भवन का निर्माण करवाकर कन्या शिक्षा हेतु अहम् योगदान.
- वर्ष २०१३ में **राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लाड़पुरा** में हॉल का निर्माण.
- जांगिड ब्राह्मण समाज छात्रावास, कोटपुतली, जिला- जयपुर के भूमि क्रय हेतु २,५०,००० रुपए का योगदान.
- अंगिरा छात्रावास कानोड़ (बायतु), जिला-बाड़मेर (राज.) में एक कमरे की निर्माण लागत व्यय १,००,००० का योगदान.
- विश्वकर्मा शिक्षा एवं कल्याण समिति, भिवानी (हरियाणा) द्वारा निर्माणाधीन छात्रावास भवन हेतु ५१,००० का आर्थिक योगदान.
- जांगिड ब्राह्मण पंचायत, नागौर द्वारा संचालित छात्रावास में वाटर कूलर एवं गीजर हेतु अनुदान.
- समय-समय पर जरूरतमन्द विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकें, कापियां आदि शिक्षण सामग्रियों का वितरण.

स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र :

- **मारवाड़ी युवा मन्च गान्धीधाम** द्वारा संचालित **एम्बुलेन्स सेवा सेन्टर** हेतु ६ लाख का आर्थिक योगदान.
- गम्भीर स्वास्थ्य समस्या से पीड़ित दो बच्चों को उपचारार्थ दो वर्ष से प्रतिमाह, प्रति बालक २,५०० रुपए.

गो-सेवा क्षेत्र :

- गान्धीधाम में ११गायों की **निजी गो-शाला** संचालित.
- ग्राम लाड़पुरा में गो-शाला हेतु भूमि क्रय, चहार दिवारी तथा घास आदि के लिए ४ लाख रुपए का अनुदान। समय-समय पर सहयोग.
- **आह्वान जन कल्याण एवं सेवा समिति** द्वारा ग्राम-तलाला, जिला- जयपुर में निर्माणाधीन गो-शाला हेतु १,००,००० का आर्थिक सहयोग.

साहित्यिक सेवा क्षेत्र :

- प्रख्यात साहित्यकार ताऊ शेखावाटी जिनको राजस्थान शिक्षा माध्यमिक बोर्ड ने विद्यार्थियों के शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है के द्वारा रचयित पुस्तकों का समय-समय पर प्रकाशन तथा ताऊ शेखावटी द्वारा रचयित साहित्य का **समग्र प्रकाशन भाग-१, भाग-२ तथा भाग-३** के रूप में सम्पूर्ण व्यय भार वहन कर प्रकाशित.
- **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती** द्वारा रचयित तथा **सन्त औधवराम वैदिक गुरूकुल, भवानीपुर (कच्छ)**, गुजरात द्वारा प्रकाशित 'चतुर्वेद शतकम्' के विशिष्ट सहयोगी (प्रेस में).
- **डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुम्बई** द्वारा रचयित तथा **जांगिड ब्राह्मण समाज समिति ट्रस्ट, गान्धी धाम** द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'अथर्ववेद सन्देश' के

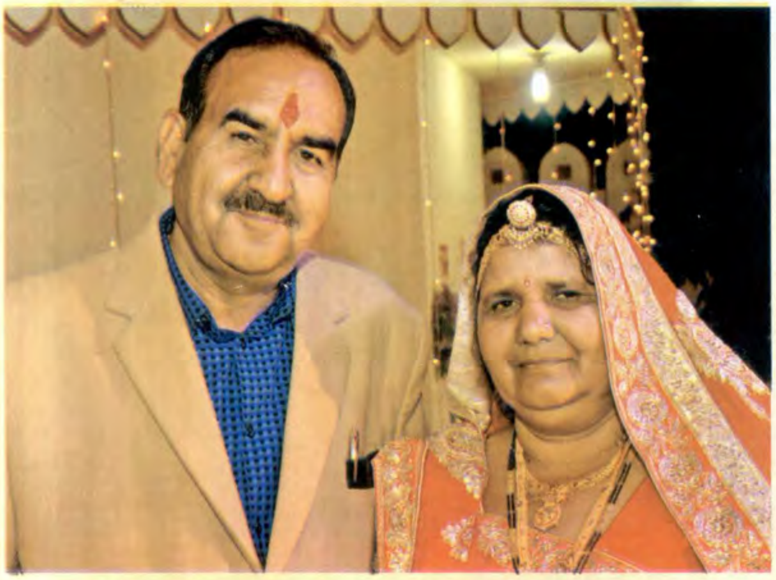

श्री नेमीचन्द जी शर्मा एवं श्रीमती सन्तोष देवी शर्मा

श्री नेमीचन्द जी की ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती अन्नु शर्मा तथा जवाई सा. श्री मुकेश जी शर्मा

|| ओ३म् ||

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से गूगरि

परिणय

30 नवम्बर, 2016

चि. रौनक संग सौ.का.ममता

दो परिवारों का मिलन - वर-वधु अपने माता-पिता के साथ

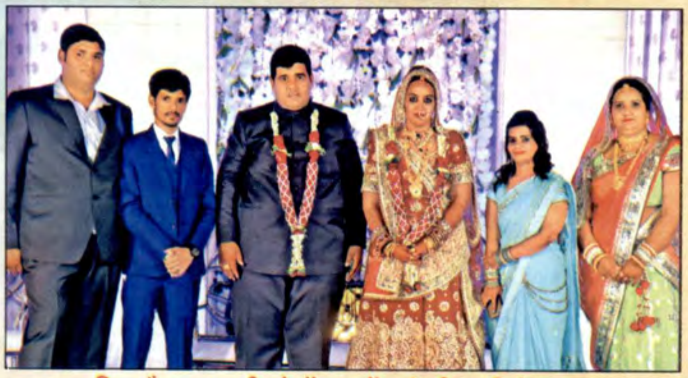

चि. रौनक अपनी दोनों बहनों एवं जीजाश्री के साथ

जांगिड सभा दिल्ली के प्रदेशाध्यक्ष श्री लादूराम जी जांगिड, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री कान्तिप्रसाद टायगर, राजस्व सेवा अधिकारी श्री दिनेश जी सारंग, श्री लीलूराम जी दिल्ली तथा पूर्व जिलाध्यक्ष श्री हरिशंकर जी शर्मा, जयपुर,डॉ कमल जी सुथार जोधपुर, श्री प्रदीप जी मांकड़ मुम्बई, श्री यादराम जी जांगिड दिल्ली श्री आर.बी. सिंह जी दिल्ली, श्री रघुवीर जी जांगिड दिल्ली, अपने साथियों के साथ वर-वधु को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए ।

|| ओ३म् ||

या परिवार पल-प्रतिपल फल-फूल रहा है...

त्सव

7 फरवरी, 2017

सौ.का. दिव्या संग चि. केशव

दो परिवारों का मिलन - वर-वधु अपने माता-पिता के साथ

वर-वधु, वधु के माता-पिता, बड़ी बहन-जीजाजी तथा भैया-भाभी के साथ

श्री जोगाराम जी कुलरिया- कलेक्टर सा., जयपुर, श्री शंकरलाल जी कुलरिया-उद्योगपति, मुम्बई, श्री अजीत जी मांडन-वरिष्ठ युवा नेता भाजपा, जयपुर, श्री संजय जी बूढड़- वरिष्ठ युवा कांग्रेस नेता, मुम्बई, श्री संजय जी दम्मीवाल - उद्योगपति जोधपुर, श्री अनिल जी जांगिड, दिल्ली तथा समाजसेवी श्री देवमणि जी जांगिड, दिल्ली अपने साथियों सहित वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान करते हुए

जांगिड गौरव पुरस्कार-2015 से सम्मानित करते जांगिड ब्राह्मण समाज-गान्धी धाम।

भामाशाह अवार्ड -२०१६ से सम्मानित करते राजस्थान सरकार के परिवहन मंत्री व अधिकारी।

व्यय भार के सहयोगी.

- आर्य जगत् के **शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्रजी देहलवी** द्वारा रचयित तथा **वैदिक संसार, इंदौर** द्वारा प्रकाशित '**ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप**' का सम्पूर्ण व्यय भार वहन.
- **वैदिक संसार, इंदौर** को वैदिक धर्म साहित्य प्रचारार्थ चार पहिया वाहन (कार) **वेद प्रचार वाहन** भेंट तथा पत्रिका प्रकाशन हेतु कठिनाई के समय पर मुक्तहस्त से विपुल आर्थिक सहयोग हेतु सदैव तत्पर शीर्षस्थ विशिष्ठ सहयोगी.
- अपने पुत्र तथा पुत्री के विवाह उपलक्ष्य में वैदिक संसार के इस अंक के प्रकाशन व्यय निमित्त ५१,००० रुपए का दान.
- अनेक स्थानों से समय-समय पर प्रकाशित होने वाली स्मारिकाओं- निर्देशिकाओं के प्रमुख आर्थिक सहयोगी.

वैदिक संसार को स्वामी शान्तानन्द सरस्वती के हाथों वेद प्रचार वाहन भेंट ।

चित्रपट सेवा क्षेत्र : माता मोहिनी देवी शर्मा को समर्पित माँ की महिमा का गुणगान करती हुई '**माँ**' लघु फिल्म का निर्माण लगभग ५० लाख के बजट से.

प्रतिभा सम्मान : राजस्थान सरकार तथा अनेक संस्थाओं से सम्मानित, साहित्यकार, हास्य कवि, जांगिड ब्राह्मण पत्र के पूर्व सम्पादक, जांगिड कुल गौरव **ताऊ शेखावटी को 'तुलसी' सम्मान** के द्वारा १,००,००० रुपए नगद राशि तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया.

सामाजिक सेवा क्षेत्र:

- **जांगिड ब्राह्मण समाज पंचायत, नोहरा**, पुष्कर जिला-अजमेर में ५०×४० फूट के '**माता मोहिनी देवी- जंवरलाल गूगरिया सभागृह**' का निर्माण २१,००,००० रुपए की लागत से करवाया.
- जांगिड ब्राह्मण सतीमठ वसन्त कुंज, दिल्ली के निर्माणाधीन भवन में ५ लाख का आर्थिक योगदान.
- अंगिराधाम, थाना गाजी, जिला - अलवर (राज.) में २०×३० फूट के हॉल निर्माण की दिनांक १९ मार्च २०१७ को घोषणा.

जनकल्याण क्षेत्र: **पूज्य पिता श्री जंवरलाल जी गूगरिया की स्मृति** में यात्रियों के सुविधार्थ ग्राम- लाड़पुरा के बस स्टैण्ड पर **जल मन्दिर (प्याऊ)** का निर्माण. गत १७ वर्षों से अनवरत् संचालन.

खेलकूद: ग्राम लाड़पुरा में कबड्डी तथा क्रिकेट टीमों एवं गान्धीधाम में **जांगिड ब्राह्मण इलेवन** के प्रेरणास्त्रोत। इन टीमों को आवश्यक खेलकूद उपकरण, टी-शर्ट, जूते-मोजे आदि सामग्रियों तथा अन्य जरूरतों में आर्थिक सहयोग तथा प्रोत्साहन.

धार्मिक क्षेत्र:

- ग्राम लाड़पुरा में अपनी जन्मदायिनी माता मोहिनी देवी की स्मृति में लगभग ५०,००,००० की राशि से शिव मन्दिर का जिर्णोद्धार.
- ग्राम लाड़पुरा के देवनारायण मन्दिर का ५ लाख राशि से जिर्णोद्धार।

सम्मान-

- **जांगिड गौरव पुरस्कार-वर्ष २०१५.**
- **भामाशाह अवार्ड-२०१६** (राजस्थान सरकार द्वारा, परिवहन मन्त्री युनुस खान के कर कमलों द्वारा).
- **डॉ. ए.पी. जे अब्दुल कलाम पुरस्कार-२०१५** (माननीय डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी के कर कमलों द्वारा).

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुरस्कार से सम्मानित करते सांसद डॉ. सुब्रह्मणयम स्वामी ।

जांगिड इलेवन गान्धीधाम (गुजरात) आपके द्वारा प्रदत्त ट्रेक शूट पहने हुए ।

ऋषि को ईश्वर प्रदत्त बोध

- स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती -
आश्रम-११६, गान्धी नगर, मथुरा (उ.प्र.)
चलभाष- ९८६८७२०७३९

आर्य समाज संगठन में यह आम धारणा है कि महर्षि दयानन्द जी को फाल्गुन बदी चतुर्दशी तिथि की रात्रि (शिवरात्रि) को शिव नाम की पत्थर की पिण्डी पर चूहों को उछल-कूद करते देख सत्य का बोध हुआ था, कि यह पाषाण मूर्ति वास्तविक शिव नहीं है।

वास्तव में यह धारणा सत्य नहीं है क्योंकि ऋषि के पिताजी मूर्ति पूजक होते हुए भी उद्दीच्य ब्राह्मण थे और यजुर्वेद के पठन-पाठन की प्रथा उनके परिवार में विद्यमान थी।

ऋषि का बचपन का नाम मूलशंकर था जिसे उनके चाचा यजुर्वेद पढ़ाया करते थे। यजुर्वेद में ईश्वर के गुण-कर्मों का उल्लेख यजुर्वेद के अनेकों मन्त्रों में हैं। जैसे-यजुर्वेद अध्याय-४० मन्त्र ८ में वर्णित हैं:-

स पर्य्यगाच्छु क्रमकायम व्रणमस्वनाविरं शद्धमपापविद्धम।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यौताऽअर्था
न्व्यदधाच्छा श्वतीभ्यः समाभ्यः।।

पदार्थ - (**शुक्र**) शीघ्रगामी सर्वशक्तिमान (**अकायम्**) स्थूल, सूक्ष्म, और कारण शरीर से रहित (**अव्रणम्**) छिद्र रहित और ना ही छेद करने योग्य (**अस्वनाविरम्**) नाड़ी आदि के साथ सम्बन्ध रूप से बन्धन रहित (**शुद्धम्**) अविद्यादि दोषों से रहित, होने से सदा पवित्र, और (**अपाविद्धम्**) जो पाप युक्त पापकारी और पाप में प्रीति करने वाला कभी नहीं होता (**परि अगात्**) जो सब ओर से व्याप्त है अर्थात् सर्वव्यापक है। (**कविः**) सर्वज्ञ (**मनीषी**) सब जीवों के मनों की वृत्तियों को जानने वाला (**परिभूः**) दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला और (**स्वयंभूः**) अनादि स्वरूप जिसके संयोग से उत्पत्ति, वियोग से विनाश, माता-पिता गर्भवास, जन्म, वृद्धि और मरण नहीं होते, वह परमात्मा (**शाश्वतीभ्यः**) सनातन अनादि स्वरूप, अपने -अपने स्वरूप से उत्पत्ति और विनाश रहित (**समाभ्यः**) द्वारा सब पदार्थों को (**यथातथ्यत**) विशेष कर बनाता है। वहीं परमेश्वर तुम लोगो को उपासना करने के योग्य है।

इन गुणों को पढ़कर स्मरण कर और चिन्तन कर मूलशंकर के अन्त:करण में ईश्वर को जानने देखने और साक्षात्कार करने की इच्छा ८-९ वर्ष की आयु में ही उत्पन्न हो चुकी थी। उसी के प्रभाव से मूलशंकर का मन शिवरात्रि को व्रत (उपवास) रखने का न था क्योंकि वह जान गये थे कि ईश्वर सत्-चित्-आनन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, निराधार, सर्व व्यापक, सर्वान्तरयामी, सर्वेश्वर, सर्वदृष्टा, अजर, अमर, अमय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। वही उपासना करने योग्य है और शिवनाम प्राणी मात्र का कल्याण करने वाले उक्त गुणों युक्त परमात्मा का है। मन्दिर की मूर्ति में सच्चा शिव विद्यमान नहीं हो सकता। परन्तु पिताजी की हठता और उनका सम्मान रखने हेतु शिवरात्रि अनुष्ठान करने को सहमत हुए थे।

सत्य ज्ञान का बीज तो उनके अन्तः करण में ईश्वर ने बाल शिक्षा की अवधि में ही रोपित कर दिया था तथा उनके चाचा और माताश्री सत्य ज्ञान के पोषक थे जिन्हें मूलशंकर अत्यधिक आदर सम्मान से देखते थे। इन पूर्व संस्कारों के कारण ही वे शिवरात्रि को जागकर अपनी धारणा की पुष्टि करते रहे और पिता श्री को जगाकर भी सत्यता से अवगत करा दिया था। परन्तु पिता श्री की बुद्धि पर कर्मफलानुसार अज्ञानता का परदा पड़ा हुआ था। लेकिन पुत्र के सत्य निश्चय को वह जान गये और उन्होंने उसे घर जाने की आज्ञा दे दी थी।

यदि मूलशंकर के मन में ईश्वर के गुणों का ज्ञान न होता तो वह भी अन्य भक्तों की तरह सो गये होते। परन्तु मूलशंकर अपने पिताश्री को अहसास कराना चाहते थे कि मूर्ति में सच्चा शिव नहीं है अर्थात् ईश्वर विद्यमान नहीं है इसलिए यह मूर्ति चेतनता रहित, निश्चल और अकर्मण्य व मूक है। तब पिता श्री ने भी कहा था कि मूर्ति के बल प्रतीकार्थ है।

अतः यह कहना असत्य है कि ऋषि को शिवरात्रि को सत्य का बोध हुआ था। सत्य का ज्ञान तो ऋषि को पूर्व में अध्ययन अवधि में हो चुका था असत्य धारण पर बोध दिवस मनाना भी अवैदिक है। महापुरुषों के जन्मदिन ही मनाने चाहिए क्योंकि महापुरुषों का जन्म ही विशेष गुणों के साथ होता है और नैमित्तिक शिक्षा के साथ फलित होते हैं। श्री कृष्ण, श्रीरामचन्द्र, महात्मा गो तम बुद्ध, महावीर स्वामी, महात्मा गांधी आदि के जन्म दिन ही मनाये जाते हैं। अतः महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिन १२ फरवरी या फाल्गुन बदी १०वीं तिथि को ही मनाना चाहिए।

ऋषि का बोध दिवस मनाने से आम जनता में भ्रम फैलता है कि मूर्ति पूजने या शिवरात्रि को शिव मंदिर में अनुष्ठान करने से ज्ञान प्राप्त होता है। मेरे विचार से बोध दिवस की प्रथा को समाप्त करना ही आर्य समाज के हित में होगा। अन्यथा आर्य समाजी और उनके परिवार शिव मन्दिरों में जाते रहेंगे। और अधिकांशतः जाते भी देखे गये हैं।

महर्षि ने मूर्ति पूजन अर्थात् पाषाण मूर्ति या चित्र के समक्ष किसी अनुष्ठान कर्म का घोर विरोध किया और मूर्ति पूजा को मानव जाति का सर्वनाशक बताया क्योंकि जड़ पूजा से मनुष्य की बुद्धि क्षीर्ण होकर अज्ञानता से ढंक जाती है।

महर्षि तो महानतम् महापुरुष थे। वे अपने ज्ञान और कर्मों से सदैव आर्यजनों के मन-मस्तिष्क में विद्यमान रहते हैं। जिस कारण उन्हें अमर कहा जाता है। सृष्टि के आदि में तो परमात्मा ने वेद चार ऋषियों की आत्मा में प्रकाशित किये थे। परन्तु महर्षि दयानन्द ने कलियुग के आरम्भ में चारों वेदों का प्रकाश सम्पूर्ण मानव जाति हेतु किया था। अतः उन्हें अट्ठाइस (२८) वें कलियुग का ब्रह्मा कहा जा सकता है। अतः महर्षि दयानन्द को ईश्वर प्रदत्त बोध था।●

हमारा अभिवादन नमस्ते ही क्यों?

सैनी कुल गो रव
- डॉ. गंगाशरण आर्य -
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली
मो.- ९८७१६४४१९५

वैदिक काल से वेदों के अन्दर भी '**नमस्ते**' शब्द का प्रयोग है उसके बाद ऋषियों के ग्रन्थों में भी '**नमस्ते**' का ही प्रयोग है और सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में भी 'नमस्ते' का ही प्रयोग है और अब भी मनुष्य-मनुष्य के बीच में परस्पर अभिवादन करने के लिए 'नमस्ते' शब्द बहुतायत रूप में प्रचलित है। आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त सब मनुष्य परस्पर '**नमस्ते**' ही करते थे। महाभारत काल के उपरान्त भारत के पतनकाल में अनेक मत-मतान्तर फैले परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति व संस्कारों में परिवर्तन प्रारंभ हो गया। जो लोग अनपढ़ थे उन्होंने तो मत-मतान्तरों द्वारा फैलाई गई भ्रांतियां चाहे किसी भी विषय में हो को ज्यों का त्यों स्वीकारा ही, लेकिन पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने भी इन भ्रान्तियों को बिना किसी विरोध के अपनी संस्कृति मानकर स्वीकार कर लिया। यही हमारी संस्कृति के बिखर जाने का बड़ा कारण बना।

सनातन काल से ही '**नमस्ते**' प्रचलित रहा है न कि '**नमस्कार**'। व्याकरण की दृष्टि से 'नमस्ते' शब्द नमः + ते से मिलकर बना है। '**नमः**' की जो विसर्गे (:) हैं, सन्धि में विसर्गों की आधा '**स्**' हो जाता है। इसलिए '**नमस्ते**' उच्चारित होता है। नमस्ते में जो 'ते' शब्द है वो युष्मद् शब्द का चतुर्थी विभक्ति के एकवचन में तुभ्यम् के स्थान पर विकल्प रूप में प्रयोग होता है। जिसका अर्थ होता है आपके लिए या तुम्हारे लिए नमः का अर्थ सम्मान करता हूं ऐसा है। नमस्कार के प्रयोग में अहंकार ही तो शेष रहता है झुकता नहीं। ऋषि मुनियों ने कभी भी नमस्कार शब्द का प्रयोग नहीं किया क्योंकि ये संज्ञा है न कि वाक्य, जबकि नमस्ते अपने आप में शब्द होते हुए भी एक पूरा वाक्य है जिसका अर्थ है मैं आपका सम्मान करता हूं। क्योंकि चतुर्थी विभक्ति के साथ नमः का प्रयोग किया जाता है जैसे :- गुरुवे नमः, शिवाय नमः रामाय नमः आदि। लेकिन परमात्मा के केवल मुख्य और निज नाम '**ओ३म्**' के साथ चतुर्थी विभक्ति नहीं लगती इसलिए '**ओ३म् नमः**' उच्चारण किया जाता है ओमाय नमः नहीं।

रही बात हाथ जोड़कर नमस्ते करने की तो यह अपना भाव स्पष्ट करने की बाह्य प्रक्रिया है। लोक व्यवहार में बुद्धि से, हृदय से एवं शरीर द्वारा कर्म करके नमस्ते की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है। आजकल तो भारतीय बच्चों पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हाय, हैलो की संस्कृति घर करती जा रही है। अभिवादन शब्द के सही अर्थ को न समझकर अनभिज्ञ लोगो ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है और अभिवादन को व्यक्त करने वाला '**नमस्ते**' शब्द आंशिक रूप से दब गया है। इसके स्थान पर अभिवादन की दूषित परिपाटियों की बाढ़ों ने अपना प्रभाव जमा लिया। अभिवादन में हाथ से हाथ मिलाकर हैलो या हाय कहना भी इन्हीं दूषित प्रणालियों में से एक है। हाय, यह शब्द सुनते ही तो ऐसा लगता है मानो किसी के मरने की खबर सुन ली हो और हेलो शब्द तो केवल टेलीफोन आविष्कारक की पत्नी का नाम है उसका कोई अर्थ तो निकलता नहीं। इसके अतिरिक्त परस्पर हाथ मिलाने की प्रक्रिया में समय भी अधिक व्यय होता है एवं संक्रामक रोग भी प्रसारित हो सकता है। इंग्लैण्ड से प्रकाशित होने वाली पत्रिका '**न्यू इंग्लैण्ड जनरल ऑफ मेडिसन**' में अनुभवी डॉक्टरों ने लोगो को अपनी राय देते हुए कहा है कि- '**सौ में से चालीस लोगो को जुकाम के कीटाणु हाथ मिलाने से ही पकड़ लेते हैं।**' इसलिए सदैव हाथ जोड़कर नमस्ते ही करें हाथ मिलाने वालों से सावधान रहें। वैसे भी हाथ जोड़कर '**नमस्ते**' कहकर किए जाने वाले अभिवादन में जो आत्मीयता झलकती है वह अन्य में नहीं। पं. अयोध्याप्रसादजी वैदिक मिश्नरी के शब्दों में इसकी व्याख्या इस प्रकार है। With all the knowledge of my mind, with all the strength of my arms, with all the love of my heart, I bow to the soul unto you, अर्थात् मेरे मस्तिष्क में जितना ज्ञान है, हाथों में जितनी शक्ति है और हृदय में जितना प्रेम है, उस सबके साथ में आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हूं। हार्दिक, वैदिक एवं वैज्ञानिक अभिवादन नमस्ते करने में जहां व्यक्ति छुआछूत के विभिन्न रोगो से बचता है वहाँ इसके साथ किसी अज्ञात व्यक्ति से मिलते समय अधिक सुरक्षित भी रहता है।

परमपिता परमात्मा को भी नमस्कार तो किया जाता है लेकिन हमारी आंखे उस समय बंद होती है, परमेश्वर का ध्यान करने के लिए, जो कि हाथ जोड़ने की बजाए ज्ञान मुद्रा में या अंजलि मुद्रा में बैठकर आसानी से किया जा सकता है, लेकिन आज हमारे देश के पढ़े-लिखे स्नातक हो या अनपढ़ या वेदों को आधार मानते हुए भी अनजान बनकर अपनी मनमानी करने वाले ढोंगी पण्डित या गुरुवादी सबने अपने-अपने हिसाब से अपना-अपना अभिवादन बना लिया जैसे जय राम जी की, राम-राम जी, जय सियाराम, जब गोपाल जी, जय राधे-राधे, जय श्री कृष्णा, जय माता की, सलाम वालेकुम, आदाब अर्ज, गुड मॉर्निंग, गुड नाइट, गुड ऑफ्टरनून, जय गुरुदेव, राधास्वामी, धन-२ सतगुरु तेरा ही आसरा, आदि-आदि। यह सब प्रकार के अभिवादन व्यक्तिवाचक, क्षेत्रीयवाचक, वर्गवाचक हैं जो साम्प्रदायिकता व संकीर्णता एवं जातिवाद को उभारने वाले होने से देश व समाज के लिए एक अलगाववादी राष्ट्रीय रोग हैं, जिसका वायरस निरंतर फैलता ही जा रहा है। आज हमारे देश को पुनः सोने की चिड़िया कहलाने के लिए राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की जरूरत है जो उपरोक्त अभिवादनों के प्रयोग करने से खतरे में पड़ जाती है। विभिन्न अभिवादनों के प्रयोग

में कुछ लोगो का कहना है कि यह तो अपनी-अपनी विचारधारा है, उनका यह कहना अनुचित है क्योंकि विचारों का एक होना मित्रता को प्रगाढ़ करता है। विचारधारा में अन्तर वैचारिक टकराव व मित्रता में दरार पैदा करके अलगाववाद को ही उत्पन्न करता है।

और यदि मान भी लिया जाए राम, कृष्ण, राधे-राधे आदि उपरोक्त अभिवादन पहले से चले आ रहे हैं तो क्या ये अभिवादन करने वाले लोग बता सकते हैं कि राम व कृष्ण के जन्म से पूर्व व उनके जीवन काल में उनके माता-पिता किस शब्द का प्रयोग कर अभिवादन करते थे। गुरुओं व ढोंगी पण्डितों के द्वारा फैलाए गए अभिवादनों का भी उनसे पहले होना साबित ही नहीं हो सकता क्योंकि उनके द्वारा फैलाए गए अभिवादन भी उनके द्वारा फैलाए गए ढोंग के बाद ही पनपे। इसके अतिरिक्त उपरोक्त अभिवादनों के प्रयोग से सामने वाले व्यक्ति का सम्मान ही नहीं होता। हम यह नहीं कह रहे हैं कि महापुरुषों राम, कृष्ण आदि का नाम नहीं लेना चाहिए परन्तु ऐतिहासिक समय स्थान व परिस्थिति का भी ध्यान रखना हमारा ही कर्त्तव्य है जय श्री राम करके हम यह तो दर्शाते हैं कि हम राम भक्त है या राम को अपना आदर्श मानते हैं, लेकिन अपने आदर्श स्वरूप राम जैसे महान पुरुषों से सम्बन्धित सभी ऐतिहासिक जानकारी रखना भी हमारा कर्त्तव्य है, उदाहरण स्वरूप- कहा जाता है कि राम ने रावण को मारा तो विजय दिवस के रूप में दशहरा त्यौहार मनाया जाता है और राम दीपावली पर घर-अयोध्या पहुंचे थे इसलिए दीपावली मनाई जाती है। लेकिन राम तो रावण को मारकर अगले दिन ही पुष्कर विमान में बैठकर अयोध्या पहुंच गए थे। तो अब दशहरा और दीपावली के बीच २० दिन का अन्तर कैसे आ गया? वस्तुतः मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम चैत्र शुक्ल पक्ष प्रथमा जिस दिन उनका राज्याभिषेक होना था। १४ वर्ष का वनवास काटकर ठीक उसी दिन अयोध्या लौटे थे तो दीपावली कार्तिक अमावस्या को क्यों मनाई जाती है आदि-आदि अनेक ऐसे प्रश्न हैं जिस को उठाना विषय से अलग होने वाली बात होगी इसलिए उन पर न जाते हुए हमें अपने आदर्श महापुरुषों का आदर तो करना ही चाहिए लेकिन जब हम किसी से मिलते हैं तो उसका आदर करने के लिए राम और कृष्ण जिस संस्कृति का अनुमोदन करते थे उसी का अनुकरण कर नमस्ते ही करना चाहिए और रही बात पढ़े लिखे लोगो द्वारा अंग्रेजी संस्कृति से प्रभावित होकर गुड-मॉर्निंग व गुड-इवनिंग आदि के प्रयोग की तो जरा विचार करो कि गुड-मॉर्निंग करने वाले व्यक्ति ने यदि विदेश में (अमेरिका) रहने वाले अपने रिश्तेदार को प्रातः उठकर गुड-मॉर्निंग कहा तो क्या विदेशी रिश्तेदार या मित्र उसका मजाक नहीं बनाएगा? क्योंकि जब यहां प्रातः होती है तो अमेरिका में सायं काल होता है और यदि प्रातः उठकर गुड इवनिंग कहा तो साथ में बैठे परिवार के लोग मजाक उड़ाएंगे कि सुबह-सुबह गुड-मार्निंग की बजाए गुड-इवनिंग कह रहे हैं। पहली बात तो यह है कि गुड मार्निंग का शाब्दिक अर्थ 'अच्छी सुबह', गुड-आफ्टरनून का 'अच्छी दोपहर' और गुड इवनिंग 'अच्छी शाम' ऐसा है, लेकिन ये तो दिन की बेलाओं की प्रशंसा है,जबकि दिन तो ईश्वर द्वारा बनाया गया है जो सभी के लिए एक समान अच्छा है। इसमें मेरा अभिवादन तो है ही नहीं, दूसरी बात जिस संस्कृति का अनुकरण करने पर हमारा मजाक बन जाए उसका अनुसरण क्यों करें? इस प्रकार परस्पर अभिवादन के लिए जय सिया राम, राम-राम, जय श्री कृष्ण, राधे कृष्णा आदि कहने पर भी राम-कृष्ण आदि की जय तो होती है पर सामने वाले व्यक्ति का अभिवादन नहीं। आज कल हमारे सिख भाई भी परस्पर सत् श्री अकाल का प्रयोग कर अभिवादन करते हैं। जबकि गुरु

आरक्षण का दण्ड

कब तक भुगतेंगे भारत में, आरक्षण का दण्ड।
भ्रातृभाव सब टूट रहा, समाज हो गया खण्ड।।

किसी समय समाजोत्थान में, यह बात सही होगी,
नई आजादी के नये विधान में, यह बात रही होगी,
एक विशेष वर्ग को सहायतार्थ, यह बात कही होगी,
दूरगामी परिणाम क्या होंगे, यह सोची नहीं होगी,
आजादी के समय राष्ट्र के प्रति, थी भावना सबकी प्रचण्ड।।१।।
कब तक......

इतिहास पुराना पढ़कर देखों, आरक्षण की कहीं बात नहीं,
कर्म करना मानव का कर्त्तव्य, फल पाना उसके हाथ नहीं,
बिना मेहनत कुछ पाना चाहता, नर पुंगव की बात नहीं,
पुरुषार्थ करने वालों की, होती जन्म से जात नहीं,
बिना कर्म किये लड़कर हक पाना, है मानवता पर दण्ड।।२।।
कब तक......

जात-पात के नाम पर यहां आरक्षण ने बरबाद किया,
पुरुषार्थ की बात छोड़ यहां निकम्मों को आबाद किया,
बिना श्रेष्ठता भी हक मिलेगा, ऐसी धारणा को आबाद किया,
सरकार से छूट लेने की आदत ने, मानव को बरबाद किया,
लड़कर आरक्षण पाने की खातिर, बन गये अनेक उदण्ड।।३।।
कब तक......

दुनिया के देशों में कहीं, आरक्षण की बात नहीं,
सरकार से राहत लेने की वहां होती कोई बात नहीं,
अमीर-गरीब तो होते हैं पर, उनकी कोई जात नहीं,
स्वाभिमानी जनता वहां, सरकार से लेती कोई खैरात नहीं,
बिना आरक्षण के सम्पन्न बन गये, अमेरिका और चीन अखण्ड।।४।।
कब तक......

- देशराज आर्य -
पूर्व प्रधानाचार्य
म.न. ७२५, सेक्टर-४ रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष - ९४१६३३७६०९

ग्रन्थ साहिब के अनुसार नमस्ते अजाते-नमस्ते अपाते आदि का प्रयोग है जो नमस्ते कहने का ही विधान है। यहां यह बात विचारणीय है कि दसों गुर किस अभिवादन वाक्य का प्रयोग करते थे? सच्चाई जो कि आज भी जनसाखियों से सिद्ध होती है कि परस्पर मिलते समय सभी नमस्ते ही करते थे। स्वयं को आर्य हिन्दूस्तानी ही समझते थे, धोती पहनते थे और यज्ञोपवित (जनेऊ) भी धारण करते थे। अत्यन्त दु:ख व आश्चर्य की बात है कि यह सब कुछ उनके धर्म-ग्रन्थों में विद्यमान होते हुए भी वे अलगाववादी प्रकृति होने के कारण जानते हुए भी मानने से इन्कार करते हैं। सत् श्री अकाल तो उनके द्वारा प्रयोग किया जाने वाला युद्धकालीन जयघोष है। जैसे मुसलमानों के द्वारा अभिवादन के लिए आदाब अर्ज या सलाम वालेकुम प्रयोग होता है लेकिन उनका युद्धकालीन जयघोष अल्लाह-उ-अकबर है। ठीक ऐसे ही युद्धकाल में हमारे महापुरुषों को आदर्श रखा जाता था और जय श्री राम व जय श्री कृष्ण, जय दुर्गा, जय मां काली तथा हर-हर महादेव आदि-आदि जयघोषों का प्रयोग किया जाता था लेकिन मैंने पहले भी स्पष्ट किया है कि परस्पर अभिवादन के लिए हमें वैदिक संस्कृति के अनुसार नमस्ते का ही प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि नमस्ते का प्रयोग करने पर परस्पर समर्पण का भाव स्पष्ट होता है। एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव दिखता है। जब दोनों और से इस प्रकार की नम्रता की अभिव्यक्ति हो तो प्रेम बढ़ेगा ही और परस्पर ज्ञान का आदान प्रदान प्रारंभ होने का सिलसिला जारी हो जाएगा।

सन् १९५३ ई. में जब भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू डलेश वार्ता के अवसर पर अमेरिका में फोटोग्राफरों से निरन्तर हाथ मिलाने के कारण थक गए तो कहा कि हमें भारतीय ढंग से अभिवादन करना चाहिए। इसके अलावा भारतीय राजदूतों द्वारा विदेशों में विभिन्न समारोहों के अवसरों पर सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग होते हुए पाया जाता है। भारत के प्रधानमंत्री जब रुस की यात्रा पर गए थे तो उनके स्वागतार्थ मार्ग में पट्टियों पर नमस्ते और स्वागत ही लिखा था, जब रूस के प्रधानमंत्री खुश्चेव और प्रधान बुलगानिन भारत में आये थे तो उन्होंने सर्वत्र हाथ जोड़कर ही अभिवादन किया। जब अमेरिका में सर्वधर्म सम्मेलन हुआ तब विचार हुआ कि किसी एक अभिवादन को सर्व मान्यता देकर फिर उसका प्रयोग किया जाए। इसके निर्णय के लिए वहां पर उस समय अनेकों मतावलम्बियों ने अपने-अपने अभिवादनों की व्याख्या, प्रशंसा व विशेषताएं स्पष्ट की। उसी समय वहां पर भारत के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान पण्डित अयोध्या प्रसादजी वैदिक रिसर्च स्कॉलर कोलकाता ने नमस्ते शब्द की विशेषताओं पर प्रकाश डाला और व्याख्या की जिसका परिणाम यह निकला कि यह नमस्ते शब्द वहां पर सभी को इतना प्रिय लगा कि सर्व सम्मति से अभिवादन के रूप में केवल नमस्ते को ही सबके द्वारा अपनाया गया। अत: हमें समस्त बेसिर पैर के अवैदिक अभिवादनों को त्यागकर भारतीय (आर्यावर्त्तीय) पुरातन अभिवादन नमस्ते का ही प्रयोग करना चाहिए। सभी प्राचीन ग्रन्थों में नमस्ते करने का प्रमाण :- बड़ों व छोटों को भी नमस्ते ही करने का विधान है। वेदों में नमस्ते-

१. **ज्येष्ठाय नम:, कनिष्ठाय नम:।** - मानव धर्म वेद
(बड़ों के लिए नमस्ते, छोटों के लिए नमस्ते)
नमस्ते रूद्र मन्यवे। यजु. अ. १६

नमस्ते करने के ऐतिहासिक प्रमाण

२. यामाचार्य ने नचिकेता को नमस्ते की -**नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वरित मेऽस्तु।** -कठो.१/१/९

३. गार्गी ने याज्ञवल्क्य को नमस्ते की - **सा होवाच नमस्तेऽस्तु याज्ञ० ल्क्य।** -बृहद. ३/८/५

४. जनक ने याज्ञवल्क्य को नमस्ते की - **नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्यानु मा शाधीति।** - बृहद.४/२/१

५. विश्वामित्र ने वसिष्ठ को नमस्ते की - **नमस्तेऽस्तु गामिष्यामि।** -वाल्मीकि रा. बाल स. ५२ श्लोक-१७

६. सीता ने राक्षक को नमस्ते की - **नमस्ते राक्षसोत्तम।** - वाल्मीकि रा.अ.स. ४ श्लोक-३

७. देवयानी ने शुक्राचार्य को नमस्ते की - **नमस्ते देहि मामस्मैं।** -महा. आदिपर्व अ. ५१/३०

८. विदुर ने दुर्योधन को नमस्ते की - **यथा तथा तेऽस्तु नमश्च तेऽस्तु।** -महा. सभापर्व अ. ६३/१९

९. जल ने दासी को नमस्ते की - **गच्छ भद्रे नमोऽस्तु ते।** -महा. वनपर्व अ. ७५/२८

१०. ऋषि व्यास ने देवदूत को नमस्ते की - **देवदूत नमस्तेऽस्तु गच्छ तात यथासुखम।** -महा. वनपर्व अ. २६०/३८

११. अर्जुन ने कृष्ण को नमस्ते की - **पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।** -महा. भीष्म. अ. ३५/३९

१२. भीष्म ने कृष्ण को नमस्ते की- **नमोऽस्तु ते शार्ङ्ग गदासिपाणे।** -महा. भीष्म. अ. ५९/९६

१३. कृष्ण ने धृतराष्ट्र को नमस्ते की - **शिवेन पाण्डवान् ध्याहि नमस्ते भरतवर्ष।** -महा.शा. अ. ६३/५१

१४. ब्रह्मा ने अपने पुत्र को नमस्ते की - **नमस्ते भगवन् रूद्र भास्करा मिततेजसे।** -शिव. वायु. ख. अ. २४/४५

नमस्ते के उत्तर में नमस्ते ही कहना चाहिए

१५. सावित्री ने ब्रह्मा से नमस्ते की - **भावस्तिष्ठ देव नमोऽस्तु ते।** -पद्म. सृ. अ. १७/१४०

१६. इसके उत्तर में ब्रह्मा ने भी सावित्री को नमस्ते की - **क्षम देवि नमोऽस्तु ते।** -पद्म. सृ. अ. १७/१४४

१७. **नमस्ते अजाते नमस्ते अपाते।** - श्री गुरु ग्रन्थसाहिब

१८. जब-जब मिले, परस्पर '**नमस्ते जी**' कहें।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती।

वास्तव में '**नमस्ते**' ही सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक अभिवादन है। उपर्युक्त विस्तृत चर्चा के पश्चात् सभी सज्जनों से अनुरोध है कि समस्त विश्व के मानवों को एकसूत्र में पिरोने व कल्याण, मैत्री एवं एकता के लिए तथा परस्पर अभिावदन के लिए 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग करें। वास्तव में नमस्ते ही सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वजनिन अभिवादन है। उपयुक्त विस्तृत चर्चा के पश्चात् सज्जनों से अनुरोध है कि समस्त विश्व के मानवों को एकसूत्र में पिरोने व कल्याण, मैत्री एवं एकता के लिए तथा परस्पर अभिवादन के लिए नमस्ते शब्द का ही प्रयोग करें।●

गो हत्या एवं मांस भक्षण निर्दयता का परिचायक

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती -
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल,
भवानीपुर अबडासा कच्छ (गुजरात)

गाय की हत्या करना, करवाना या इसमें सहयोग करना, गोमांस का क्रय-विक्रय करना अथवा गोमांस पकाना, परोसना व गोमांस खाना या गोमांस खाने खिलाने की अनुमति देना यह सब घोर पाप है एवं अपवित्रता, क्रूरता तथा दानवता का परिचायक है। गो हत्या करना अथवा गो हत्या को बढ़ावा देने की क्रिया को सर्वथा बंद करना चाहिए। क्योंकि-

१. गो हत्या करना-करवाना भारतीय संस्कृति (वैदिक संस्कृति) के विरूद्ध है। इससे भारतीय भावनाओं का हनन होता है।
२. यह भयंकर हिंसा एवं निर्दयता का प्रतीक है।
३. जिसका हम दूध पीते हैं ऐसे दूध देने वाली गो जाति की हत्या करना अति कृतघ्नता का परिचायक है।
४. गो हत्या करना-करवाना मातृहत्या करने-कराने के समान है।
५. गो हत्या एवं गो हत्या के समर्थक को ईश्वर की ओर से भयंकर दंड मिलता है।
६. गो हत्या करना ईश्वर की आज्ञा के विरूद्ध तथा घोर नास्तिकता का उदाहरण है।
७. गो हत्या करना-करवाना वेद आदि सत्य शास्त्रों के विरुद्ध है। जैसे ऋग्वेद में कहा है 'मागामनामदितिं वधिष्ट' अर्थात् अवध्य गाय की हिंसा (वध) मत करो।
८. महाभारत में कहा गया है कि– "जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढ़ाना चाहता है, वह जहां कभी भी जन्म लेता है, चैन से नहीं रह पाता।" इस प्रकार गोमांस भक्षक पुनर्जन्म में बेचैन ही रहेगा।

९. यजुर्वेद में स्पष्ट कहा है - "पशूनू पाहि" - अर्थात् पशुओं की रक्षा करो। गाय जैसी सीधी सरल प्राणी की हत्या करना वेद की आज्ञा का स्पष्ट उल्लंघन है।
१०. स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित '**गो करुणानिधि' के अनुसार एक गाय के शरीर से दूध घी, बछड़ा-बछड़ी उत्पन्न होने से एक पीढ़ी से चार लाख पचहत्तर हजार छः सौ मनुष्यों को सुख मिलता है ऐसे परोपकारी गो की हत्या करना-करवाना अतिशय मूर्खता एवं अज्ञानता का प्रमाण है।**
११. गो को मारना-मरवाना मनुष्य के विनाश का कारण बन सकता है।
१२. गो की हत्या का अर्थ है- मानवता की हत्या।
१३. गो हत्या को बढ़ावा देना पश्चिमी संस्कृति-सभ्यता का अंधानुकरण करना है।
१४. गो हत्या एवं गो मांस भक्षण का समर्थन करना हमारे ऋषि-मुनियों, संत-महात्माओं, महापुरुषों तथा भारत के गो प्रेमी-गो सेवी-गो भक्तों के साथ द्रोह करना है।
१५. भारत जेसे धार्मिक देश में गो मांस का वितरण, विक्रय एवं सेवन करना अधार्मिकता का खुला प्रचार है।
१६. गो मांस का सेवन मन, बुद्धि एवं आत्मा को कलुषित करने वाला है।
१७. मांसाहार, तामसिक भोजन है, इससे मन में पाप की वृत्ति जागृत होती है।
१८. मनुष्य स्वभाव से मांसाहारी प्राणी नहीं है क्योंकि मांसाहारी जीवों के दांत व नाखुन नुकीले तथा घातक होते हैं किन्तु मनुष्यों के दांत व नाखुन ऐसे नहीं होते।
१९. मनुष्य का पाचन तंत्र शाकाहार हेतु जितना अनुकूल है उतना मांसाहार के लिए अनुकूल नहीं है।
२०. आज समाज में बढ़ रहे व्यभिचार, भ्रष्टाचार एवं दुराचार का बहुत बड़ा कारण मांसाहार है।
२१. मांसाहार को आज के अनेक विश्वप्रसिद्ध डॉक्टरों ने रोग उत्पादक कहा है।
२२. स्वतंत्र भारत देश में भी गो हत्या एवं गो मांस सेवन को रोक नहीं पाना विदेशी गुलामी की विद्यमान का प्रतीक है।
२३. गो हत्या हेतु सैकड़ों हजारों बूचड़खानों के खुलने के कारण पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हो रही है।
२४. गो हत्या के निर्बाध गति से बढ़ने के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है।
२५. मांसाहारी व्यक्ति को मरने के बाद में मनुष्य जन्म नहीं मिलता है।
२६. गो हत्या करने-करवाने का हमारे महापुरुषों ने घोर विरोध किया है। जैसे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गो हत्या बंद करने के लिए करोड़ों लोगो के हस्ताक्षर कराकर तत्कालीन महारानी विक्टोरिया के पास भेजने का अभियान चलाया था।
२७. महात्मा गांधीजी भी गो हत्या के प्रबल विरोधी थे। जिसका प्रमाण उनके पुस्तक "**सत्य के प्रयोग**" से मिलता है।
२८. गुरुगोविन्दसिंह भी गो हत्या के कट्टर विरोधी थे। इसलिए वे कहते थे - "**गो घात का दुःख जगत् से हटाऊ।**"
२९. आचार्य चाणक्य का कथन है कि "**जो मांस खाते हैं और शराब**

पीते हैं उन पुरुष रूपी पशुओं को कैसे हटाऊं''

३०. श्री कृष्ण भगवान तो गो रक्षा को अपना परमधर्म मानते थे। इसलिए वे कहते थे - **''गावोममाग्रतरसन्तु गावः पृष्ठत एव च। गावश्य सर्वगात्रेषु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।''** अर्थात् गाय मेरे आगे हो, गाय मेरे पीछे हो, गाय मेरे सभी अंगो में हो और गायों के बीच में ही मैं बसता हूं।

३१. ऐसे-ऐसे महापुरुष जिस गो की रक्षा एवं वृद्धि के लिए सदैव तत्पर हों उनके विरूद्ध चलकर गो हत्या को बढ़ावा देने वाली गो मांस भक्षण का प्रचलन बढ़ाना अथवा समर्थन करना घोर निन्दनीय है।

उपसंहार :- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के वर्ल्ड हेल्थ मैगजिन, अनेक देशी-विदेशी डॉक्टर और नोबल पुरस्कार विजेता डॉ. ब्राउन आदि का यही निर्णय है कि मांसाहार से हृदय रोग, केन्सर, टी.बी., अपेन्डिक्स, मोटापा, ब्लडप्रेशर आदि अनेक रोग होते हैं। अतः स्वस्थ, सुन्दर शरीर व दीर्घायु जीवन की प्राप्ति के लिए शाकाहारी भोजन गाय का दूध, घी, फल, साग, सब्जी, अन्न का सेवन करें और मांसाहार का सर्वथा त्याग करें।

निष्कर्ष :- गाय को वेद में विश्व की माता कहा गया है। जैसे **''गावो विश्वस्य मातरः''** (अथर्ववेद) यह प्रमाण है। वास्तव में गाय में माता कहलाने के सभी गुण हैं। जैसे वह अपने दूध से बच्चों का पालन करती है तथा अपने दूध से बनने वाले दही, छाछ, मक्खन, घी, पनीर, मिठाई,मावा आदि के द्वारा लोगो के हृष्ट, पुष्ट व स्वस्थ करती है। यहां तक कि अपने गोबर तथा गो मूत्र से भी अनेक रोगो को दूर करने में सहायक होती है। ऐसे महान उपकारी प्राणी की हत्या करना और उसका मांस खाना भयंकर अपराध तथा पाप है। अतः विचारशील मनुष्य को गो हत्या निषेध करने हेतु कड़े कानून बनाने चाहिए तथा गो मांस पर पूर्ण पाबंदी लगानी चाहिए। एवं गो रक्षा के लिए प्रयत्न करना चाहिए। ●

देशवासियों! याद करो वीरों की कुर्बानी

देश धर्म को भेंट चढ़ा दी, अपनी भरी जवानी।
देशवासियों! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।

राणा सांगा ने बाबर को, नाकों चने चबाए।
महाराणा प्रताप शिवाजी, मुगलों से टकराए।।

तेग बहादुर गोविन्द सिंह ने, दुष्टों का मुंह मारा।
बंदा वैरागी नलवा को, मान गया जग सारा।।

दुर्गारानी किरण मई थी, देश भक्त क्षत्राणी।
देशवासियों! याद करो अब, वीरो की कुर्बानी।।१।।

जगत् गुरु ऋषि दयानन्द ने, सोया देश जगाया।
आजादी का बिगुल बजाया, योगी ना घबराया।।

तात्या टोपा तुलाराम, नाना को साथ लगाया।
वीर कुंवरसिंह नाहरसिंह ने, भारी युद्ध मचाया।।

लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से, खूब लड़ी मर्दानी।
देशवासियों ! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।२।।

वीर सुभाषचन्द्र ने था, गोरों का राज हिलाया।
भारत है वीरों की धरती, दुष्टों को दिखलाया।।

बिस्मिल शेखर भगतसिंह ने, भारी लड़ी लड़ाई।
खुदीराम अशरफ वीर ने, हंसकर फांसी खाई।।

मत भूलो लंदन में, उधम की पिस्तौल चलानी।
देशवासियों! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।३।।

वीरों के बलिदानों से ही, यह आजादी आई।
भारतवीर सपूतों ने थी, कठिन मुसीबत पाई।।

आजादी का महत्व समझ लो, सभी बहिन अरु भाई।
मिल-जुलकर के रहना सीखों, इसमें सभी की भलाई।।

देशभक्त बलवान बनों तुम, सच्चे ईश्वर ध्यानी।
देशवासियों! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी।।४।।

बनो सदाचारी तपधारी, जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
गंदी संगति त्यागो प्यारो, जग में आदर पाओ।।

वैदिक धर्मी बनो तुम, भारत की शान बढ़ाओ
'नन्दलाल' तुम आजादी के मधुर तराने गाओ।।

करो देश का ध्यान, छोड़ दो करना तुम अभिमानी।
देशवासियों! याद करो अब, वीरों की कुर्बानी

विश्वकर्मा कुल गो रव
- पं. नन्दलाल निर्भय -
बहीन, जनपद- पलवल, हरियाणा
चलभाष: ९८१३८४५७७४

वेद वेदाङ्ग विद्यापीठ गुरुकुल-एक परिचय

सम्मान्य महोदय! सादर नमस्ते।

वेद वेदाङ्ग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम वैदिक संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत के शिक्षण के लिए संस्थापित एक आदर्श संस्थान है। इसकी स्थापना गुरुकुल स्थापना समिति द्वारा शिक्षक दिवस ५ सितम्बर सन् २००६ को की गयी थी। तब से हमने अब तक कई मील के पत्थर स्थापित किये हैं। जिसको कभी भी आश्रम में आकर देखा जा सकता है।

हमारे उद्देश्य :-

१. चरित्रवान्, राष्ट्रभक्त, ईश्वरभक्त, संस्कृतज्ञ तथा निष्ठावान् नागरिकों का निर्माण।

२. बालकों के शारीरिक, आत्मिक व मानसिक विकास को ध्यान में रखते हुए शिक्षण की व्यवस्था करना।

३. सहनिवास, सहभोजन एवं सदाचार द्वारा सामाजिक समरसता का विकास तथा जाति-पाति के भेदभाव को नष्ट करना।

४. भारतीयता और भारती की रक्षा के हित में एक भाषा, एक भूषा तथा एक भाव का प्रचार कर मानवता को प्रतिष्ठित करना।

गुरुकुल की विशेषताएं :-

१. सवगीण शिक्षा द्वारा बच्चों की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति का विशेष ध्यान।

२. एक समान आवास, वस्त्र, भोजन के साथ समरसतापूर्वक शिक्षण।

३. प्रातः ४ बजे से रात्रि ९ बजे तक अति संयमित एवं उपयोगी दिनचर्या।

४. प्राचीन ग्रन्थों व्याकरण, साहित्य, दर्शन, उपनिषद् के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा पर समुचित ध्यान।

५. दोनों समय सन्ध्या, यज्ञ, वेदपाठ, भजन।

६. वेदविभाग द्वारा प्राचीन परम्परा से सस्वर वेदपाठ और वेद का कण्ठस्थीकरण।

७. योगासन, प्राणायाम, व्यायाम द्वारा नियमित शारीरिक दक्षता हेतु प्रयत्न।

शिक्षा व्यवस्था :-

१.कक्षा ३ से ५ तक पूर्णतया उ.प्र. बेसिक शिक्षा परिषद् का पाठ्यक्रम।

२. कक्षा ६ से १०वीं तक उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् के साथ-साथ अष्टाध्यायी माध्यम से प्राचीन व्याकरण का अध्यापन।

३. कक्षा ११वीं (उ.मा.) से शास्त्री तक पूर्णतया महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक का पाठ्यक्रम।

४. योगाचार्य, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, परीक्षा पाठ्यक्रम रोहतक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित।

५. वेद विभाग में सस्वर शुक्ल यजुर्वेद कण्ठस्थ कराने की व्यवस्था।

६. आर्य समाज के लिए प्रचारक तैयार करने के लिए कम से कम हाईस्कूल पास छात्रों का चतुर्वर्षीय पाठ्यक्रम।

प्रवेश के नियम :-

१. कक्षा ३ से ७वीं पास तक छात्रों की प्रवेश परीक्षा प्रतिवर्ष अप्रैल के दूसरे रविवार को करके उसी दिन छात्रों को प्रविष्ट किया जाता है।

२. तीसरी से कम और सातवीं से ऊपर के छात्रों का प्रवेश नहीं हो सकेगा।

३. प्रवेश परीक्षा छात्र द्वारा उत्तीर्ण कक्षा के स्तर की होगी।

४. अभिभावकों को निर्धारित शुल्क उसी दिन देना होगा।

५. रसीद कटने के बाद धन की वापसी सम्भव नहीं होगी।

छात्रों के लिए आचार संहिता :-

१. गुरुकुल में प्रवेश के उपरान्त छात्र आश्रम को ही अपना घर और स्थानीय संरक्षक व आचार्यों को ही अपना माता-पिता व अभिभावक तथा सतीर्थ्यों को अपना भाई समझेंगे और उन्हें भ्राताजी कहकर सम्बोधित करेंगे।

२. गुरुकुल परिसर में गुरुकुलीय वेशभूषा में ही छात्रों को अनिवार्य रूप से रहना होगा। किसी भी प्रकार का बाहरी वस्त्र धारण नहीं कर सकेंगे।

३. गुरुकुलीय भोजन के अतिरिक्त बाजारू वस्तुओं के सेवन पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

४. छात्र किसी भी प्रकार की विलासिता पूर्ण सामग्री मोबाईल, घड़ी, रेडियो, सेण्ट, पाउडर आदि नहीं रख सकेंगे।

५. आश्रम की निर्धारित दिनचर्या का पालन प्रत्येक छात्र के लिए अनिवार्य रहेगा।

६. छात्र आश्रम में संस्कृत भाषा में ही बातचीत करेंगे। कुछ निर्धारित कालांश में ही अन्य भाषा में बोलना हो सकेगा।

७. बिना आचार्य और संरक्षक की अनुमति के आश्रम से बाहर जाना दण्डनीय अपराध समझा जाएगा। **शेष भाग पृष्ठ ३८ पर**

गुरुकुल प्रवेश सूचना

वर्ष २००६ से स्थापित तथा संचालित वेद वेदांङ्ग विद्यापीठ, गुरुकुल आश्रम महर्षि दयानन्द नगर, धनपतिगंज, जिला सुल्तानपुर (उ.प्र.) पिन कोड २२८१२१ में नवीन सत्र प्रवेश हेतु प्रवेश पात्रता परीक्षा ९ अप्रैल २०१७ को किया जाना निश्चित है। अतः इच्छुक अभिभावकगण विस्तृत जानकारी हेतु गुरुकुल संचालक समिति से सम्पर्क प्राप्त करें।

प्रस्तोता एवं सम्पर्क- गुरुकुल संचालन समिति
९४५०७८३३३७, ९६९५७२०६९१, ८४००५०६४६३
Email.-ashdsultanpur@gmail.com

आर्यों के भारत में आगमन रूपी मनघड़न्त इतिहास की पड़ताल

- जगदीश प्रसाद आर्य -
गिरदौड़ा (नीमच) म.प्र.
चलभाष- ८९८९६१५३४२

भारत में प्राथमिक शिक्षा से लेकर विस्व विद्यालय तक इतिहास में पढ़ाया जाता है कि आर्यों ने कहीं बाहर से आकर यहां के मूल निवासियों को हराकर और दक्षिण भारत में खदेड़कर आप कब्जाकर स्वामी बन बैठे। तो वे आर्य जो अब हिन्दू नाम से जाने जाते हैं कौन थे और कब कहां से आये विषय पर इतिहासज्ञों में तीव्र विरोधाभाषी मतभेद पाये जाते हैं, यह आगे दिखायेगें। उनमें अनेकता में एकता इतनी है कि सब पाश्चात्य विद्वान आर्यों को विदेशी मानते हैं। विदेश मूलकता को सुविधा की दृष्टि से तीन उप विभागो में बांट सकते हैं-

(१) आर्य यूरोपीयन मूल के थे (२) आर्य मध्य एशिया मूल के थे (३) आर्य दक्षिण रूस मूल के थे। इनमें पुनः प्रत्येक में अनेकशः अन्तर्विरोधी मत मतान्तर है सो देखिये-

१-यूरोपीयन मूल का सिद्धान्त - इनमें डॉ. पी.गाइल्स आर्यों को हंगरी-डेन्यून नदी की घाटी का डॉ. मच उन्हें पश्चिमी बाल्टिक समुद्र तट (स्केण्डी नेविया) का पैंका जर्मनी का और मार्गन पश्चिमी साइबेरिया का मूल निवासी मानते हैं।

२- मध्य एशिया मूल का सिद्धान्त - इनमें जे.जी. रीड्स आर्यो को बेक्ट्रिया का, हर्न फेल्ड रूसी तुर्कीस्तान का, मेक्स मूलर मध्य एशिया (फेलेण्ड के पूर्व) का मूल निवासी मानते हैं।

३- दक्षिणी रूस मूल का सिद्धांत - इनमें नेहेरिंग आर्यों को केस्पियन सागर के पूर्व में दक्षिण रूस का, बेण्डेस्टाइन-यूराल पर्वत के दक्षिण में किर्गिस घास के मैदान का और एडवर्ड मेयर पामीर के पठार का मूल निवासी मानते हैं। इस प्रकार आर्यों के मूल स्थान विषय पर इतिहासज्ञों में आकाश पाताल का अन्तर पाया गया है।

जिस प्रकार आर्यों के मूल निवास के बारे में इतिहासज्ञों में मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ने उसी प्रकार उनके आधार भी भिन्न-भिन्न हैं। फिर भी उन्होंने अपने-अपने मत को वेद के आश्रय से सिद्ध ठहरने का प्रयास किया है, चूंकि वेद आर्यों के आदि धर्मग्रन्थ है और वेदों के बिना आदिम आर्यों के बारे में जानने का कोई साधन नहीं है। डॉ. गाइल्स ने वैदिक ग्रन्थों में वर्णित वनस्पतियों और पशु पक्षियों के आधार पर दर्शाया कि आर्य डेन्यून नदी की घाटी के मूल निवासी थे, क्योंकि वैदिक ग्रन्थों में वर्णित वनस्पतियां और जन्तु सब भारत में प्राप्त नहीं होते हैं और वहां प्राप्त होते थे। श्री पैंका ने नस्ल एवं शरीर गठन के आधार पर जर्मनी और स्कैण्डिनेविया को आर्यों का मूल स्थान बताया इसी प्रकार गाय, घोड़ा, बकरी, भेड़ जैसे पशुओं का वेदों में बहुतायत से वर्णन पाए जाने के आधार पर माना गया कि आर्य पशुपालक थे। अतः पशुओं के लिए घास के चरागाह ही उनका मूल निवास हो सकता है। इस कारण पश्चिमी साइबेरिया के किर्गिज के मैदान को रूसी तुर्किस्तान आदि को आर्यों का मूल निवास ठहराया। श्री नेहरिंग ने पुरातत्व का आधार लेकर कैस्पियन सागर के पूर्व दक्षिण रूस के आर्यों का मूल निवास बताया। उनकी मान्यता है कि इस स्थान पर जो विशालकाय समाधियां मिलती हैं वे आर्यों की है, आदिम आर्य मृतकों को दफनाने और उनकी समाधियां बनाते थे। इस प्रकार इन विद्वानों ने जर्मनी से साइबेरिया और स्कैण्डिनेविया से दक्षिण रूस तक आर्यों के मूल निवास की अन्तर्महाद्वीपीय ढूंढ खोज की है। परन्तु यह सोचने की बात है जब बगल में छोरा हो तो नगर में ढिंढोरा क्यों? इतना तो साफ है कि ये सभी मत सम्भावनाओं पर टिके हैं और जिन संकेतों पर वे सम्भावनाएं तलाश रहे हैं। वे सब भारत में उपलब्ध हो जाती है। इसके अतिरिक्त मेक्समूलर ने तुलनात्मक भाषा विज्ञान के आधार पर वेद और पारसी धर्म ग्रन्थ अवेस्ता का अध्ययन कर यह सर्व समावेशी सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि वेद और अवेस्ता की भाषा में शब्दों और दोनों के देवताओं में निकटता और साम्य देखा जाता है अतः दोनों के पूर्वज कभी एक साथ रहे होंगे और दोनों के पूर्वजों का मूल निवास स्थान एक ही होना चाहिए। पुनः वह स्थान गाय घोड़ा आदि पशु पालन और नौका चालक के अनुकूल होना चाहिए, वेदों का उल्लेख होने से। ऐसा स्थान मध्य एशिया था। यह घोषित किया कुल मिलाकर आज पढ़ाया यह जा रहा है कि मध्य एशिया तब आज के जैसा बंजर नहीं, हरा भरा था। आर्य वही के निवासी थे। जनसंख्या वृद्धि या चरागाहों की खोज के हेतु से उन्होंने अपने मूल स्थान से पूर्व पश्चिम और दक्षिण की ओर बढ़ना प्रारंभ किया। दक्षिण पूर्व की ओर बढ़ने वाली उनकी एक शाखा काकेशस पर्वत को पार कर फारस (ईरान) की ओर बढ़ी। उसकी एक शाखा बेबीलोन को विजयकर वहीं बस गई। इन्हीं फारसी आर्यों की एक शाखा ने पुनः पूर्व की ओर बढ़ते हुए अफगानिस्तान होते हुए सिंधु तक पहुंचकर सिन्धु घाटी की सभ्यता का विनाश कर भारत को अपना निवास बनाया यहीं आकर उन्होंने अपने वेद वेदांगो की रचना की। वेद और अवेस्ता के भीतर भाषाई साम्य और देवताओं की समानता दोनों के पूर्वजों के कभी साथ रहने और एक ही मूल के होने को प्रकट करती है।

वेद का अवेस्ता के साथ जैसा भाषायी साम्य है वैसा यूरोपीय भाषाओं ग्रीकलेटिन फ्रेंच जर्मन और रूसी के साथ भी है। इससे निष्कर्ष निकाला कि उपर्युक्त सभी भाषायें एक ही भाषा परिवार की हैं और उन सब बोलने वाले के पूर्वज अतीत में साथ-साथ मध्य एशिया में रह चुके हैं। जैसे उनकी एक शाखा ईरान, फिर भारत पहुंची वैसे मध्य एशिया की अन्य शाखाओं ने पश्चिमी और दक्षिणी यूरोप पर आक्रमण कर वहां वहां साम्राज्य निर्माण कर के सम्पूर्ण यूरोप में फैल गई। तात्पर्य यह कि आपके, फारस के और भारतीय आर्यों के पूर्वज समान हैं, जो मध्य एशिया मूल के थे। देखों मूल की खोज है या मूलोंच्छेद, आप ही सोचिये।

आगे हम उपर्युक्त विभिन्न मतों की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत करते हैं। हमारी डेन्यून नदी की घाटी को आर्यों का मूल स्थान मानने पर हमारा कथन है, वे सब वनस्पतियां और सब जीव-जन्तु हंगरी में पाये जाते हैं/थे, यह सिद्ध नहीं है, तथा वे भौगोलिक परिस्थितियाँ दक्षिणी रूस

पौलेण्ड यूक्रेन और भारत में भी पाई जाती है। पुनः जिस मध्य यूरोप में मूल स्थान की कल्पना की है, वह तो दो हजार वर्ष पूर्व तक जंगलों से पटा पड़ा था। आगे जो विद्वान नस्ल शरीर गठन को आधार मानते हैं, कहा जा सकता है कि मानव जाति के सुदीर्घ इतिहास में बहुत अधिक संकरण हो जाता है अतः किसी विशुद्ध नस्ल का पाया जाना ही असम्भव है। चरागाहों की उपलब्धि पर जो मत आधारित हैं उनसे कोई एक स्थान चिह्नित नहीं होता पुनः इस दृष्टि से भारत को क्यों अलग रखा जाये। दक्षिण रूस की समाधियां आर्यों की ही है यह भी सिद्ध नहीं। कल्पनाओं, सम्भावनाओं की तो कोई सीमा ही नहीं होती।

मध्य एशिया के पक्ष में आज सबसे प्रभावशाली आधार भाषा विज्ञान का माना जा रहा है। यहां दो बातें विचारणीय हैं - (१) भाषाओं में दस बीस या सौ दो सौ शब्दों के साम्य को भाषा साम्य नहीं माना जा सकता, विशेषकर संस्कृत के संदर्भ में जिसकी शब्दावली करोड़ों से पार हो और जिसमें संसार भर की भाषाओं की कुछ न कुछ विशेषताएं पाई जाती हैं। (२) भाषायी एकता की तलाश मध्य एशिया भारत और यूरोप तक ही क्यों सीमित रखी जाये। मानव मात्र के पूर्वज आखिर एक थे, तब उनकी भाषा भी एक ही थी तो उनमें भाषा साम्य का मिलना सामान्य बात है, विशेष नहीं। इस साम्य के प्रकाश में कोई नस्ल मध्य एशिया से फारस होकर भारत पहुंच सकती है तो इसके उलट भारत से चलकर फारस और मध्य एशिया होकर यूरोप क्यों नहीं पहुंच सकती। इस निर्णय में भाषा विज्ञान आड़े नहीं आ सकता। यह भी विचित्र सोच है कि आर्यों ने वेदों की रचना भारत पहुंचने के पश्चात् की थी। क्यों? पहले की मान लेते तो उनके समक्ष प्रश्न उपस्थित होता कि भारत के नदी और पहाड़ों के नाम कहां से प्राप्त कर लिये। खैर! विचित्र सोच का बड़ा नमूना देखिये आर्यों ने वेदों में जिन वनस्पतियों और पशु-पक्षियों का वर्णन किया वे तो बाहर के अपने मूल स्थान के हैं परन्तु जिन नदियों और पर्वतों का वर्णन किया वे सब भारत के हैं। कैसा गोरखधन्धा है?

विदेशी के पक्ष में एक तर्क यह दिया जाता है कि यदि भारत आर्यों का मूल निवास होता है तो वे सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में आर्य सभ्यता का विकास करते परन्तु दक्षिण में पृथक द्रविड़ सभ्यता पाई जाती है। अब इन्हें कौन समझाये कि आर्य द्रविड़ पृथकत्व का झगड़ा आपके चश्मे के ही कारण है। अन्यथा दक्षिण की भाषायें उत्तर की अपेक्षा संस्कृत के अधिक निकट हैं, दक्षिण सहित सब भारतीय भाषाओं में ध्वनि साम्य है, लिपियां ध्वन्यात्मक हैं, वेदों के सस्वर प्रकृति विकृति पाठ की ओर वैदिक कर्म-काण्डों की परम्परा आज तक दक्षिण में जीवित है जब कि उत्तर से कब की उठ चुकी है। फिर दक्षिण सभ्यता अलग कैसे? मूल बात तो यह है कि आर्य शब्द गुण वाचक है जबकि द्रविड़ शब्द स्थान वाचक है इस कारण आर्य का विरुद्धार्थी द्रविड़ नहीं है। जैसे पंजाबी, सिन्धी और गुजराती व्यक्ति आर्य होता है वैसे द्रविड़ भी होता है और है। पर कैसा न्याय है कि मध्य एशिया और यूरोप को तो भारतीय सभ्यता के निकट ठहराया जबकि बगल में लगे दक्षिणावर्त को हम से दूर धकेल दिया। जो आर्य काकेशस पर्वत, फारस, अफगानिस्तान और सिन्धु को पार का भारत में आ धमके, यूरोप में पहुंचे तो सम्पूर्ण यूरोप पर छा गये। परन्तु दक्षिण भारत की ओर मुह फेरते ही कौन सी लक्ष्मण रेखा प्रकट हो गई? पर क्यों न हो जब न्यायाधीश भी वही और गवाह भी उनके।

बहुत से भारतीय इतिहास विदों- गंगानाथ झा, डी.एस. त्रिवेदी, एल.डी.काला, अविनाशचन्द्र दास, राजवली पाण्डेय आदि ने आर्यों को मूल स्थान भारत ही बताया है। इस पर कहा गया कि यह तो यूरोपीय विद्वानों के विरोध में प्रतिक्रिया है। चलो प्रतिक्रिया ही सही। प्रश्न यह है कि इसमें दोष कहां है। फिर यूरोपीय विद्वान अपने गिरहबान में क्यों नहीं झांकते कि वहीं पहले प्रतिक्रियावादी हैं। अंग्रेज भारत के सत्ता के सिंहासन पर भले ही विराजमान हो गये पर भारत के हृदय सिंहासन पर नहीं। उनको फिरंगी और गो रांग ही पुकारा जाता रहा। उनके साथ खानपान और सम्पर्क को पाप माना गया। तभी तो मद्रास के गवर्नर चार्ल्स ट्रेवेलियन ने पार्लमेंट्री कमेटी के समक्ष मेकाले की नीति का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए कहा था, "सौभाग्य से इनके (भारतीयों के) ग्रन्थ क्लिष्ट भाषा में लिखे हुए हैं। यदि इन भाषाओं के पुनर्जीवन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनाई जाये तो यह मुसलमानों को हमेशा यह स्मरण करायेगी कि हम (अंग्रेज) काफिर है और हिन्दुओं को याद दिलायेगी कि हम अस्पृश्य पशु हैं, जिनके साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखना लज्जास्पद एवं घातक है।" यह चुनौती गो रांग प्रभु के सामने थी। प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय गो रव गुमान को सर्वथा उखाड़ फैंकने के लक्ष्य से भारतीय प्राचीन शिक्षा का पूर्ण बहिष्कार कर यह कल्पित इतिहास घड़ा कि तुम्हारे हमारे पूर्वज एक थे। उन्होंने आर्यों को बर्बर लड़ा के ठहराया था। वे जहां-जहां गये वहां की प्राचीन सभ्यताओं को मटियामेट किया। भारत आये तो भिड़ते ही सिन्धु घाटी की सभ्यता को ध्वस्त कर डाला और यहां के मूल निवासियों को दक्षिण में खदेड़ दिया। इस एक तीर से अंग्रेज ने दो शिकार किये। (१) यदि भारत में अंग्रेज विदेशी आक्रान्ता है तो पहला विदेशी आक्रान्ता हिन्दू है। (२) भारतीयों और अंग्रेजों के समान पूर्वज मध्य एशिया के रहे हैं अतः जैसा भारत भारतीयों का भी, वैसा अंग्रेजों का भी है।

इस सिद्धांत के प्रस्तुतकर्ता प्रथम तो अपने इस भ्रम का निराकरण कर लें कि बाहरी देश पर आक्रमण करना वहां की सभ्यताओं को मिटाना क्या आर्यों की प्रकृति में सम्मिलित है। आर्य सम्राटों का बाह्य देश पर आक्रमण का इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता और भीतर भी जिसे जीता उसी के वंशज का स्वयं राजतिलक कर दिया, ऐसे ढेरों गो रवपूर्ण दृष्टान्त भरे पड़े हैं। राम ने रावण को मारकर राजतिलक विभीषण को और बालि का वध करके सुग्रीव को किया। कृष्ण ने भी कंस का वध कर अग्रसेन को सिंहासन दिया। उदाहरण बहुत है और यह सिद्धांत नीति ग्रन्थों से अनुमोदित है।

इतने पर भी जो सज्जन आर्यों को विदेशी हमलावर ही मानने का दृढ़ करते हैं उन्हें निम्न प्रश्नों का तथ्यात्मक उत्तर देना चाहिए।

(१) अंग्रेजों सहित यूरोपियों के भारत आगमन के पूर्व अरब, तुर्क अफगान और मुगल भारत में सत्ता स्थापित कर यहां राज्य कर चुके थे और उन्होंने अपने इतिहास भी लिखवाये दरबारी इतिहास लेखकों ने हिन्दुओं को काफिर और कुत्ता तक लिखा पर विदेशी नहीं लिखा। क्यों?

(२) सब जातियाँ अपनी महान विजयों की स्मृतियां संजोकर रखती है और विजेता सेनानियों पर गर्व करती है पर आर्यावर्त्त की विजय

का ब्यौरा हिन्दुओं के किसी प्राचीन या मध्यकालीन ग्रन्थ में उल्लेखित नहीं। क्यों?

(३) सब जातियाँ अपने मूल स्थान के प्रति ममता आस्था रखती है और उसे पवित्र मानकर तीर्थ यात्रा करती है पर आर्यों का कोई तीर्थ न तो भारत के बाहर स्थित है और न धर्म ग्रन्थों में उल्लेखित। क्यों? इसके उलट समुद्री यात्रा कर देश के बाहर जाना पाप माना गया।

(४) कोई आक्रान्ता बाहरी देश को विराजित कर उसे अपनी सम्पत्ति तो मानता है पर उसमें अपना पूज्य भाव नहीं रखता, जबकि आर्यों ने वेदों में गंगा आदि भारतीय नदियों को भावभीने शब्दों में माता कहकर पुकारा है :-

सरस्वती सरयुः सिन्धुर्मिभिः महोमहिस्वसायन्तु वक्षणीः।
देवीरापो मातरः सूदयत्नवो, घृतवत् पयो मधुमन्नो अर्चत।
-ऋ. १०/६४/९

इमं में गंगे यमुने सरस्वती शुतुद्रि सतोमं सचता पुरुष्ण्या।
असिकन्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जिकीये श्रृणुह्या सुषोमया।।
- ऋ. १०/७५/५

आखिर आक्रान्ता आर्यों का अपने विजित देश की नदियों के प्रति ऐसा भक्ति भाव किस विवशता से उत्पन्न हो गया और क्यों? महाकाव्यों और परवर्ती काव्यों में भी वहीं परम्परा जीवित रही।

अपि स्वर्ण मयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी।। -वा. रामायण

यह प्रसिद्ध श्लोक पुराण का है-

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूते भवन्तिभूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

भारत भूमि के प्रति ऐसी भावांजलियां आक्रान्ता आर्यों द्वारा क्यों?

(५) आर्य कहीं से भी आये हों उनके आगमन के पूर्व इस देश का नाम क्या था बताये? यह कैसे सम्भव है कि यहां जो लोग पूर्व से रहते थे पर उनके देश का कोई नाम ही नहीं था। ध्यान रहे ब्रह्मावर्त, आर्यावर्त और भारत वर्ष नाम तो आर्यों ही के दिये हैं।

हिन्दू ही नहीं जैन बौद्ध ग्रन्थों में भी सर्वत्र आर्य शब्द का सगर्व प्रयोग प्राप्त होता है। उनके विदेशी होने की कहीं कोई चिन्ह नहीं, उन्हें जन्म से विदेशी की घुट्टी पिलाकर स्वाभिमान खण्डित करने के सिवाय फूट डालने का भी षड्यंत्र किया गया है। फूट डालो और राज करो नीति के प्रयोक्ताओं के इस अविष्कार में असम्भव क्या है? मैकाले और उसके अनुगामियों के पत्रों और नीतियों से गो रांगो का काला मानस भलिभांति प्रकट है। परन्तु भारतीय जन भी इसमें निर्दोष नहीं। अपने घर में हमें आक्रान्ता कहना गाली और थप्पड़ खाने से कम नहीं और हम हैं कि कान पर जूं नहीं रेंगती। अन्तिम बात इतिहास को गड़े मुर्दों का विषय की मानसिकता कलंक है। इतिहास की रक्षा करो, इतिहास आपकी रक्षा करेगा यदि नहीं तो इसका उलट सुनिश्चित है।●

वैदिक संस्कृति तथा पश्चिमी सभ्यता का तुलनात्मक दृष्टिकोण

- खुशहालचन्द्र आर्य -
१८० महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
चलभाष - ०९८३०१६५७९४

वैदिक संस्कृति का आधार जहां संयम, सदाचार,
उदारता, दया, करुणा, सरलता व त्याग है।
वहीं पश्चिमी सभ्यता का आधार काम, भोग,
वासना, विलासिता व नग्नता के प्रति रखना अनुराग है।।
वैदिक संस्कृति अमृत तुल्य दूध देने वाली गाय है,
तो उनकी सभ्यता विष डंक मारने वाला काला नाग है।
वैदिक संस्कृति मीठी बोलने वाली कोयल है,
तो उनकी सभ्यता नमक- मिर्च- खटाई का साग है।
उनकी सभ्यता भीषण ग्रीष्म पड़ने वाली दोपहर है,
तो वैदिक संस्कृति मधुमास का महीना फाग है।
उनकी सभ्यता कांटों भरा जंगल है तो,
वैदिक संस्कृति गुलाब, चम्पा, चमेली के फूलों का बाग है।
वैदिक संस्कृति जहां जीते जी लाती आनन्द का रस है तो,
उनकी सभ्यता मृत्यु के बाद आने वाला झाग है।
उनकी संस्कृति प्रदूषण फैलाने वाली मोमबत्ती है तो,
वैदिक संस्कृति गऊ के घी से जलने वाला चिराग है।
उनकी सभ्यता जहां विषय भोगों में फंसाना सीखाती है,
वहीं वैदिक संस्कृति सीखाती करना ईश्वर से अनुराग है।
सर्वेभन्तु सुखिनःका पाठ वैदिक संस्कृति पढ़ाती और सीखाती,
न करो किसी से ईर्ष्या, द्वेष घृणा और राग है।
उनकी सभ्यता मन को दुखी और अशान्त बनाती,
तो वैदिक संस्कृति बनाती सब को खुशी से बाग-बाग है।
वैदिक संस्कृति परिश्रमी और चरित्रवान बनाती,
उनकी सभ्यता पर लगा चरित्रहीनता का दाग है।
पर दुःख है हमारे भोले-भाले वनवासी भाई-बहनों में,
लगी हुई धर्म परिवर्तन की भागम-भाग है।
कारण उनकी गरीबी का लाभ उठाकर,
देकर लोभ-लालच बना रहे उन्हें ईसाई, यह हमारा दुर्भाग्य है।
अब हमें मिटाने होंगे उनके अभाव, देना होगा बराबर का सम्मान,
इसके लिए मिटाना पड़ेगा हमें जातिवाद है।
तब हमारे वनवासी भाईयों में जागेगा स्वाभिमान,
नहीं बनेंगें विधर्मी, रखते स्वधर्म में ही अनुराग हैं।
सब आर्य नर-नारी मिलकर करेंगे देश उत्थान का काम,
तब समझो उदय होगा देश का सौभाग्य है।
तभी बढ़ेगी समृद्धि, बचेगी अस्मिता, बनेगा देश पुनः विश्वगुरू,
तब गायगा '**खुशहाल**' वहीं पुराना वैभव भरा राग है।●

पाकिस्तान बनाने की, मांग दिवस की ७७वीं वर्षगांठ २३-३-२०१७)

- इन्द्रदेव गुलाटी -
संस्थापक-सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्दशहर, (उ.प्र.)
चलभाष- ०८९५८७७८४४३

- २३ मार्च १९४० क़ो मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में, देश विभाजित करके, पश्चिम तथा पूर्व में, मुस्लिमों के लिए अलग देश बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया था।
- प्रस्तावित देश का नाम पाकिस्तान स्वीकार किया। उसमें पूरा पंजाब - पूरा बंगाल - पूरा जम्मू कश्मीर भी मांगा गया था।
- मुस्लिम लीग ने दंगे - फसाद करके कांग्रेस को धर्म के आधार पर विभाजन स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया।
- यदि १९४५-४६ के चुनावों में मुस्लिम लीग को १०-१५ प्रतिशत ही वोट मिली होती तो विभाजन रूक सकता था।
- मुस्लिमों ने मुस्लिम लीग को ९३ प्रतिशत वोट देकर उसका मनोबल बढ़ा दिया।
- कांग्रेस को केवल ०७ प्रतिशत वोटें मुस्लिमों ने दी फिर भी गांधी-नेहरू ने कहा कि विभाजन का दोषी अंग्रेज है। मुस्लिम नहीं।
- पाकिस्तान बनाने के लिए सीमा निर्धारण आयोग बनाया गया। यह एक सदस्यीय आयोग था। इसका निर्णय मानने के लिए कांग्रेस व मुस्लिम लीग सहमत हो गई।
- इसका अध्यक्ष लन्दन के वकील सर सिरिल रेडक्लिफ बनाए गए जो मो. अली जिन्ना के जूनियर रह चुके थे। इनसे इंसाफ मिलने की आशा कम थी। ये जिन्ना को लाभ पहुंचा सकते थे, यहीं उन्होंने किया भी।
- कांग्रेस को स्वतन्त्रता देखने की जल्दी थी इसलिए उसने रेडक्लिफ की अध्यक्षता स्वीकार करके गलती की। उसे कहना चाहिए था कि किसी दूसरे को अध्यक्ष बनाया जाए जिसका जिन्ना से सम्बन्ध रहा हो।
- इंग्लैण्ड के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने आयोग को मौखिक संदेश भिजवाया था कि लाहौर भारत को दिया जाए।
- जब ४९ प्रतिशत मुस्लिम आबादी होने पर कराची नगर पाकिस्तान को दिया गया तब ४७ प्रतिशत हिन्दू आबादी होने पर लाहौर भारत को मिलना चाहिए था।
- नेहरू ने इस बारे में रैड क्लिफ से भेंट वार्ता करने में रुचि नहीं ली। यदि ली होती तो लाहौर का विभाजन हो सकता था तब पश्चिमी लाहौर पाकिस्तान को मिलता और पूर्वी लाहौर भारत को मिलता।

प्रतिक्रिया

- कांग्रेसी नेता स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़कर थक चुके थे इसलिए वे स्वतन्त्रता ज्यादा जल्दी चाहते थे।
- इंग्लैण्ड का विचार ३०-६-१९४८ तक स्वतन्त्रता देने का था।
- नेहरू ने जल्दबाजी में स्वतन्त्रता का दिन १५-८-१९४७ निश्चित करा लिया।
- कांग्रेस तो पूरा पंजाब और पूरा बंगाल भी देने को सहमत हो रही थी जबकि अकाली दल के मास्टर तारासिंह के प्रयास से पूर्वी पंजाब तथा हिन्दू महासभा के डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के प्रयास से पश्चिम बंगाल भारत को मिला।
- जब कमीशन ने भारत से कहा कि कोलकाता ले लो या लाहौर। तब कांग्रेस ने तुरन्त कोलकाता के लिए हां कर दी जबकि उसे उत्तर देना चाहिए था कि जब हम कराची दे रहे हैं तब लाहौर हमें मिलना चाहिए। अच्छी बहस करने पर लाहौर का पूर्वी भाग हमें मिलता और पश्चिमी भाग पाकिस्तान को।

राजेश गोयल, महामन्त्री-सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्दशहर (उ.प्र.) मो. ९६३४७३५९२९

इन्द्रदेव जी गुलाटी बुलन्दशहर (उ.प्र.) द्वारा विभिन्न संस्थाओं को पौष तथा माघ माह में दान/सहयोग

●अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	१००१
●नारायण सेवा संस्थान, हिरण मगरी, सेक्टर-४, उदयपुर	५०००
●हिन्दू सभा वार्ता (साप्ताहिक) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	३०००
●स्वामी दयानन्द संस्थान, दिल्ली	२००
●ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय समाचार, बिजनौर	३५०
●स्वामी विश्वात्मानन्द सरस्वती (अद्वैतवाद पर प्रवचन)	२००
●ए.के.पी.(पी.जी.) कॉलेज, खुर्जा की स्वर्ण जयन्ती पर दान	५०१
●आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के वार्षिकोत्सव पर	१००१
●डी.ए.वी. कॉलेज, बुलन्दशहर की ६० वीं वर्षगांठ पर	१००१
●गुरु गोविन्द सिंह के प्रकाशोत्सव पर दान	५००
●राष्ट्रीय कोहिनूर साप्ताहिक एटा को सहयोग	१५००
●गुप्त दान	५००
●अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	५००
●हिन्दू सभा वार्ता (साप्ताहिक) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	७५०
●आर्य प्रादे. प्र.सभा/आर्य जगत् सा. मन्दिर मार्ग नई दिल्ली	२२००
●आर्य कन्या इन्टर कॉलेज चौक बाजार, बुलन्दशहर	५०१
●दि मॉरल (साप्ताहिक) २५/१६, कराची खाना, कानपुर	५००
●गुप्त दान	२००
●श्री आनन्देश्वर मन्दिर दाल मण्डी के सामने, बुलन्दशहर	१००१
●नगर आर्य समाज ५/९१, लक्ष्मी नगर, बुलन्द शहर	५०१
●श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महा., चोटीपुरा (अमरोहा)	२५००
●राष्ट्रीय कोहिनूर (साप्ताहिक), एटा	१०००
योग-	२१६८७

गायत्री महायज्ञ एवं वैदिक सत्संग

दिनांक १३ से १५ मई २०१७

गायत्री महायज्ञ समिति खाचरौद तथा आर्य समाज खाचरौद जिला उज्जैन (म.प्र.) के तत्वावधान में तीन दिवसीय आयोजन आयोजित किया जा रहा है। अतः वैदिक धर्मनिष्ठ समस्त आर्यजन आंमित्रत हैं।

आमंत्रित विद्वान–सुश्री अंजलि आर्य

सम्पर्क- सदाशिव सगीत्रा, चलभाष- ९८२७६९४९२९

चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

दिनांक ३१ मई से ४ जून २०१७ तक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में युवकों हेतु जिला स्तरीय चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सिहोर जिला मुख्यालय पर इंग्लिशपुरा में स्थित नूतन हायर सेकण्डरी स्कूल, सिहोर (म.प्र.) में किया जा रहा है। जिसमें युवकों के सर्वांगिण विकास हेतु विविध गतिविधियां संचालित की जावेगी। समस्त युवाओं एवं आर्यजनों से विनम्र आग्रह है कि इस शिविर का लाभ उठावें तथा शिविर व्यवस्था में अपना सहयोग तन-मन-धन से प्रदान करें. शिविर शुल्क ३००/- रुपये निर्धारित हैं। अतिथियों एवं शिविरार्थियों की भोजन विश्राम का उचित प्रबन्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें। धन्यवाद

संपर्क - ९८२६४७८२९५, ८०८५१५९९८०
९००९२२५५८०, ८६०२४३७७९७

गायत्री महायज्ञ एवं संगीतमयी श्रीराम कथा

दिनांक ९ से १५ मई २०१७ तक

ग्राम- विक्रम नगर (मौलाना), जिला- उज्जैन (म.प्र.) के वार्षिकोत्सव पर आयोजित समस्त कार्यक्रमों में समस्त आर्यजन सादर आमंत्रित है।

गायत्री महायज्ञ- दिनांक ९ से १५ तक प्रातः ८ बजे

संगीतमयी श्रीराम कथा- प्रातः १० से १ बजे तक

(पं. कुलदीप जी आर्य, बिजनौर द्वारा)

विविध सम्मेलन एवं विविध विषयों पर अनेक विद्वानों के व्याख्यान- रात्रि- ८ बजे से १० तक

सम्पर्क- लक्ष्मीनारायण पाटीदार,

उप प्रधान–मध्य भा. आर्य प्रति. सभा, चलभाष- ९८२७०७८८८०

९१वां ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ

दिनांक ६ से १२ अप्रैल २०१७ तक

स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती 'योगी' द्वारा स्थापित पांतजल योगधाम आर्य नगर, ज्वालापुर, हरिद्वार में दिनांक ६ से १२ अप्रैल तक ९१वां ध्यान योग शिविर तथा सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन **स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता** में आयोजित किया जा रहा है। आर्यजनों से विनम्र अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर लाभ प्राप्त करें।

पंजीकरण तथा विस्तृत जानकारी हेतु ९८९७८०४१३३ पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ ३३ का शेष भाग **वेद वेदाङ्ग...**

८. अवकाश के बाद सही समय पर आश्रम न पहुंचने पर पहले आर्थिक दण्ड, बाद में श्रमदण्ड तथा अधिक विलम्ब करने पर आश्रम से निष्कासित किया जा सकता है।

९. अपनी वस्तुओं को साफ सुथरा व सुरक्षित रखना छात्र का उत्तरदायित्व होगा। वस्तुओं को इधर-उधर करने पर पुनः उस वस्तु से वंचित होना पड़ेगा।

अभिभावकों से निवेदन :-

मोह को दूर न कर सकें तो बच्चों को गुरुकुल में न भेजें।

यदि नौकरी कराना ही आपका उद्देश्य हो तो कृपया गुरुकुल में प्रविष्ट न करावें। हम नौकरी की गारन्टी नहीं ले सकते।

अपने नौनिहालों को चरित्रवान, वेदशास्त्रों-वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञाता, सुयोग्य विद्वान् बनाने के लिए ही गुरुकुल में भेजें। हमारे ऊपर विश्वास न हो तो कृपया गुरुकुल में प्रविष्ट न करें।

प्रत्येक कार्य को करने में धन की आवश्यकता होती है। यद्यपि आपसे प्राप्त वृत्ति से ही हमारा काम नहीं चलता पुनरपि क्योंकि हम आपके बच्चों की सुविधा एवं हित के लिए ही सब कुछ करते हैं। अतः निर्धारित शुल्क यथासमय श्रद्धापूर्वक आश्रम में जमा करा दें।

बच्चों से अधिक सम्पर्क रखने का प्रयत्न न करें। महीने में केवल एक बार ही किसी रविवार को प्रातः ९ से १२ तथा सायं ४ से ६ बजे तक फोन पर बात कर सकेंगे। तथा ६ महीने में एक बार ही बच्चों से मिल सकेंगे। अपने रिश्तेदारों को गुरुकुल के फोन नम्बर न दें। न उन्हें मिलने के लिए यहां भेजें। रिश्तेदारों के फोन तथा उनसे मिलने पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा। बालक यदि बिना बताये बिना किसी सूचना के आश्रम से बाहर या घर जाता है तो उसके जिम्मेदार आप स्वयं होंगे। अतः सोच-समझकर बच्चों को समझाकर ही आश्रम में प्रविष्ट करें।

- डॉ. शिवदत्त पाण्डेय

हौसला

सफर कैसा भी हो, उसमें बाधाएँ आती ही हैं, लेकिन हौसले वाले उन बाधाओं की परवाह नहीं करते हैं। वे रास्ते के रोड़ों को कामयाबी के शिखर पर चढ़ने की सीढ़ियां बना लेते हैं और उन सीढ़ियों पर चढ़ते हुए वे मंजिल को पा लेते हैं। ऐसे ही साहसी एवं लग्न के धनी लोग दूसरों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बनते हैं।

आ. रामगोपाल सैनी
फतेहपुर (राज.)
चलभाष - ९८८७३९३७१३

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद में उपदेशक-महाविद्यालय/विभाग का शुभारम्भ

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद में पूज्य आचार्य सत्यसिन्धु आर्य (प्रधानाचार्य गुरुकुल) के जन्मोत्सव स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर दि. १० जून २०१७ से उपदेशक-महाविद्यालय/विभाग का शुभारम्भ किया जा रहा है।

उद्देश्य व नियमावली - इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आर्य जगत् के लिए उपदेशक व प्रचारक तैयार करना है इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम दशमी कक्षा उत्तीर्ण, कम से कम १८ वर्ष के स्वस्थ लग्नशील चरित्रवान् युवा अपेक्षित हैं। यह पाठ्यक्रम त्रिवर्षीय है। इसमें निम्न उपाधियां प्रदान की जावेंगी। (१) सिद्धान्तप्रवेशक:, (२) सिद्धान्ताधिकारी, (३) सिद्धान्तभास्कर, (४) सिद्धान्तप्रभाकर, (५) सिद्धान्तवाचस्पति, (६) सिद्धान्तमार्तण्ड। प्रत्येक छः-छः मास में लिखित व मौखिक परीक्षा लेकर क्रमशः उपरोक्त उपाधियों में से एक प्रमाण पत्र सहित प्रदान की जावेगी।

प्रवेश नियम :- १ प्रवेशार्थी युवक कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १८ वर्ष का वयस्क पूर्ण अनुशासन में चलने वाला होवे।

२. युवक का लिखित व मौखिक परीक्षण किया जाएगा। परीक्षण में संतुष्ट होने पर ही गुरुकुल के आचार्य के द्वारा प्रवेश की अनुमति दी जा सकेगी।

३. प्रवेशार्थी सर्वांग, स्वस्थ, आज्ञाकारी, अनुशासनप्रिय, विनम्र पुरुषार्थी होवे।

४. समस्याशील युवक (व्यसनी व अतपस्वी) प्रवेश का विचार ही न रखें।

५. वर्तमान में उत्तीर्ण कक्षा की अंकसूची की मूल प्रति साथ में लाएं।

६ गम्भीर रोग एवं अनुशासनहीनता करने पर शिक्षार्थी को वापस भेज दिया जावेगा।

७. अध्ययनकाल में भोजन आदि की व्यवस्था सब छात्रों के लिए समान रूप से गुरुकुल द्वारा निःशुल्क की जायेगी।

८. अध्ययनकाल में घर जाने का कोई अवकाश नहीं होगा। माता-पिता आदि बिना अनुमति के नहीं मिल सकेंगे।

९. गुरुकुल के योग्य आचार्यों द्वारा छात्रों को प्रशिक्षण दिया जावेगा और प्रत्येक दो माह में पंच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन एक विशेषज्ञ के निर्देशन में किया जायेगा।

१०. अध्ययनकाल में निजी रूप से मोबाइल आदि रखना निषिद्ध रहेगा।

११. प्रवेशार्थी को २६ अप्रैल तक गुरुकुल में पहुंचना होगा।

१२. अध्ययनकाल में गुरुकुल परिसर में बाहर जाने की अनुमति लेनी अनिवार्य होगी।

१३. प्रशिक्षुक को गुरुकुल की दिनचर्या के सभी नियमों का पालन करना होगा।

१४. प्रशिक्षुक के पास कोई धनराशि नहीं रहेगी। आचार्य ही आवश्यकतानुसार छात्र पर खर्च करेंगे।

१५. प्रशिक्षुक के सर्वांगिण विकास हेतु योग आसन प्राणायाम व्यायाम क्रीड़ा संगीत व उचित अध्ययन की व्यवस्था रखी गई है।

१६. छात्रों से कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा छात्रों को गुरुजनों से विद्या विनम्रतापूर्वक ग्रहण कर लेनी चाहिए।

१७. छात्र उपदेशक महाविद्यालय द्वारा निर्धारित उपाधि विद्यामार्तण्ड तक पढ़ने का दृढ़ विचार रखें।

१८. इस वर्ष केवल १० छात्रों को ही प्रवेश दिया जायेगा। इसलिए प्रवेश के इच्छुक युवा गुरुकुल को पूर्व में ही सूचित कर देवें।

१९. अध्ययनकाल में छात्रों को मौखिक व लिखित परीक्षा देनी होगी तथा आचार्यों द्वारा क्रियात्मक अभ्यास भी कराया जावेगा।

२०. प्रवेशार्थी युवक अविवाहित हो। हिंसा, असत्य, चोरी, ब्रह्मचर्य विरोधी आचरण, अभिमान, छलकपट का आचरण सर्वथा छोड़ देना होगा। तप-सहनशीलता को जीवन का अंग माने।

२१. श्वेत कटिवस्त्र, उत्तरीय धोती कुर्ता एवं लंगोट कच्छा आदि सादे वस्त्र ही धारण करें। फैशन से सर्वथा दूर रहें।

२२. दाढ़ी मूंछ व सिर के केश बिना कटाए जटिल रहे या सिर पर शीखा रखकर सब बाल प्रत्येक मास कटाकर मुंडित रहें।

दूरभाष क्र. ९४२४४७१२८८, ९९०७०५६७२६

७५वीं वर्षगांठ पर रु. ७६ हजार का दान

कई लोग अपनी ५०वीं या ७५वीं वर्षगांठ अथवा विवाह की २५ वीं या ५०वीं वर्षगांठ अनावश्यक खर्च करते हुए बड़ी नौटंकीपूर्वक मनाते हैं। परन्तु सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र) के प्रसिद्ध मुद्रितशोधक (हिन्दी,मराठी, संस्कृत के प्रूफ रीडर), आर्य समाज रामनगर, लातूर के मंत्री तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित सदस्य पं. ज्ञानकुमार आर्य ने अपनी आयु के ७५वें वर्ष में (२०१६ में) ऐसी फिजुलखर्ची न करते हुए प्रसिद्धि से दूर रहकर निम्न प्रकार अपना दान सत्कार्य में लगाकर सामाजिक उत्तरदायित्व निभाया है। दानराशि इस प्रकार है -

- म.आ.प्र. सभा द्वारा मार्च, १६ में स्थापित १५ ज्येष्ठ आर्य सेवक गो रव स्थिर निधियों के लिए रु. २८,०००
- आर्य समाज नेपाल के अन्तरर्राष्ट्रीय महासंम्मेलन तथा भवन निर्माण के लिए रु. ३,०००
- गुरुकुल केहलारी (खंडवा- म.प्र.) के १ छात्र के भोजन खर्च तथा संगणक के लिए रु. ३४,५००
- आर्य समाज बिबराळ तथा आ.स. बोटकूळ, जि. लातूर के भवन निर्माण के लिए रु. १०,०००
- आर्य समाज संभाजीनगर (महाराष्ट्र) के लिए रु. ५००

कुल रु. ७६,०००

श्री आर्य का देवऋण से उऋण होने का यह कार्य तथा यज्ञ के 'इदन्न मम' की त्याग-भावना का आदर्श उदाहरण अन्यों के लिए निश्चित ही अनुकरणीय है।

चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रूखाबाद के प्रधान तथा ऋषि मिशन को समर्पित वेदों के प्रकाण्ड विद्वान पूज्य आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री के नेतृत्व में मेला रामनगरिया पांचाल घाट फर्रूखाबाद में दिनांक १४ जनवरी से ११.फरवरी २०१७ तक निरंतर एक माह तक चलने वाले चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान, संन्यासी एवं भजनोपदेशकों ने निरन्तर वेदज्ञान की धारा प्रवाहित कर वैदिक धर्म, सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया। शिविर के अंतर्गत आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी के सान्निध्य में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अनेकों प्रशिक्षणार्थियों ने पौरोहित्य कार्य में दक्षता प्राप्त की। इसके साथ-साथ गो, गंगा, गायत्री रक्षार्थ सन्त सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें आये सभी सन्तों ने एक स्वर में वैदिक सिद्धांतों पर जोर दिया। इसी के साथ वेद, युवा, शिक्षा, आर्य कार्यकर्ता एवं नारी सशक्तिकरण आदि विषयों पर विविध सम्मेलनों का आयोजन किया गया। साथ ही साथ आर्य वीरदल युवा प्रशिक्षण शिविर में आर्यवीर दल फर्रूखाबाद के अधिष्ठाता संदीप आर्य ने युवाओं को आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण का प्रशिक्षण दिया। शिविर में बसंत पंचमी के अवसर पर विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें कई प्रांतों के आर्यों ने भाग लेकर वैदिक धर्म का शंखनाद किया। शिविर में दिनांक ०५.०२.२०१७ को राष्ट्र रक्षा विषय पर विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के सुविख्यात कवि एवं कवियित्रियों ने राष्ट्र रक्षा पर काव्य रस की धारा प्रवाहित की। कार्यक्रम की लोकप्रियता से प्रभावित होकर प्रमुख समाचार पत्रों एवं मीडिया चैनलों ने प्रमुख रूप से शिविर के कार्यक्रमों का प्रसारण किया तथा शासन प्रशासन के लोगो का भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहा।

समापन अवसर पर बोलते हुए आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री ने कहा कि इस गंगा के तट पर स्वामी दयानन्द ने सात बार आकर वैदिक धर्म प्रचार की जो प्रारम्भिक ज्योति जलाई उसी का अनुशरण करते हुए चरित्र निर्माण शिविर निरन्तर छः वर्षों से नित नए आयामों को प्राप्त कर रहा है तथा वैदिक सिद्धान्तों का प्रसार कर रहा है। आज इसकी लोकप्रियता विभिन्न संचार माध्यमों द्वारा सारे देश-विदेशों तक फैल रही है।

शिविर के व्यवस्थापक श्री प्रमोद कुमार आर्य तथा संयोजक डॉ. शिवराम सिंह आर्य, डॉ. हरिदत्त द्विवेदी, मुन्ना यादव, धर्मवीर आर्य, सुरेशचन्द्र आर्य आदि ने सभी आगन्तुक विद्वानों व अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान, स्वामी शिवानन्द जी (गाजियाबाद), स्वामी ब्रह्मवेश जी (पंजाब), स्वामी निर्भयानन्द जी, आचार्य विष्णुमित्र जी वेदार्थी, आचार्य अवधेश जी, आचार्य सत्यपाल जी, आचार्य अर्जुन देव जी, आचार्य योगेश जी शास्त्री, आचार्य अरविन्द जी, आचार्य धारणा जी (कन्या गुरुकुल रुद्रपुर), पं. अशोक शास्त्री जी, आचार्य सूर्यदेव देवांशू जी, पं. सतीश जी शास्त्री, ब्रह्मचारी राजदेव जी, पं. श्यामवीर जी राधव, प्रदीप जी शास्त्री, आचार्य शैलेष जी शास्त्री, लवकुश जी शास्त्री, जयदेव जी योगाचार्य, संजय जी योगाचार्य, राजकुमार जी आर्य, वरूण जी आर्य आदि अनेकों विद्वानों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दी।

महर्षि दयानन्द जी का बोधोत्सव सम्पन्न

नीमच। आर्य समाज नीमच में दिनांक २१/०२/०१७ को महर्षि दयानन्द जी का १९३ वां जन्म उत्सव मनाया गया। दि. २४ फरवरी को शिवरात्रि पर बोधोत्सव पर्व मनाया गया। इस अवसर पर २१ फरवरी को निराश्रित बालगृह में व २४ फरवरी को मूक-बधिर विद्यालय में जाकर बच्चों को फल, मिठाई, बिस्किट वितरीत कर दोनों स्थानों पर महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट किया गया। निराश्रित बालगृह में श्री जगदीश प्रसाद हरित व श्री अर्जुनलाल नरेला ने महर्षि के प्रेरक प्रसंगों को बताया व मूक-बधिर स्कूल में भी इसी प्रकार रतलाम सम्भाग के उप प्रधान एवं वैदिक संसार के प्रतिनिधि बरखेड़ा पंथ निवासी श्री बंशीलाल जी आर्य व मंत्री मनोज स्वर्णकार ने महर्षि के सेवा कार्यों को बताया। इस से पूर्व दोनों कार्यक्रम पर आर्य समाज में यज्ञ, भजन, उद्बोधन का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर प्रधान श्री अर्जुनलाल नरेला, उप प्रधान श्री कन्हैयालाल रतावजिया, मंत्री मनोज स्वर्णकार, उप मंत्री श्री सुरेशचन्द्र शर्मा, श्री अशोक चौरसिया, सम्बोध सोनी, यशवंत धीर, छोटेलाल जी शर्मा, कोषाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश शर्मा, श्रीमती एवं श्री हस्तीराम भाटी, श्रीमती एवं श्री प्रवीण आर्य आदि सदस्य उपस्थित रहे।

टी.वी. स्क्रीन का अनावरण

इंदौर। आर्य समाज मल्हारगंज इंदौर के साप्ताहिक सत्संग में १२ फरवरी को आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान, ओजस्वी वक्ता आचार्य वागीश जी (एटा) उ.प्र. का विशेष रूप से उद्बोधन हुआ।

देवयज्ञ आचार्य चन्द्रमणि याज्ञिक द्वारा सम्पन्न करवाया गया। यज्ञोपरान्त विचार टी.वी. फाउण्डेशन द्वारा चलाए जा रहे चलचित्र से चरित्र निर्माण को मूर्तरूप देने के लिए टी.वी. स्क्रीन का उद्घाटन आचार्य वागीश जी के कर कमलों द्वारा किया गया। उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा- आज के इस भौतिक युग में जहां मनुष्य भौतिक उन्नति के शिखर पर पहुंचने का पुरजोर प्रयास करता है, वहीं आध्यात्मिकता से कोसों दूर होता जा रहा है। मनुष्य जीवन का सर्वांगीण विकास मात्र भौतिकता से नहीं बल्कि आध्यात्मिकता से होता है। आज का युग विज्ञान का युग है। हर रोज नई विज्ञान की खोजें हो रही हैं, लेकिन मनुष्य स्वयं की खोज से दूर हो गया है। उन्होंने कहा विचार टी.वी. फाउण्डेशन ने जो विज्ञान के द्वारा वैदिक विचारों को दूर तक जन-जन तक फैलाने का जो कार्य किया है। वह अत्यन्त श्रेयस्कर है, आपको एवं विचार टी.वी. चेनल के पदाधिकारियों को साधुवाद-धन्यवाद देता हूँ। विचार फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र पोद्दार ने कहा कि विचार टी.वी. के माध्यम से अपने वैदिक विचारों को हम जन-जन तक घर-घर तक पहुंचाने का क्रम रखा जाएगा। इसके लिए मन्दिर में आए सभी प्रबुद्ध लोगों से आह्वान किया गया कि ज्यादा से ज्यादा हम अपने संस्कारों को अपने बच्चों को दें। म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल (म.प्र.) के इंदौर संभाग के उप प्रधान गोविन्दराम आर्य ने कहा कि आज प्रात:काल से रात्रि तक न जाने कितने ही टी.वी. चैनलों के द्वारा तरह-तरह के विचारों को परोसा जा रहा है, जिससे हमारे समाज, हारी संस्कृति या हमारे बच्चों का चरित्रिक पतन हो रहा है। अत: इसी उद्देश्य को धान में रखते हुए हम इस विज्ञान के युग में विज्ञान द्वारा ही अपने श्रेष्ठ विद्वानों के विचारों को टी.वी. द्वारा तथा अपने महापुरुष, देशभक्त, राष्ट्रभक्तों के विचारों को हम दिखा सकें और समाज को नई दिशा दे सकते हैं।

टंकारा बोधोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिनांक १८ से २५ फरवरी २०१७ का सम्पूर्ण ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद पारायण यज्ञ १८ फरवरी से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेवजी के ब्रह्मत्व में प्रारंभ हुआ।

मुख्य यजमान श्री एच.आर. गन्धार, प्रशासक, डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालन्धर, मुंजाल परिवार के श्री योगेश मुंजाल, श्री सुमन मुंजाल, श्रीमती संतोष मुंजाल, डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी, श्रीमती रोशनी विद्यार्थी (रेजीनल डायरेक्टर डी.ए.वी. जिंद हरियाणा) श्रीमती नीलम मलिक, श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल, सुनील मानकटाला आदि थे। पूरे सप्ताह आर्य जगत् के प्रसिद्ध गायक एवम् भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक एवम् सुश्री अंजलि आर्या (करनाल) के मधुर भजन प्रातः एवम् सायं होते रहे, जिन्होंने अपनी तेजस्वी एवं सिंह गर्जना से भजनों से ऋषि भक्तों का मन मोह लिया।

२२ फरवरी को रात्रि ८ बजे से १० बजे तक उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसमें भजन, भाषण इत्यादि सम्मिलित थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री एस.के. दुआ ने की और मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती अरूणा सतीजा, श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्रीमती उषा अरोड़ा, श्रीमती राज लूथरा, श्री रमेश मेहता (पूर्व स्नातक) ने सबकी उपस्थिति में अपार जनसमूह व ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम की सराहना की। ब्रह्मचारियों द्वारा लघु नाटिका प्रस्तुत की गई।

दिनांक २३ फरवरी को प्रातः ५ बजे से ६ बजे तक योग एवं स्वास्थ्य सत्र स्वामी शान्तानन्द जी के (भुज) नेतृत्व में चलाया गया तदुपरान्त प्रातः ६ बजे से प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें भारत के सभी राज्यों के ऋषि भक्तों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

प्रातः ८ बजे यज्ञ से उद्‌घाटन समारोह आयोजित किया गया जिसमें श्री राजीव चौधरी, श्रीमती रेणु चौधरी, श्रीमती उषा मारवाह, श्रीमती एवम् श्री रवि बहल आदि मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर सुश्री अंजलि आर्या एवम् ब्रह्मचारियों के भजन प्रस्तुत किये गये।

अपराह्न २ से ५ बजे तक युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री रघुनाथ राय आर्य (चण्डीगढ़) उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्री वाचोनिधि आर्य, श्री राजीव चौधरी उपस्थित थे। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से वॉलीबॉल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन, उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व बाहर से आने वालों को किराया दिया गया। इसी अवसर पर डॉ. मुमुक्षु जी द्वारा वेद पाठ की प्रतियोगिता रखी गई। इस कार्यक्रम का संयोजन टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार ने किया। इस सत्र के अन्त में पं. रमेशचन्द्र मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा) ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों के अपने संस्मरण सुनाए।

सायंकालीन यज्ञ सांय ५ से आयोजित किया गया। प्रातः एवं सायं यज्ञ के समय कई महानुभावों को टंकारा ट्रस्ट को दिए जाने वाले अभूतपूर्व योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री रघुनाथ राय (चण्डीगढ़), श्रीमती उषा अरोड़ा (नई दिल्ली), श्रीमती अरूणा सतीजा (जयपुर), श्री वेद प्रकाश आर्य (गुड़गांव), श्री सुशील भाटिया (पंचकूला), श्री अशोक आर्य (उत्तर प्रदेश) को सम्मानित किया गया।

वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन रात्रि ८ से १० बजे तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर जहां उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋषि गुणगान के भजन प्रस्तुत किये वहीं मुख्य रूप से सुश्री अंजलि आर्या जो कि करनाल से पधारी थीं, के भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री योगेश मुंजाल जी ने की ओर विशेष अतिथि के रूप में श्री सुनील मानकटाला, श्री अरूण अब्रोल, श्री लधाभाई पटेल, श्रीमती रेणु चौधरी एवं श्रीमती भानुबेन उपस्थित थे। डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री का उद्‌बोधन हुआ। आपने टंकारा को विश्वविद्यालय की मान्यता का सुझाव रखा एवम् सौराष्ट्र विश्वविद्यालय का नामकरण स्वामी दयानन्द के नाम पर करने की भी मांग रखी।दिनांक २४ फरवरी को शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें प्रातः ८.०० बजे पूर्णाहुति का यज्ञ आरम्भ किया गया। इसमें मुख्य यजमान श्री एच.आर. गंधार, श्री योगेश मुंजाल, श्रीमती नीलम मलिक, श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल, डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री एच.आर. गंधार जी ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया एवम् साथ ही साथ वेदपाठियों का भी वरण किया। यज्ञोंपरान्त श्रीमती एवम् श्री एच.आर. गन्धार सभी की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए ध्वजस्थल पर पहुंचे। जहां ट्रस्ट के वयोवृद्ध ट्रस्टी श्री लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत किया तंदुपरान्त भारत से आए हुए लगभग २५० प्रतिनिधि आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका स्वागत किया। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं था जिसका प्रतिनिधित्व इस अवसर पर न हुआ हो। श्री एच.आर. गंधार जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया और इस अवसर पर श्री सत्यपाल पथिक जी ने ध्वजगीत गाया।

एक विशेष मंच से ओ३म् ध्वज लहाराकर शोभा यात्रा का प्रारम्भ श्री एच.आर. गंधार द्वारा किया गया। शोभायात्रा में स्वामी शान्तानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी आर्येशानन्द, श्री एच.आर. गंधार, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुनील मानकटाला, लाभाभाई पटेल, श्री अरुण अब्रोल, श्री हंसमुख परमार, डॉ. वी.एच. पटेल, पं. रमेश चन्द्र मेहता, श्री सत्यपाल पथिक, डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी, श्रीमती रश्मी विद्यार्थी, श्रीमती नीलम मलिक, श्री अशोक कुमार आर्य, श्रीमती अरूणा सतीजा, श्री रामचन्द्र अरोड़ा, श्री राजीव चौधरी, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रघुनाथ राय आर्य आदि उपस्थित थे।

अपराह्न ३ से ५ बजे तक विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एच.आर. गंधार जी उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी जी का विशेष प्रवचन हुआ। आपने अपने वक्तव्य में कहा कि आज आर्य जनता के लिए हर्ष का विषय है कि पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के रूप में समस्त आर्य जगत् में स्वच्छ छबि वाले आर्य नेता के रूप में उभर रहे हैं। महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के पोते होने के नाते डी.ए.वी. को वर्षों बाद कोई पूर्ण रूप से आर्य प्रधान प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर उपस्थित आर्य जनसमूह ने करतल ध्वनि द्वारा आपके इस वक्तव्य का समर्थन किया। इसी अवसर पर आपने एक सुन्दर कविता का पाठ कर सभी को चकित कर दिया। विशेष आमन्त्रित के रूप में

श्री मोहनभाई कुण्डारिया (स्थानीय सांसद, पूर्व कृषि मन्त्री भारत सरकार) एवं श्री बामन भाई मेटालिया (स्थानीय विधायक) भी पधारे। श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल श्री योगेश मुंजाल, श्री सुनील मानकटाला, श्री हंसमुख परमार, श्री वाचोनिधि आर्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री मनमोहन कुमार आर्य आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं श्री मनमोहन कुमार आर्य को वेद प्रचार के रूप में दिया गया, जो कि प्रति वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से इस अवसर पर दिया जाता है।

श्री एच.आर. गंधार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि स्वामी जी के इस नगर में आकर महसूस हुआ कि यहां पर कुछ तरंगे शरीर और आत्मा को प्राप्त हो रही हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व ही ऐसा महान् था कि सभी को चुम्बक कि तरह खींच लेते थे। स्वामी जी का कहना है कि बात को मानने से पूर्व उसे तर्कों से अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए माने। आपने आध्यात्म के साथ विज्ञान को भी महत्व दिया। स्वामी जी के जीवन से ऐसे उदाहरण आपने दिये जो आज तक अछूते रहे। उपस्थित आर्य जनों ने विश्वविद्यालय के सलाहकार के मुख से स्वामी जी के प्रति ऐसी भावना श्रद्धा के भाव रखते हुए वक्तव्य सुना तो कहा अब डी.ए.वी. का अब आर्यकरण हो रहा है। इसी अवसर पर पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा भेजा गया सन्देश पढ़कर सुनाया जिसमें आपने लिखा कि देश भर में १००० से भी अधिक शिक्षण संस्थान जहां समाज को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। वहीं वैदिक मान्यताओं को डी.ए.वी. के प्रत्येक छात्र में कूट-कूटकर भरने का कार्य कर रही है। यह कार्य आर्य युवक समाज के माध्यम से आयोजित चरित्र निर्माण शिविर जो कि पूरे वर्ष आयोजित किए जाते हैं के माध्यम से हो रहा है।

इसी सत्र में टंकारा समाचार का विशेषांक **'बोधक'** का भी विमोचन उपस्थित मंचासिन महानुभाव द्वारा किया गया। इसी अवसर पर टंकारा श्री श्रीमती अरूणा सतीजा जी द्वारा लिखित यज्ञ पर एक शोधपूर्ण पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया। मंच पर उपस्थित श्री डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा सम्पादित एवम् प्रकाशित स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित्र पर बालकों की रुचि को देखते हुए चित्रकथा (कॉमिक्स) रूप में एक पुस्तक का विमोचन भी किया गया। अपराह्न १.३० श्रीमती सन्तोष मुंजाल अपने परिवार के साथ अपने वायुयान द्वारा टंकारा आए थे, जहां स्मृतिशेष श्री बृजमोहन मुंजाल जी के परिवार की ओर से नवनिर्मित योग साधना भवन का उद्घाटन पूर्ण वैदिक रीति से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संतोष मुंजाल जी के कर कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर श्री योगेश मुंजाल, श्री सुमन मुंजाल, श्रीमती रेणु मुंजाल एवम् भारी संख्या में आर्यजन उपस्थित थे। ८५० व्यक्तियों के बैठने की क्षमता वाला यह भवन बहुलक्षीय है।

रात्रि सत्र में श्रद्धांजलि सभा श्री योगेश मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ जिसमें सुश्री अंजलि आर्या द्वारा स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके अतिरिक्त पधारे हुए आर्यजनों ने स्वामी दयानन्द के प्रति अपनी संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की।

वैदिक संसार इन्दौर द्वारा आकार का बुक स्टॉल लगाकर महापुरुषों की चित्रों की भव्य प्रदर्शनी तथा वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ द्वारा गुजरात भाषा में प्रकाशित वेदभाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका एवं विविध साहित्य तथा अन्य अनेक प्रकाशनों का विविध साहित्य की विशाल शृंखला में प्रदर्शनी लगाकर विक्रय भी किया गया। वैदिक संसार के स्टॉल से ही ऋषि मिशन भीलवाड़ा के श्री नंदकिशोर जी जांगिड द्वारा परोपकारिणी सभा अजमेर के विद्वानों के प्रवचनों की सी.डी. निशुल्क वितरित की गई।

वैदिक ज्ञान प्रतियोगिता सम्पन्न

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास- सहारनपुर (उ.प्र.) द्वारा होलकोत्सव (होली) पर्व के अवसर पर प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैदिक ज्ञान वर्धिनी मौखिक प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में सात प्राथमिक विद्यालय-नेशनल मार्डन एकेडमी, वीर अ. हमीद प्रा. विद्यालय, सरस्वती शिक्षा सदन, डी.ए.वी. होली एन्जिलेस, प्रा.वि. खेड़ा अफगान, ब्राईट फ्यूचर विद्यालय हरपाल के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता के प्रारम्भ में श्री चरणसिंह जी के यजमानत्व में यज्ञ किया गया। यज्ञोपरान्त संस्था अध्यक्ष आदित्य प्रकाशजी गुप्त ने होलकोत्सव के प्राचीन शास्त्रोक्त स्वरूप पर प्रकाश डाला। आपने कहा वैदिक विद्वानों के जीवन से शिक्षा लेकर उनके बताये अनुसार वेद मार्ग पर चलकर ही सभी का कल्याण हो सकता है। आवश्यकता है हम हमारी समस्त समस्याओं का समाधान वेदों के बताये मार्ग से ही करें तभी संसार में शान्ति सद्भावना स्थापित हो सकती है। आर्य समाज खेड़ा अफगान के मन्त्री अमित कुमार ने शिक्षाप्रद भजन प्रस्तुत किए। न्यास के सचिव श्री वेदभूषण जी गुप्त ने विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवन के मूल सूत्र बताए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सत्यप्रतापसिंह ने, द्वितीय स्थान मोनिका देवी तथा सानिया ने, तृतीय स्थान मोहित कुमार ने तथा चतुर्थ स्थान आर्यन ने प्राप्त किया। सभी पुरस्कृत विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार तथा सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को साहित्य वितरण किया गया। सभी पर पुष्पवर्षा कर शुभकामनाएँ व्यक्त की। अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्पन्न

इंदौर।८ मार्च को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला संगठन आर्य समाज मल्हारगंज इंदौर के तत्वावधान में श्रीमती गीता विनोद आहलुवालिया के निवास स्थान राजेन्द्र नगर इंदौर में विशेष यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रमणि जी याज्ञिक ने महिला सशक्तिकरण एवं नारी जाति की महिमा पर विशेष उद्बोधन दिया। आपने कहा कि आज भले ही अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस है परन्तु नारी का सम्मान मात्र एक ही दिवस हो ऐसा उचित नहीं है, बल्कि नारी का सम्मान हर पल-प्रतिपल होना चाहिए। नारी का सम्मान हर युग में सभी ऋषियों-संतों ने किया, क्योंकि नारी तो स्वयं पूजनीय एवं सम्माननीय है। जिस भी समाज ने नारी का अपमान किया तिरस्कार किया वह समाज टूटकर बिखर गया। नारी समाज की रीढ़ है।

ऋषि दयानन्द ने नारी जाति को सम्मान दिलवाया और कहा-'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् - जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। ओर जहां पर नारी का अपमान होता है वहां सारे कार्य निष्फल हो जाते हैं, अतः नारी का सम्मान होना चाहिए। इस अवसर पर महिला संगठन की संचालिका श्रीमती गीता आहलुवालिया एवं श्रीमती शशि गुप्ता ने कहा किं महिला स्वयं शिक्षित, धार्मिक हो, हम शिक्षित होगी तो हमारे बच्चे भी संस्कारित एवं सुशिक्षित बन पाएंगे। श्रीमती गीता आहलुवालिया ने कहा कि स्त्रियां ज्यादातर भावुक होती हैं। आज समाज में अनेक प्रकार के अंधविश्वास व्याप्त है जिसमें स्त्रियां फंस जाति है सच क्या है, झूठ क्या है? समझ नहीं पातीं और अनेक प्रकार के ढोंग पाखण्ड में फंस जाती है। इससे निकलने का एक ही रास्ता है, वेद का मार्ग! आँख बंद कर किसी की बात न माने तथा आपने संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया।

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ जनवरी से २० मार्च २०१७ तक

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की उत्कृष्ट अभिनव योजना ज्येष्ठ आर्य गौरव सेवक की गौरव निधि से सम्मानित वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि

माणिकराव जी

प्रेरणास्पद व्यक्तित्व के धनी, आर्य गौरव, महर्षि दयानन्द के वीर सेनानी वयोवृद्ध **श्री माणिकराव जी भौंसले,** निवासी- सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र) सम्पर्क - ९५०३७७१५६४, ९५०३७११५६४

उम्र के ८६ वें वर्ष में चल रहे भोंसले जी का जन्म लातूर जिले के सिरसी नामक छोटे से गांव में हुआ। मात्र चौथी तक शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त परिवार की प्रतिकूल आर्थिक स्थितियों के चलते लातूर आ गए। लातूर में आपने मजदूरी करते-करते सफेद टोपी (गान्धी टोपी) का व्यवसाय प्रारम्भ किया।

स्मृति शेष ज्ञानदेव जी कातपूरे के सम्पर्क में आने से आपका आर्य समाज रेणापुर से सम्पर्क हुआ। रेणापुर निवासी स्मृति शेष रामस्वरूप जी लोखण्डे तथा श्री सांबाप्पा जी राउत (सत्यप्रिय मुनि जी) के आप सम्पर्क में आए। आप महानुभावों की प्रेरणा से आपको जातिप्रथा निर्मूलन हेतु अन्तरजातीय विवाह के विषयक प्रेरणा प्राप्त हुई। सन् १९७० में आपके प्रयासों से आर्य समाज रेणापुर के अन्तर्गत '**अन्तरजातीय विवाह मण्डल**' की स्थापना की गई। आप इस संस्था के संस्थापक अध्यक्ष हैं। १९७० से आज तक आपका जाति प्रथा निर्मूलन का यह महा अभियान उम्र के इस पड़ाव तक जारी है। दीन-दुःखी, उपेक्षित युवक-युवतियों का विवाह बगैर दहेज के वैदिक पद्धति से करवाने के साथ आपने अपने भाई, बहन, पुत्र-पुत्रियों के भी अन्तरजातीय विवाह करवाकर एक प्रेरणादायी आदर्श समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है। आपके प्रयासों से लगभग ४०० अन्तरजातीय विवाह अभी तक सम्पन्न हो चुके हैं। राष्ट्र की एकता-अखण्डता की दिशा में अहम अभियान जाति प्रथा निर्मूलन के इस कार्य हेतु आपको सन् -२०१२ में दिल्ली में सम्पन्न अन्तरराष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में अभिनन्दन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका है तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित आह्वान पत्र में आपका जीवन वृत्त प्रकाशित किया गया है।

आर्य समाज रामनगर की स्थापना का श्रेय भी आपको जाता है, आप आर्य समाज रामनगर के सोलह वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे हैं। सबसे वयोवृद्ध होने के नाते आप आर्य समाज रामनगर के पितामह के रूप में सुविख्यात होकर परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के आप वर्षों तक अन्तरंग सदस्य रहे हैं।

लगभग ९० वर्ष पूर्ण करने की ओर अग्रसर श्री भोंसले जी से ऋषि बोधोत्सव २०१७ पर टंकारा में भी भेंट हो गई थी। इस अवस्था में आपकी समस्त इंद्रिया ठीक-ठीक कार्य कर रही हैं।

आपने अपने परिवार तथा अपने जीवन निर्वाह की तनिक भी चिन्ता नहीं की। आर्य समाज की गतिविधियों के लिए धन संग्रह करना, आर्य साहित्य जन-जन तक पहुंचाने, वैदिक धर्म प्रचार -प्रसार हेतु स्थान-स्थान पर आवागमन आदि कार्यों को आपका जीवन समर्पित रहा है।

इस कारण आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अपने अन्तर्गत कार्यरत '**ज्येष्ठ आर्य सेवक गौरव समिति**' जो कि विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने वाले जीवित तथा बलिदानी महानुभावों को यथोचित सम्मान प्रदान करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता तथा सहयोगार्थ हेतु आर्य परिवारों से प्राप्त पवित्रदान को स्थिर निधि के रूप में सम्बन्धित महानुभावों के नाम से 'गौरव निधि' के रूप में सशर्त दी जाती है। ये स्थिर निधियां हमेशा स्थिर रहती हैं केवल इनका नवीनीकरण होता रहता है। इसका मूलधन हमेशा सुरक्षित रहेगा। सभा में ऐसा कोई प्रस्ताव कभी नहीं लाया जा सकेगा जिससे स्थिर निधि के धन में कोई कमी की जा सके अथवा उस पर कोई कर्जा निकाल सके अथवा उसे गिरवी रख सकें। सन १९९८ से संचालित '**गौरव निधि**' की योजना की स्थिर निधियां जिन महानुभावों के नाम से बनाई गई थी आज भी उन्हीं महानुभावों के नाम से स्थिर हैं। केवल इन स्थिर निधियों का ब्याज वेद प्रचार के कार्यों में सम्बन्धित गौरव मूर्ति के नाम पर किया जाता रहा है। इसी योजना के अन्तर्गत अभी तक १६ महानुभावों के नाम पर स्थिर निधि स्थापित की जा चुकी है। अब सभा ने श्री भोंसले जी के नाम पर ३.५० लाख की 'गौरव निधि' आर्य समाज लातूर के वर्ष २०१६ के वार्षिकोत्सव पर स्थापित की जा चुकी है। जिसके ब्याज से आपको २००० प्रतिमाह प्राप्त हो रहे हैं। स्थिर निधि के ब्याज को प्रतिमाह पाने वाले आप प्रथम व्यक्ति हैं।

वितैषणा, लौकेषणा तथा पुत्रैषणा से दूर विनम्रता, त्याग, परोपकार, निःस्वार्थ सेवा भावना, सरलता, निराभिमानी, परिश्रमी आदि गुणों के धनी श्री माणिकराव जी भोंसले जी को सर्वजन स्नेहवश '**पिताजी**' नाम से

आभार-शुभेच्छा

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री माणिकराव जी भोसले, लातूर (महाराष्ट्र) तथा श्री मोहनलाल जी शर्मा, धरमपुरी (म.प्र.) तथा अन्य सभी सहयोगी दानदाता महानुभावों द्वारा वैदिक संसार को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जो सहयोग किया जा रहा है उसके लिए मैं आप सभी का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ तथा शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ कि आप सभी महानुभाव अधिक से अधिक धनवान, आयुष्यमान, विद्यावान, धर्मात्मा, यशस्वी, पुरुषार्थी, प्रतापी, परोपकारी तथा दानी बनें। जिससे और अधिकाधिक पवित्र कार्य कर अन्तःकरण की पवित्रता में वृद्धि करते हुए पुण्य और यश को प्राप्त कर मोक्ष मार्ग के पथिक बने। पुनः आप सभी का धन्यवाद-हार्दिक आभार.... – **सुखदेव शर्मा,** प्रकाशक वैदिक संसार

सम्बोधित करते हैं। गुरुकुल केहलारी के आचार्य सर्वेश जी सिद्धान्ताचार्य का शुभ विवाह भी आपके प्रयासों से हुआ है, आपको आचार्य जी के प्रति असीम स्नेह है। आचार्य सर्वेश जी के माध्यम से आप वैदिक संसार के सम्पर्क में आए। आप वैदिक संसार के प्रति भी अगाध स्नेह रखते हैं। आप वैदिक संसार से जुड़ने की प्रेरणा देकर अपने छोटे भाई श्री ज्ञान कुमार जी के सहयोग से सदस्य बनाते हैं तथा डाक विभाग की लापरवाही के कारण सम्पूर्ण पत्रिकाएं अपने पते पर मंगवा कर उनका सुनिश्चित वितरण भी करते हैं। आपकी धर्म पत्नी स्मृतिशेष श्रीमती चन्द्रभागाजी का ३० नवम्बर २०१५ को निधन हो चुका है।वैदिक संसार परिवार आपका हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए आपके दीर्घायु, स्वस्थ जीवन की शुभ कामना करता है। आपके द्वारा बनाये गए सदस्य निम्न है-

महाराष्ट्र, जिला- लातूरः डॉ. बालकृष्ण ग्रन्थालय-लातूर, श्री अन्त स्वरूप जी लोखण्डे, श्री नागराज जी चुड़मुड़े-लातूर, श्री एस.आर. मोरे प्रधान आर्य समाज- औसा रोड़ लातूर, सौ. सविता सदाशिव जी भालकीकर-लातूर, श्री दयानन्द शंकर जी जड़े- लातूर, श्री सुभाष विश्वनाथ रावजी हालोमे- लातूर, अध्यक्ष आर्य समाज-अम्बा जोगाई, श्री देशराव परमानन्द रामराव जी, लातूर, श्री नामदेव नागनाथ जी साबदे- रेणापुर , सौ. रत्नमाला सोनेराव जी आचार्य-लातूर, डॉ. नन्दकुमार हरिश्चन्द्र जी धर्माधिकारी-लातूर,श्री विश्वनाथ निवृत्ति जी क्षीरसागर-लातूर, श्री नरसिंग दत्तोबा जी मरड़े-उजेड़, श्री ओमप्रकाश गणपतराव जी जाधव- लातूर, श्री हरिभाऊ जी जवलगे- लातूर, श्री पांडुरंग नागेश जी खेर- लातूर, श्री सचिन भारत जी भालवरकर-लातूर, श्री जगदीश व्यंकटराव जी माने- लातूर, श्री गंगाराम रामजी खानापुरकर- लातूर, श्री रघुनाथ दशरथ गरड- लातूर, श्री मेटे चन्द्रहास विठ्ठलराव जी शास्त्री-लातूर, रामेश्वर धनप्पा जी राउत- लातूर, श्री पदमाकर शिवलिंग जी लोखण्डे-रेणापुर।

जिला-पुणे- श्री सुशील राजेन्द्र दिवे-पुणे।

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि

जांगिड ब्राह्मण कुलोत्पन्न **श्री मोहनलालजी शर्मा**, सुपुत्र-स्मृति शेष मानाजी शर्मा, शासन जायलवाल, निवासी-धरमपुरी, जिला- इंदौर (म.प्र.) सम्पर्क- ९४२४८ ३६६९९

मोहनलाल जी

आप सामान्य शिक्षा प्राप्त होकर पूर्व में आरामशीन संचालक थे। वर्तमान में कृषकों के अन्न भण्डारण हेतु बड़ी-बड़ी पेटियों के लघु निर्माता हैं। आपकी धर्म पत्नी श्रीमती राधाबाई शर्मा हैं। आपके कोई सन्तान नहीं होने से आपने अपने साले श्री [illegible]लाल जी शर्मा की सुपुत्री श्रीमती कौशल्या-दिनेश जी शर्मा-बरखेड़ी मान (देवास) को दत्तक पुत्री के रूप में स्वीकार किया है। सन्तान नहीं होने की वेदना से आपका अध्यात्म के प्रति कुछ अधिक रुझान था। वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान न होने से आप पौराणिक पाखण्ड में सराबोर थे। तीन-चार बार कावड़ यात्रा कर सैकड़ों किलोमीटर पैदल चल चुके हैं तथा अपने भतीजे सहित कई लोगों को कावड़ यात्रा के प्रेरक रह चुके हैं। तथाकथित तीर्थ स्थलों पर जाना अपनी माताजी को चारों धाम की यात्रा करवा चुके तथा स्वयं भी चारधाम की यात्रा कर चुके हैं। तीन चार बार रामदेवरा, सांवरिया जी आदि इतने स्थानों पर भटक चुके की आज याद भी नहीं। प्रत्येक माह असत्यनारायण की कथा करवाना, वर्ष की दोनों नवरात्रियों पर भूखे मरना, चण्डीपाठ करवाना, समापन पर यज्ञ करवाना, आपके ग्राम के समीप विश्वनाथ धाम मन्दिर बना हुआ है जहां प्रतिवर्ष यजमान बनना, कर्मकाण्डों में खूब व्यय करना, स्थिति यह थी कि एक-दो पौराणिक शास्त्रियों से आपकी गहन मित्रता हो गई थी जो कि कोई दिन ऐसा नहीं जाता था कि आपके यहां नहीं आते हो। (अब नहीं)

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा की प्रेरणा से आप पर वैदिक सिद्धान्तों का ऐसा रंग चढ़ा कि आप पौराणिक दैनिक अग्निहोत्र से वैदिक अग्निहोत्री हो गए। आपके ग्राम धरमपुरी तथा आसपास के क्षेत्रों में कोई वैदिक सिद्धान्ती नहीं था। ना ही कोई आर्य समाज संचालित था। इस कारण आपने अपने निवास स्थान पर दिनांक १७/८/२०१३ को सामूहिक यज्ञोपवित का भव्य आयोजन कर वेदों को ट्रैक्टर-ट्राली पर स्थापित कर भव्य शोभायात्रा निकाली तथा सुश्री अंजलि आर्या के भजन-उपदेश करवाकर विशाल जन समुदाय की उपस्थिति में वेद विद्या मन्दिर की स्थापना की। आप गहन स्वाध्यायशील हैं। वेद विद्या मंदिर पर वेद, उपनिषद्, दर्शन शास्त्र, रामायण, महाभारत, आर्य जगत् के वैदिक विद्वानों द्वारा रचयित विपुल मात्रा में साहित्य उपलब्ध हैं। आप स्वाध्याय भी करते हैं तथा अन्यों को वैदिक साहित्य पढ़ने की प्रेरणा देकर साहित्य सुलभ करवाते हैं। परोपकारी टंकारा समाचार, गीता स्वाध्याय, ऋषि स्मृति प्रकाश, वैदिक संसार, शुद्धि समाचार आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं के आजीवन सदस्य है। अल्प मूल्य के प्रचार ट्रेक्टर बुलवाकर वितरित करते रहते हैं। आप महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक धर्म के प्रति तन-मन-धन से समर्पित हैं।

आपने अपनी माताजी के निधन पर उनकी अन्तिम यात्रा ध्वनि विस्तारक यंत्र का उपयोग कर वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ निकाली तथा अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान पं. सूर्यदेव जी शर्मा इन्दौर के द्वारा सम्पन्न करवाया। अस्थि संचयन कर श्मशान स्थल के नजदीक उन्हें दबा दिया। परिवारजनों तथा ग्रामवासियों के समक्ष ऐसा प्रथम बार हो रहा था। वे लोग विस्मय व्यक्त कर रहे थे तथा अब आगे कोई दशा-ग्यारहवा, बारहवां नहीं होगा जानकर उन्हें अप्रिय लग रहा था तथा उनके चेहरों से आक्रोश झलक रहा था। मोहनलालजी भाई-बहनों में सबसे बड़े हैं। उन्होंने उपरोक्त स्थिति से सुखदेव जी शर्मा को अवगत करवाया तो सुखदेव शर्मा ने कहा ये तो अज्ञानी है कुछ जानते नहीं है, इनकी परेशानी मात्र इतनी है कि आपने किसी को बुलाया नहीं और खिलाया नहीं। अतः इनकी दृष्टि में आप कंजूसी कर पैसा बचा रहे हो। तो आप इनकी भी बात रखो और वैदिक धर्म से, इस अवसर पर क्या कहता है वह करो। आपसी विचार विमर्श से निर्धारित हुआ कि माताजी के निधन के १५वें दिन (जब विद्वानों को समय सुलभ था) वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन किया जावे। इस हेतु स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती गुरुकुल भवानीपुर, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक पं. कमल किशोर जी शास्त्री तथा पं. सत्यपाल शास्त्री देहरी मन्दसौर को आमंत्रित किया गया। दैनिक अग्निहोत्र तो होता ही है। पूरे परिवारजनों को साथ लेकर १५ दिन तक वृहद यज्ञ किया गया। व्यापक प्रचार-प्रसार द्वारा वैदिक धर्म प्रचार का दो दिवसीय भव्य आयोजन किया गया। समस्त आंगतुकों को **अन्तिम संस्कार क्या, क्यों और कैसे** तथा **मृत्यु मीमांसा** पुस्तकें माताजी की स्मृति में प्रकाशित करवाकर दी गई। सर्वजन के लिए सुन्दर भोजन व्यवस्था की गई।

इस अवसर पर वृहद संख्या में क्षेत्रीय ग्रामवासी, स्नेहीजनों के साथ-साथ दूर-दूर से आर्यजन, सगे-सम्बधी तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के गणमान्य पदाधिकारीगण पधारे। इंदौर सम्भाग प्रभारी श्री गोविन्दराम जी आर्य की प्रेरणा से आर्य समाज की भी स्थापना समापन दिवस पर की गई। आप तर्कों के द्वारा अनेक भागवताचार्यों को निरुत्तर कर देते हैं। प्रति

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

एक शाम दयानन्द जी के नाम

दिनांक २१ फरवरी २०१७ को **आर्य समाज गरोठ, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)** द्वारा **महर्षि दयानन्द सरस्वती की १९३वीं जयंती एक शाम दयानन्द के नाम** से मनाई जिसमें मुख्य अतिथि सर्वश्री विनीत राजेशजी यादव (प्रदेश उपाध्यक्ष भाजयुमो) अध्यक्षता राजेश जी सेठिया (मण्डल अध्यक्ष भाजपा) विशेष अतिथि श्रीमती अनोख दिनेश जी पाटीदार (अध्यक्ष न.प. गरोठ), चन्द्रप्रकाश जी पण्डा (मण्डल उपाध्यक्ष भाजपा), विधायक प्रतिनिधि भगवानसिंह जी चन्द्रावत (अध्यक्ष ज.प. गरोठ) एवं पलवल हरियाणा से पधारे श्री सुन्दर जी पांचाल (वैदिक) ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अतिथि महानुभावों का स्वागत श्री खुशालचन्द्र आर्य प्रधान आर्य समाज, राजेश आर्य कोषाध्यक्ष ने किया। आर्य समाज गरोठ के पूर्व पदाधिकारियों का सम्मान किया गया जिसमें सर्वश्री मोहनलाल जी सेठिया पूर्व विधायक, ओमप्रकाश जी आर्य पूर्व प्रधान, आनन्दीलाल जी आर्य पूर्व उपप्रधान, भवानीशंकर जी आर्य (मालदार), हरिनारायणजी कुमावत पूर्व मंत्री, स्व. श्री राधेश्याम जी माली मरणोपरांत, मांगीलाल जी पतरावाले एवं युवा साथी रवीन्द्र मालवीय (म.प्र. पुलिस में सब इंस्पेक्टर बनने पर) का सम्मान किया गया। सम्मान के बाद कार्यक्रम **दयानन्द के दीवाने, क्रान्तिकारी भाई सुन्दरजी पांचाल** एवं साथी कलाकारों ने अपनी ओजस्वी वाणी से समा बांध दिया। **'देखकर देश के हालात सभी, एक दयानन्द जरूरी है अभी'** गीत ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम देर रात तक चला जिसमें भारत माता की जय के नारों से आकाश गुंजायमान हो उठा और श्रोताओं ने वनस्मोर-वनस्मोर करके कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का **संचालन चेतन आर्य मंत्री आर्य समाज गरोठ** ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज के समस्त सदस्यगण व समस्त आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने सहयोग किया एवं श्री खुशालचन्द्र जी आर्य ने कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों एवं श्रोताओं का आभार प्रकट किया।

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य समाज नीमच (म.प्र.) द्वारा **महर्षि दयानन्द के जन्म एवं बोध दिवस** के अवसर पर निराश्रित **बच्चों को फल वितरण** किया गया।

वैदिक धर्म की दुदुम्भी बजाने वाली, आर्य जगत् की ओजस्वी, प्रख्यात भजनोपदेशिका **सुश्री अंजलि आर्या** को सुनिए और वेदज्ञान की गंगा में नहाइये तथा मानव जीवन को सफल बनाइये।

दिनांक - ३ से ७ मई २०१७ तक

ग्राम- हरनावदा, जिला-सिहोर (म.प्र.)

संरक्षक- श्री रतनसिंह जी ठाकुर

प्रधान - श्री मांगीलाल जी आर्य

संपर्क - ९३०२९३५५८७, ८४३५५४५११४

दिनांक - ८ से १२ मई २०१७ तक

ग्राम - कोठरी, जिला-सिहोर (म.प्र.)

प्रधान - जगदीश पटेल (अवधेश आर्य)

संपर्क - ९८९३९६६२५५

प्रेषक
वैदिक संसार
12/3 संविद नगर-इन्दौर-452018 (म.प्र.)

सेवा में...

चि. रिनव का जन्मोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

दिनांक १९ मार्च २०१७

जांगिड कुल गौरव, प्रख्यात साहित्यकार, पूर्व प्राचार्य, वरिष्ठ समाजसेवी तथा वैदिक संसार को अपनी रचनाओं से अलंकृत कर शोभायमान करने वाले **श्रीमान देशराज जी आर्य निवासी रेवाड़ी के सुपौत्र चि. रिनव का जन्मोत्सव दिनांक १९ मार्च २०१७** को हर्ष व उल्लास पूर्वक मनाया गया। प्रारम्भ में वृहद **देवयज्ञ स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक**, संचालक- गोशाला नागलिया (रणमोख), रेवाड़ी के ब्रह्मत्व में **पुत्र नवदीप एवं पुत्रवधु रिया शर्मा** तथा वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित सम्माननीत अतिथि श्री इन्द्रसिंह जी बोहरा पूर्व न्यायाधीश के सपत्नीक यजमानत्व में सम्पन्न किया गया।

वृहद संख्या में स्नेहीजन तथा महात्मा यज्ञदेव जी, स्वामी एकान्ती जी, जसवन्त कुमार जी जलियावास, गजानन्द जी आर्य, सुखराम जी आर्य, वेदप्रकाश जी शास्त्री, नानकचन्द जी शास्त्री, प्रभुदयाल जी सैनी (मन्त्री), वरिष्ठ समाजसेवी आसाराम जी शर्मा,महेन्द्रभाई खण्डेलवाल, जांगिड शाखा प्रधान कंवरसिंह जी जांगिड, डॉ. रामफल जी शास्त्री, सत्यनारायण जी जांगिड भोजावास, राजेश जी जांगिड उपस्थित रहे तथा बालक के यशस्वी, स्वस्थ, सुदीर्घ जीवन हेतु आशीर्वाद दिया।

वैदिक संसार परिवार भी बालक तथा परिवार के प्रति अपनी अनन्त शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

इस अवसर पर आर्य जी (दादाजी) द्वारा वैदिक संसार को ५१०० रुपए का दान दिया गया।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् हेतु कृत संकल्पित

तुम जीयो हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार
प्रसन्नता के अविस्मरणीय अभूतपूर्व क्षण...

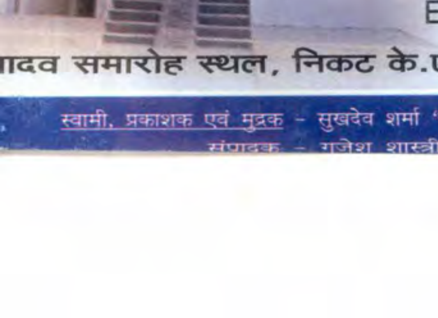

- प्रतिष्ठान -

सुदेन सुजुकी

डायरेक्टर- नवदीप शर्मा - मो.९९९६७८५४४४

Email : sharmanavdeep142@gmail.com

ादव समारोह स्थल, निकट के.एल.पी. कॉलेज, दिल्ली रोड, रेवाड़ी (राज.)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७